श्री

कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

✿ मारफत सागर ✿

ढूंढ़े सबे मेयराज को, सबे मेयराज में सब।
सो सबे मेयराज जाहेर करी, सो सब मेयराज देखसी अब।।

उस **मेयराज** (दर्शन) की रात्रि को सब ढूंढ़ते हैं। वह रात नब्बे हजार बातों का ब्यौरा है। उसमें तीस हजार शरीयत की बातें तो कुरान में स्पष्ट कही गई हैं और तीस हजार की हिदायत की गई कि यदि कोई इसके योग्य हो तो कहना। बाकी के तीस हजार जो **मारफत** के अर्श अजीम की खास बातों के हैं जो रसूल साहब को खोलने का अधिकार नहीं है। उसे खुदा अपनी उम्मत के लिए आकर खोलेंगे। यही मेरे और मेरी उम्मत के आने की पहचान होगी। उसी मेयराज की रात्रि को शबे मेयराज कहा है। जिसे आज दिन तक सारी दुनियां के लोग खोज रहे हैं, पर किसी को स्पष्ट उस रात्रि और उस ज्ञान का पता नहीं चला। उस शबे मेयराज (दर्शन की रात्रि) के भेद को अपने कहे अनुसार खुद खुदा अल्लाह ताला आखरुलजमा इमाम मेंहदी साहब श्री प्राणनाथजी महाराज ने अपनी ब्रह्मसृष्टि के लिए जाहिर किया है, जिससे सबको उस खुदा के दर्शन होंगे।

नोट—रसूल साहब को अल्ला ताला ने जबराईल फरिश्ते को भेजकर अर्श में बुलाया और बातें कीं। उसको दर्शन की रात कहा है। शबे **मेयराज** का अर्थ दर्शन की रात्रि है।

मसौदा

(ए किताब मारफत सागर जो हकताला के हुकम से पैदा हुई, हादी के दिल पर आप बैठ के बिगैर हिजाब बारीक बातें 'चौपाई' मुंह से केहेलवाई। सो कलाम ज्यों आवते गए, सो यारों ने लिखे और फिर हादी प्यार से सुनते गए। सो सुन-सुनकर, हुकम से हाल अपने पर अर्स बका लाहूती का लेते गए और जामा नाजुक होता गया। सो इहां तांई के, आखिर इस आलम नासूत सेती कूच करके, अपने रूहानी आलम बका वतन हमेसगी, असली मिलाप के आराम पकड़्या और ए 'चौपाई' जो नाजिल होती गई थी सो मसौदे ज्यों ही के त्यों ही रहे। सो अब हक हादी के हुकम से मोमिनों ने इसके बाब बांधे हैं, माफक अकल अपनी के पर ए जो 'चौपाई' हादी ने फुरमाई थीं, तिन में एक हरफ ज्यादा या कम नहीं किए अब मोमिन इन 'चौपाइयों' के हरफ-हरफ के माएने मगज, जाहेर के और बातून के लेय के हक के हुकम से हादी के कदमों कदम धरेंगे। किस वास्ते के मोमिन हादी के अंग नूर हैं और नूर बिलंद से उतरे हैं तो चढ़ना इनों को जरूर है और अर्स बका के पट हादी ने, इलम लदुन्नी से खोल दिए हैं। और आप हक के नाजी फिरके को हिदायत करके, निसबत मोमिन असलू तन, जो बीच अर्स के हक हादी के कदम तले बैठे हैं। सो देखाई दई है, रूह की नजर से। जिनसों हक ताला ने बका खिलवत बीच, कौल अलस्तो बे रब्ब कुम का किया, तब कालू बला भी रूह मोमिनों ने कह्या है और कलाम अल्ला और हदीसों और कैयों किताबों के बातूनी मगज माएने। हादी ने वारस मोमिनों को, रूह की नजर खोल के, दिल हकीकी

Nijanand App

पर साहेदियों सेती नकस किया है और दिल अर्स कह्या है और दुनियां मुरदार भी नजीक मोमिनों के हैं तिस वास्ते जो हादी तुमको बुलवाने आए थे। सो पट बका का खोल के आगे से केतेक यारों को लेके पधारे हैं। तो मोमिनों को जरूर कदमों कदम धरना है। हुक्म हक हादी के सेती।)

खिलवतकी रद बदलें

पेहेले कहूं अव्वल की, हक हादी हुकम।
मोमिन दिल अर्समें, हकें धरे कदम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि सबसे पहले श्री राजजी महाराज और श्री श्यामाजी महारानी के हुकम से परमधाम के मूल-मिलावा की हकीकत बताती हूं, जिस कारण से मेरे दिल को अर्श बनाकर श्री राजजी महाराज ने अपना सिंहासन बनाया।

जो कह्या आयतों हदीसों, और किताबों बोल।
जिन पर मोहोर महंमद की, सो कहूं फुरमाए कौल।। २ ।।

कुरान की आयतों और मुहम्मद साहब की हदीसों और धर्मग्रन्थों में जो कहा है और जिनके छिपे रहस्यों को आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी को खोलने का अधिकार दिया है, उन वचनों को खोलकर कहती हूं।

एक दूजी को मनसूख, करे आयत आयत को।
तिस वास्ते लेऊं चुन चुन, जो सिरे रखी सबमों।। ३ ।।

कुरान की एक आयत को दूसरी आयत रद करती है, इसलिए मैं कुरान में से खास-खास आयतों को छांटकर जाहिर करती हूं, जो सर्वश्रेष्ठ हैं।

सो सुध पाइए लदुन्नी से, देखे ना उपली नजर।
जो सिफली के दिल मजाजी, बिन इलम देखे क्योंकर।। ४ ।।

इनकी जानकारी जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम वाणी से मिलेगी। ऊपर की नजर से छिपे भेद नहीं खुलेंगे। संसार वालों के झूठे दिल हैं। वह तारतम वाणी के बिना इस इलम को कैसे देख और समझ सकते हैं?

हुकमें कहूं ता दिन की, जो हक हादी रूहों खिलवत।
अबलों जाहेर न काहूं, ए बका मता वाहेदत।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से उस दिन की हकीकत बताती हूं, जिस दिन श्री राजजी, श्यामा जी और रूहों के बीच मूल-मिलावा में इश्क रब्द का वार्तालाप हुआ। यह अखण्ड परमधाम की न्यामत है, जो संसार में आज दिन तक जाहिर नहीं थी।

जब नहीं कछू पैदा हुआ, जिमी या आसमान।
और ना कछू चौदे तबक, फरिस्ते दुनी जहान।। ६ ।।

जब यह जमीन या आसमान कुछ भी नहीं बना था। चौदह लोक का ब्रह्माण्ड नहीं था और न कोई देवी-देवता था। यह संसार (दुनियां) ही नहीं था।

Nijanand App

ना तब चारों चीज को, किनहूं समारे।
ना कछू चांद तब सूरज, ना पैदा सितारे।।७।।

तब तक पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु को किसी ने नहीं संभाला था। यह चांद, सूर्य और सितारे नहीं थे।

ना कोई कहे बेचून को, नाहीं बेचगून।
ना केहेने वाला बेसबीका, नाहीं बेनिमून।।८।।

उस समय कोई शून्य, निराकार, निर्गुण और निरंजन कहने वाला भी नहीं था। जिसको कुरान में बेचून, बेचगून, बेसबी और बेनिमून कहते हैं।

ना खाली तब हवा सुन्य, नाहीं ला मकान।
ना कछू किया तब हुकम, ए जो कह्या कुंन सुभान।।९।।

तब निराकार, शून्य मण्डल और मिट जाने वाला संसार भी नहीं था। जब श्री राजजी महाराज ने 'कुंन' शब्द कहकर दुनियां को बनाने का हुकम भी नहीं दिया था।

एक बका नूर-मकान, आगूं नूरतजल्ला।
रह्या जबराईल हद नूर की, आगूं पोहोंचे रसूल अल्ला।।१०।।

उस समय एक अखण्ड घर अक्षरधाम था और उसके आगे नूरतजल्ला (परमधाम) था। जबराईल फिरश्ता भी अक्षर की हद तक रह गया। आगे परमधाम में रसूल साहब पहुंचे।

जबरूत लाहूत दोऊ बका, हादी रूहें लेवें लज्जत।
ए पातसाही हक की, बीच नूर वाहेदत।।११।।

अक्षरधाम और परमधाम दोनों धाम अखण्ड हैं, परमधाम में श्री श्यामाजी और रूहें आनन्द करती हैं। यही श्री राजजी महाराज की साहेबी का ठिकाना है और यही मूल-मिलावा में रूहों की एकदिली का नूर है।

जब न्यामत पाई हक की, खुली मुसाफ हकीकत।
तब सब विध पाइए, हक अर्स मारफत।।१२।।

जब श्री राजजी महाराज की साहेबी और एकदिली की हकीकत मिल गई, तो कुरान के सभी रहस्य खुल गये। तब श्री राजजी महाराज और परमधाम की पूरी पहचान मिल जाती है।

जिन को हक मेहेरसों, आप करें हिदायत।
सो सबे बिध बूझहीं, अर्स बका निसबत।।१३।।

जिन मोमिनों को हक श्री राजजी महाराज मेहर कर स्वयं इलम के भेद समझाते हैं, वह अखण्ड परमधाम की तथा अपने अंगना होने के सम्बन्ध को अच्छी तरह समझते हैं।

अर्स दिल एही हकीकी, अर्स रूहें मोमिन।
रहें दरगाह बीच असल, सूरत अर्स तन।।१४।।

यह परमधाम के रूह मोमिन के दिल ही सच्चे हैं, जिनके दिल को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श बनाया है। परमधाम के बीच इनके असली तन परआतम बैठे हैं।

Nijanand App

खासलखास रूहें कहीं, ए अहमद उमत।
भाई कहे महंमद के, हक खासी खिलवत।। १५ ।।

इन्हीं को श्री राजजी महाराज ने अपनी खासल-खास रूहें कहा है। यही श्री श्यामाजी महारानी की उम्मत हैं (जमात हैं)। रसूल मुहम्मद ने इन्हीं को ही अपना भाई कहा है। श्री राजजी महाराज के मूल-मिलावा में रहने वाले भी यही हैं।

देखो बड़ाई महंमद, मासूक केहेवें हक।
इन के सरभर दूसरा, कोई नहीं बुजरक।। १६ ।।

अब मुहम्मद (श्री श्यामाजी) की साहेबी को देखो कि श्री राजजी महाराज ने स्वयं इनको अपना माशूक कहा है। इनके बराबर दूसरा किसी का मरातबा नहीं है।

दो हिजाब जर मोती के, बीच राह साल सत्तर।
हक महंमद दोऊ हिजाब में, आखिर बातें करी इन बेर।। १७ ।।

मुहम्मद साहब के बीच में दो परदे एक जरी का और दूसरा मोतियों का बताया है। इन दोनों परदों के बीच का रास्ता सत्तर साल का है। सत्तर साल के बाद आखिरी मुहम्मद की हकी सूरत श्री प्राणनाथजी महाराज और श्री राजजी महाराज के बीच कोई परदा नहीं रहेगा। रू-बरू बातें हुईं। यह सत्तर साल के समय का विवरण इस प्रकार से है कि सम्वत् १६७८ में श्री श्यामजी के मन्दिर में श्री देवचन्दजी महाराज को परमधाम की और अपनी पहचान कराई और इसके बाद सत्तर वर्ष तक, अर्थात् सम्वत् १७४८ तक परमधाम मूल-मिलावा सहित श्री राजजी महाराज की सम्पूर्ण वाणी आ गई और हकी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी ही श्री राजजी महाराज हैं जाहिर हो गए।

ए लिख्या सिपारे आममें, करी बातें हक महंमद।
सो मोमिन आयत देख के, सक सुभे करें रद।। १८ ।।

यह बात कुरान के आखिरी आम सिपारे में लिखी है कि रसूल साहब (बसरी मुहम्मद) ने श्री राजजी महाराज से रू-बरू बातें कीं। मोमिन इन आयतों को देखकर अपने सब संशय मिटा लेंगे।

हक महंमद के बीचमें, कहे आड़े परदे दोए।
सत्तर साल बीच राह कही, जाहेरी माएने निसां क्यों होए।। १९ ।।

श्री राजजी महाराज और मुहम्मद साहब के बीच जो दो परदे कहे हैं, उनके बीच का रास्ता सत्तर साल का बताया है। जाहिरी अर्थ लेने से निःसंदेह कैसे हो सकते हैं?

जो लों मुसाफ हकीकत, खोले नहीं वारस।
कोई पावे ना बिना लदुन्नी, हक महंमद रूहें अर्स।। २० ।।

जब तक कुरान के वारिस मोमिनों ने कुरान की हकीकत को नहीं खोला, तब तक बिना तारतम वाणी के श्री राजजी महाराज की, मुहम्मद की, रूहों की और परमधाम की जानकारी नहीं हो सकती।

ए हादी हमेसगी, अर्स बका हक जात।
नूर रूहें वाहेदत, इत और न कछूए समात।। २१ ।।

अखण्ड परमधाम में श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी महारानी और उनकी रूहें ही आनन्द से रहने वाली हैं। उनके अतिरिक्त मूल-मिलावा में कोई नहीं आ सकता।

Nijanand App

हुई मजकूर अर्समें, सो सब वास्ते इस्क।
अर्स हक हादी रूहें, ए साहेबी बुजरक।। २२ ।।

परमधाम में इश्क के वास्ते वार्तालाप हुआ। जहां श्री राजजी, श्री श्यामाजी, रूहों की एकदिली की ही श्री राजजी की साहेबी है।

खिलवत हक हादीय की, जो इस्क रूहों असल।
ए बातून बारीक वाहेदत की, इत पोहोंचे ना फना अकल।। २३ ।।

जहां श्री राजश्यामाजी का खिलवतखाना है, वहां रूहों का असली इश्क है। परमधाम की एकदिली, की, साहेबी की यह बारीक बातें हैं। यहां संसार की झूठी अक्ल काम नहीं करती।

रूहों कह्या हक हादीय सों, हम तुमारे आसिक।
तुम हमारे मासूक, इनमें नाहीं सक।। २४ ।।

रूहों ने श्री राजजी और श्री श्यामाजी से कहा कि हम आपके आशिक हैं तथा आप हमारे माशूक हो। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

तब कह्या बड़ीरूहने, इस्क मेरा ताम।
हक रूहों की मैं आसिक, मेरा याहीमें आराम।। २५ ।।

तब बड़ी रूह श्री श्यामाजी ने कहा कि इश्क तो मेरी खुराक है, इसलिए मैं श्री राजजी महाराज की और रूहों की आशिक हूं। मुझे इसमें ही आराम मिलता है। मेरा यही काम है।

तब हकें कह्या हादी रूहों को, तुम मासूक मेरे दिल।
इत इस्क मेरा पाए ना सको, जो सहूर करो सब मिल।। २६ ।।

तब श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी महारानी और रूहों से कहा कि तुम मेरे दिल के माशूक हो। यहां तुम सब मिलकर विचार भी कर लो, तो भी मेरे इश्क की पहचान नहीं होगी।

नूर-मकान नूर हक का, जित हैं नूर-जलाल।
तिन दिल हकें यों चाह्या, देखें इस्क नूर-जमाल।। २७ ।।

अक्षरधाम श्री राजजी के नूर से है, जहां नूरजलाल अक्षरब्रह्म रहते हैं। उनके दिल में भी श्री राजजी ने यह चाहना पैदा की कि मैं श्री राजजी महाराज के इश्क की लीला को देखूं।

कैसा इस्क बड़ीरुहसों, कैसा इस्क रूहों साथ।
इस्क हादी का हक से, कैसा हकसों इस्क जमात।। २८ ।।

बड़ी रूह और रूहों के साथ श्री राजजी महाराज कैसा इश्क करते हैं, श्यामाजी का और रूहों का श्री राजजी से कैसा इश्क है?

ए इस्क रमूज रहे हमेसा, हक हादी रूहन।
ए बेवरा क्योंए न होवहीं, बीच वाहेदत इस्क पूरन।। २९ ।।

इश्क का यह वार्तालाप श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहों में हमेशा बना रहता है। जहां सबके अन्दर इश्क ही इश्क हो, वहां इसका विवरण कैसे हो?

Nijanand App

तब हकें दिलमें यों लिया, मैं देखाऊं अपना इस्क।
और पातसाही अपनी, ए देखें रूहें मुतलक।। ३० ।।

तब श्री राजजी महाराज ने अपने दिल में इस तरह से विचार किया कि मैं अपना इश्क और साहेबी रूहों को दिखलाऊं, तब निश्चित रूप से रूहों को जानकारी मिलेगी।

बका अर्स में जुदागी, सो तो कबूं न होए।
ए बेवरा नहीं वाहेदतमें, होए कम ज्यादा बीच दोए।। ३१ ।।

अखण्ड परमधाम में जुदाई कभी होती नहीं है। एकदिली में इसका विवरण हो नहीं सकता। जहां दोनों के बीच कुछ कम ज्यादा हो, तो इश्क का पता चले।

ए मजकूर अव्वल का, हंसते करें सब कोए।
पर कम ज्यादा वाहेदत में, बेवरा क्योंए न होए।। ३२ ।।

यह वार्तालाप सबसे पहले का है, जब सब हंस-हंसकर बातें करते थे, किन्तु परमधाम की एकदिली में कम ज्यादा न होने के कारण से इसका फैसला नहीं हो सकता था।

हक आसिक हादीय का, और आसिक रूहन।
ऐसा हक का सुकन, क्यों सहें बन्दे मोमिन।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज श्री श्यामाजी और रूहों के आशिक हैं। श्री राजजी महाराज के इन वचनों को हक की आशिक रूहें कैसे सहन कर लेतीं?

चाहिए मोमिन आसिक हक के, और आसिक हादी के।
रूहें हादी आसिक हक की, सीधा इस्क बेवरा ए।। ३४ ।।

होना तो यह चाहिए कि रूहें श्री राजजी की और श्री श्यामाजी की आशिक हों। रूहें और श्री श्यामाजी श्री राजजी के आशिक हों यह इश्क की सीधा फैसला है।

वाहेदत कहिए इनको, एक इस्क तन मन।
जुदागी जरा नहीं, वाहेदत में पाव खिन।। ३५ ।।

इनका तन, मन और इश्क सब एक होने से इनको वाहेदत कहा है। ऐसी एकदिली में एक क्षण की भी जुदाई सम्भव नहीं हो सकती।

मैं छिपाऊं तुमको, बैठो पकड़ कदम।
तुम इस्कै से पाओगे, आए मिलो माहें दम।। ३६ ।।

तब श्री राजजी महाराज ने कहा कि तुम मेरे चरण पकड़कर बैठो। मैं तुमसे छिप जाऊंगा, अर्थात् नजर नहीं आऊंगा। तब तुम मुझे इश्क से ही पा सकोगी और एक पल में ही आकर मुझसे मिल जाओगी।

उतर जब तुम देखोगे, लैलत कदर के माहें।
और जिमी औरै आसमान, देखो प्रतिबिम्ब तांहें।। ३७ ।।

जब तुम लैल तुल कदर की रात्रि (मोह) के खेल में उतरकर देखोगे तो वहां पर और ही जमीन होगी और ही आसमान होगा और वहां पर अपने नकली तनों को देखोगे।

Nijanand App

फरामोसी क्यों होएसी, क्या जुदे होसी माहें खेल।
तुमको क्यों हम भूलेंगे, ए कैसी है कदर लैल।। ३८ ।।

रूहों ने कहा कि फरामोशी कैसे होगी? क्या हम खेल में अलग-अलग हो जाएंगे? हम आपको कैसे भूल सकते हैं? यह कैसी कदर की रात्रि है? मोह का खेल है?

कह्या हकें रूहन को, तुम उतरो माहें लैल।
बैठो पकड़ कदम, देखोगे माहें खेल।। ३९ ।।

तब श्री राजजी महाराज ने रूहों से कहा कि तुम रात्रि में उतरो। हमारे चरण पकड़कर बैठो, तो अपने आपको संसार में पाओगे।

देखो और जिमीय को, औरै आसमान।
सो सब फना बीच में, दुनियां सकल जहान।। ४० ।।

वहां तुम्हें और ही जमीन, और ही आसमान दिखाई देंगे। वह सब संसार नाशवान होगा।

तित कानों सुने जाएंगे, ए जो चौदे तबक।
कोई हमारे अर्स की, तरफ न पावे हक।। ४१ ।।

वहां पर चौदह तबक की ही चर्चा होगी और सुनाई पड़ेगी। हमारे अखण्ड परमधाम की जानकारी वहां पर किसी को नहीं होगी।

देखो जिमी दमी आदमी, खलक तमासा।
ए खाली बीच बसत हैं, मुरदों का वासा।। ४२ ।।

वहां पर जाकर जमीन को, आदमी को, जीव-जन्तु को और संसार के तमाशे को देखोगे। उस खाली जमीन में मुर्दे ही वास करते हैं, अर्थात् अखण्ड कोई नहीं है और न वहां किसी को अखण्ड का ज्ञान है।

ए ना कछू पेहेले हुते, ना होसी आखिर।
खेल ऐसा देखो बीच, माहें लैलत कदर।। ४३ ।।

यह इससे पहले भी कुछ नहीं थे और न बाद में कुछ रहेंगे। लैल तुल कदर के बीच में ऐसा खेल देखोगे।

रूहें देखें झूठ फरेब को, कई भांत तमासा।
लाख विधों कई खोजहीं, कोई पावे ना खुलासा।। ४४ ।।

हे रूहो! तुम झूठे संसार में जाकर कई तरह के तमाशे देखोगी। जहां कई लोग लाखों तरह से खोजते हुए मिलेंगे, परन्तु संसार के रहस्य को नहीं समझ पाएंगे।

ए जो दुनी देखो खेलती, आवे जाए हुकम।
झूठा वजूद ना रेहेवहीं, चले कर गिनती दम।। ४५ ।।

यह तुमको जो दुनियां जन्मती-मरती नजर आएगी, वह सब मेरा हुकम ही है। संसार के झूठे तन अपने-अपने सांस पूरे करके मरते रहेंगे।

Nijanand App

आवे जाए माहें खेलहीं, अपने बल उमर।
ढूंढ्या फेर न पाइए, ए मुआ क्यों कर।।४६।।

संसार में सभी अपनी उम्र के अनुसार मरने-जीने का खेल करते रहेंगे। यह कैसे मर गया, कहां चला गया, ढूंढ़ने से पता नहीं चलेगा।

कोई आप न चीन्हहीं, ना चीन्हे हक वतन।
ना चीन्हे तिन जिमीय को, ऊपर खड़ा है जिन।।४७।।

वहां किसी को अपनी, अपने वतन की तथा श्री राजजी की पहचान नहीं होगी। उस जमीन की भी पहचान नहीं होगी, जिस पर वह खड़े हैं।

कहे हक तुम भूलोगे, उन जिमी में जाए।
रहोगे बीच नासूत के, उतहीं उरझाए।।४८।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि उस जमीन पर जाकर तुम भूल जाओगी और मृत्युलोक के बीच में तुम उलझ कर रह जाओगी।

चलना जेता रात का, अमल जो सरीयत।
दिन मारफत हुए बिना, कछुए ना सूझत।।४९।।

वहां पर शरीयत (कर्मकाण्ड) का अमल होगा। वहां सभी जगह अज्ञान की रात्रि का अंधेरा होगा। मारफत के ज्ञान का सूर्य उदय हुए बिना कुछ भी नहीं सूझेगा।

बिना इस्क सूझे नहीं, ए जो रात का अमल।
ए राह चलसी लग फजर, तोरे के बल।।५०।।

इस अज्ञानता के अंधेरे की पहचान तुम्हें बिना इश्क की समझ के नहीं होगी। यह रास्ता हुकूमत के बल पर ज्ञान का सवेरा होने तक चलेगा।

बातून जब तुम देखोगे, खोलसी रूह नजर।
लैलत कदर के तकरार, तीसरे होसी फजर।।५१।।

जब तुम अपनी रूह की नजर को खोलकर बातूनी भेद को समझोगे तो लैल तुल कदर की रात्रि के तीसरे भाग में ज्ञान का सवेरा हो जाएगा।

लिखों हकीकत खिलवत की, आखिर होसी जो सब।
कहां से लिख भेज्या कौन खसमें, कहोगे आए हम कब।।५२।।

मैं परमधाम की सब हकीकत लिखकर भेजूंगा, तब संसार का आखिरी समय होगा, परन्तु तुम वहां पर पूछोगे कि यह किसने कहा, कहां से लिखकर भेजा है, हमारा खसम कौन है और हम यहां कब आए?

ए इस्क तो पाइए, जो पेहेले मोकों जाओ भूल।
तुम ले बैठो जुदागी, मैं भेजों तुम पर रसूल।।५३।।

हे रूहो! तुम पहले मुझे भूल जाओ तब तुम्हें मेरा इश्क मिलेगा। तुम मेरे से अलग हो जाओ तो मैं तुम्हारे पास रसूल को भेजूंगा।

Nijanand App

रसूल आवेगा तुम पर, ले मेरा फुरमान।
आए मेरे अर्स की, देसी सब पेहेचान।।५४।।

रसूल तुम्हारे पास मेरा फुरमान लेकर आएगा और मेरे घर की सब जानकारी (पहचान) देगा।

तब दिल में राखियो, खबरदारी तुम।
इसारतें कई रमूजें, लिख भेजेंगे हम।।५५।।

मैं तुम्हें कई तरह से इशारे और दिल की गुझ बातें लिखकर भेजूंगा। तब तुम उन्हें दिल में रख लेना और सावचेत (सावधान) हो जाना।

तुम पर भेजोंगा फुरमान, मासूक के हाथ।
अर्स कुंजी नूर रोसन, भेजों रूह मेरी साथ।।५६।।

मैं तुम्हारे पास कुरान को अपने माशूक मुहम्मद के हाथ भेजूंगा। परमधाम की कुंजी तारतम वाणी अपनी बड़ी रूह श्री श्यामाजी के साथ भेजूंगा।

द्वार सबे खोलसी, होसी नूर रोसन।
देखोगे हक सूरत, और असलू तन।।५७।।

श्री श्यामाजी महारानी सब दरवाजे खोल देंगी। तब तुम्हें परमधाम का ज्ञान होगा। तभी तुम मेरे स्वरूप को और असली तन को देख सकोगी।

तुम कहोगे कहां खसम, कैसा खेल कौन हम।
देसी साहेदी रसूल रुहअल्ला, जो खिलवत करी हम तुम।।५८।।

वहां जाकर तुम कहोगे कि खसम कहां है, खेल कैसा है हम कौन हैं? परमधाम में जो हमने इश्क का वार्तालाप किया है, उसकी गवाही रसूल साहब और श्री श्यामा महारानी देंगी।

हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए-रोए।
तुम भी सुन-सुन रोएसी, पर होस में न आवे कोए।।५९।।

श्री श्यामाजी महारानी मेरे सन्देशों को रो-रोकर तुम्हें समझाएंगी। तुम भी सुन-सुनकर रोओगे, पर होश में न आ सकोगे।

तुम कहोगे रसूल को, हम क्यों आए कहां वतन।
मलकूत बिना कछू और है, आगे तो खाली हवा सुंन।।६०।।

तुम रसूल साहब से कहोगे कि हम क्यों आए हैं? हमारा घर कहां है? क्या बैकुण्ठ के बिना भी कोई और है? आगे तो केवल निराकार और शून्य है।

मैं भेजों रूह अपनी, इलम देसी समझाए।
तब मूल कुल्ल अकल, असराफील ले आए।।६१।।

मैं अपनी श्री श्यामाजी महारानी को भेजूंगा जो ज्ञान से तुम्हें समझाएंगी। तब परमधाम की कुल अक्ल जागृत बुद्धि असराफील फरिश्ता लेकर आएगा और श्री प्राणनाथजी के अन्दर बैठकर जाहिर करेगा।

Nijanand App

आयतें हदीसें रसूल, और किताबें सब।
खोलसी इसारतें रमूजें, होसी पेहेचान तब।। ६२ ।।

कुरान की आयतें तथा रसूल साहब की हदीसें और कई धर्मग्रन्थों की सभी इशारतें और रम्जें (रमूजें) असराफील फरिश्ता जागृत बुद्धि के ज्ञान से खोल देगा। तब तुम्हें पहचान होगी।

देखाए फरामोसी तारीकी, ऊपर देऊं मेरा इलम।
जासों मुरदे होवें जीवते, सो दई हाथ हैयाती तुम।। ६३ ।।

तुम्हें माया की फरामोशी दिखाऊंगा और उसके बाद अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान दूंगा, जिससे संसार के मुर्दे जीव अखण्ड हो जाएंगे। उनको अखण्ड करने का काम भी तुम्हारे हाथों से होगा।

जो कछू आखिर होएसी, तुम देत हो आगूं बताए।
सो क्यों हम भूल जाएंगे, जो लेत हैं दिल लगाए।। ६४ ।।

रूहें कहती हैं कि आखिर में जो होगा, वह आप हमें पहले से ही बता रहे हो। हम वहां जाकर कैसे भूल जाएंगे, जब हम आपकी बातों को दिल में धारण कर रखेंगे।

दूर तो कहूं न करोगे, बैठे कदम तले।
फेरें तुमारा फुरमाया, हम ऐसी क्यों करें।। ६५ ।।

हमें कहीं दूर तो नहीं भेजोगे? हम आपके चरणों के तले बैठे हैं। हम आपकी आज्ञा को कैसे टालेंगे? हम ऐसा क्यों करेंगे?

करें हुसियारी आपुस में, हम देखें खेल जुदागी।
देखें हक डारें क्यों जुदागी, हम बैठे सब अंग लागी।। ६६ ।।

इस तरह से आपस में होशियारी करके हम जुदाई का खेल देखेंगे। हम भी देखते हैं कि श्री राजजी हमको अलग कैसे करते हैं? हम सब अंग से अंग लगाकर बैठती हैं।

इन विध एक दूजी सों, करी सबों मसलहत।
आपन मोमिन सब एक तन, बीच कहां पैठे गफलत।। ६७ ।।

इस तरह से सखियों ने एक-दूसरे से मिलकर सलाह की कि हम सब सखियां एकतन हैं, तो हमारे बीच यह भूल कैसे आ सकती है?

मैं भूलों तो तूं मुझे, पल में दीजे बताए।
तूं भूले तो मैं तुझे, देऊंगी तुरत जगाए।। ६८ ।।

मैं भूल जाऊं तो तू मुझे एक पल में बता देना। तू भूलेगी तो मैं तुझे तुरन्त जगा दूंगी।

हम देखेंगे हक इस्क, और पातसाही हक।
सो ए आपन मिल देखसी, ऐसा सुख हक का मुतलक।। ६९ ।।

हम श्री राजजी महाराज के इश्क और साहेबी को देखेंगे। श्री राजजी महाराज के ऐसे सुख को हम निश्चित ही देखेंगे।

Nijanand App

हम रूहों को देखाइए, बड़ा इस्क हक।
और पातसाही हक की, ए जो बड़ी बुजरक।।७०।।

तब सब रूहों ने श्री राजजी से कहा कि हमें आप अपनी साहेबी और इश्क को दिखाइए, जिसे सबसे बड़ा कहते हो।

हम कदम छोड़ के, कहूं जाए न सकें दूर।
बैठे इत देखें सबे, बीच तजल्ला नूर।।७१।।

हम श्री राजजी के चरण छोड़कर दूर नहीं जा सकते। हम परमधाम में बैठकर ही यह खेल देखेंगे।

कहे हक देखो खेल लैल का, बैठे अर्स में इत।
पीछे देखो सरत पर, सूरज मारफत।।७२।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि तुम परमधाम में बैठकर लैल का खेल देखो। उसके बाद अपने समय पर ज्ञान का सूर्य उदय होगा, उसे देखना।

राह रसूल बतावहीं, मेरे अर्स चढ़ उतर।
तब तुम महंमद के, कदम लीजो दिल धर।।७३।।

मेरा रसूल तुम्हें परमधाम के आने-जाने का रास्ता और तरीका बताएगा। तब तुम रसूल मुहम्मद के बताए रास्ते क्षर से पार अक्षर और अक्षर के पार अक्षरातीत के रास्ते को दिल में धारण कर लेना।

रात अमल तब मेट के, करसी इलम फजर।
देखोगे दिन मारफत, खोल देसी रूह नजर।।७४।।

श्री प्राणनाथजी हकी सूरत अज्ञान का अन्धकार (कर्मकाण्ड) मिटाकर जागृत बुद्धि के ज्ञान से सवेरा करेंगे। तुम्हारी नजर को खोलकर मारफत का ज्ञान तुम्हें दिखाएंगे।

रद बदल आपुसमें, कर बैठे मजकूर।
कौल किया बीच खिलवत, हकें अपने हजूर।।७५।।

सभी इस तरह से आपस में रद-बदल (वार्तालाप) करके बैठ गये और आगे राजजी से वार्तालाप होने लगा। तब श्री राजजी महाराज ने मूल-मिलावा में अपने सामने चरणों में सबको बैठाकर वचन दिया।

हकें करी रूहें साहेद, और फरिस्ते साहेद।
आप भी बीच साहेद, कौल किया वाहिद।।७६।।

श्री राजजी महाराज ने रूहों को गवाह बनाया और असराफील फरिश्ते को भी गवाह बनाया। खुद भी गवाह बने। इस तरह से अपनी रूहों से श्री राजजी महाराज ने वायदे किए।

इस्क का अर्स अजीममें, रब्द हुआ बिलंद।
तो बेवरा देखाया इस्क का, माहें फरेबी फंद।।७७।।

परमधाम में इश्क का बहुत भारी वार्तालाप हुआ, इसलिए इश्क का विवरण करने के वास्ते झूठी माया का खेल दिखलाया।

Nijanand App

आप बैठे दिल देय के, ऊपर बारे हजार।
होसी हांसी सब मेयराजमें, जिनको नहीं सुमार।। ७८ ।।

अपनी बारह हजार रूहों को अपने दिल में लेकर सिंहासन पर बैठे। आखिर में जब आमने-सामने (रू-बरू) मिलेंगे तो बेशुमार हंसी होगी।

महामत कहे ए मोमिनों, याद करो खिलवत सुकन।
जो किया कौल अलस्तो-बे-रब, मिल हक हादी रूहन।। ७९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! जहां श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी और रूहों ने मिलकर वायदा किया था कि मैं ही एक तुम्हारा खुदा हूं और हमने बेशक कहा था, वहां मूल-मिलावा के उन वचनों को याद करो।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ७९ ।।

इलम लदुन्नी नुकता तारतम

तिस वास्ते दुनी पैदा करी, दई दूर जुदागी जोर।
हमें नजीक लिए सेहेरग से, यों इलमें देखाया मरोर।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने इस वास्ते दुनियां बनाई और फिर हमको जुदाकर खेल में जुदाई दिखाई। बाद में आपने जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर हमें अपने को सेहेरग से नजदीक बताया।

अर्स बका बीच ब्रह्मांड के, सुध चौदे तबकों नाहें।
सो हम को नजीक सेहेरग से, पट खोल लिए बका माहें।। २ ।।

अखण्ड परमधाम की खबर चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में किसी को नहीं थी। उस परमधाम के परदे खोलकर हमें सेहेरग से नजदीक दिखाया।

जाहेरियों नजर जाहेर, धरी ऊपर सात आसमान।
हक छोड़ नजीक सेहेरग से, पूजी हवा तारीक मकान।। ३ ।।

संसार के जाहिरी लोगों की नजर ऊपर के सात आसमान (बैकुण्ठ) तक ही सीमित है। श्री राजजी महाराज सेहेरग से नजदीक हैं। उन्हें छोड़कर सब निराकार के पूजक बने हैं।

रूहें अर्स से उतरीं, बीच लैलत कदर।
तिनमें रूहअल्लाह की, भेजी सिरदार कर।। ४ ।।

परमधाम से रूहें लैल तुल कदर की रात्रि में खेल में उतरीं। उन रूहों के बीच श्री श्यामाजी महारानी को सिरदार (प्रमुख) बनाकर भेजा।

ल्याए इलम लदुन्नी, खोली हक हकीकत।
खोले पट सब अर्सों के, हक दिन मारफत।। ५ ।।

श्री श्यामाजी महारानी तारतम ज्ञान लाईं। श्री राजजी की हकीकत बताई। उन्होंने क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के अर्शों के सब भेद और राजजी महाराज के मारफत का ज्ञान देकर अन्धकार मिटाकर ज्ञान का दिन जाहिर किया।

Nijanand App

आप बैठे दिल देय के, ऊपर बारे हजार।
होसी हांसी सब मेयराजमें, जिनको नहीं सुमार।। ७८ ।।

अपनी बारह हजार रूहों को अपने दिल में लेकर सिंहासन पर बैठे। आखिर में जब आमने-सामने (रू-बरू) मिलेंगे तो बेशुमार हंसी होगी।

महामत कहे ए मोमिनों, याद करो खिलवत सुकन।
जो किया कौल अलस्तो-बे-रब, मिल हक हादी रूहन।। ७९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! जहां श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी और रूहों ने मिलकर वायदा किया था कि मैं ही एक तुम्हारा खुदा हूं और हमने बेशक कहा था, वहां मूल-मिलावा के उन वचनों को याद करो।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ७९ ।।

इलम लदुन्नी नुकता तारतम

तिस वास्ते दुनी पैदा करी, दई दूर जुदागी जोर।
हमें नजीक लिए सेहेरग से, यों इलमें देखाया मरोर।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने इस वास्ते दुनियां बनाई और फिर हमको जुदाकर खेल में जुदाई दिखाई। बाद में आपने जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर हमें अपने को सेहेरग से नजदीक बताया।

अर्स बका बीच ब्रह्मांड के, सुध चौदे तबकों नाहें।
सो हम को नजीक सेहेरग से, पट खोल लिए बका माहें।। २ ।।

अखण्ड परमधाम की खबर चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में किसी को नहीं थी। उस परमधाम के परदे खोलकर हमें सेहेरग से नजदीक दिखाया।

जाहेरियों नजर जाहेर, धरी ऊपर सात आसमान।
हक छोड़ नजीक सेहेरग से, पूजी हवा तारीक मकान।। ३ ।।

संसार के जाहिरी लोगों की नजर ऊपर के सात आसमान (बैकुण्ठ) तक ही सीमित है। श्री राजजी महाराज सेहेरग से नजदीक हैं। उन्हें छोड़कर सब निराकार के पूजक बने हैं।

रूहें अर्स से उतरीं, बीच लैलत कदर।
तिनमें रूहअल्लाह की, भेजी सिरदार कर।। ४ ।।

परमधाम से रूहें लैल तुल कदर की रात्रि में खेल में उतरीं। उन रूहों के बीच श्री श्यामाजी महारानी को सिरदार (प्रमुख) बनाकर भेजा।

ल्याए इलम लदुन्नी, खोली हक हकीकत।
खोले पट सब अर्सों के, हक दिन मारफत।। ५ ।।

श्री श्यामाजी महारानी तारतम ज्ञान लाईं। श्री राजजी की हकीकत बताई। उन्होंने क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के अर्शों के सब भेद और राजजी महाराज के मारफत का ज्ञान देकर अन्धकार मिटाकर ज्ञान का दिन जाहिर किया।

Nijanand App

उतरे खेल देखन को, रूहें जिन के इजन।
सो ढूंढ़ें हक सहूरसे, अर्स रूहें मोमिन।। ६ ।।

रूहें जिनके हुकम से खेल देखने के वास्ते उतरी हैं, वह परमधाम के मोमिन अब विचार करके श्री राजजी महाराज को ढूंढ़ रहे हैं।

लेवें सब साहेदियां, हदीसे महंमद।
और आयतें कुरान की, सूरतें मगज सब्द।। ७ ।।

वह सब मुहम्मद साहब की हदीसें, कुरान की आयतों की सूरतों से छिपे रहस्यों की गवाहियां लेंगी।

लिखे आयतों हदीसों, हक के सुकन।
समझेगी सोई रूह, जाके असल अर्स में तन।। ८ ।।

आयतों और हदीसों में श्री राजजी महाराज के वचन लिखे हैं। जिन्हें वह रूहें समझेंगी जिनके परमधाम में मूल तन (परआतम) बैठे हैं।

इसारतें और रमूजें, लिखे कई किस्से निसान।
सो ए पाओ तुम हदीसों, और आयतों कुरान।। ९ ।।

परमधाम की इशारतें और रमूजें कई किस्सों में लिखी हैं। जिन्हें तुम हदीसों से, कुरान की आयतों से जान सकोगे।

करें किताबें जाहेर, और खुलासे पुकार।
बिन मोमिन बिन लदुन्नी, करे सो कौन विचार।। १० ।।

यह सभी किताबें परमधाम की बातों को जाहिर करती हैं, परन्तु मोमिन और तारतम ज्ञान के बिना कौन समझ सकता है?

ए और कोई बूझे नहीं, बिना अर्स के तन।
जो नूर बिलंद से उतरीं, दरगाही रूहें मोमिन।। ११ ।।

जो परमधाम के मोमिन हैं और खेल में उतरे हैं, उनके बिना और कोई नहीं समझ सकता।

नूर कुंजी आए पीछे, ईसे का अमल।
साल सत्तर ढांप्या रह्या, आगूं चल्या महंमदी मिल।। १२ ।।

तारतम ज्ञान की कुंजी सम्वत् १६७८ में आने के बाद ईसा रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी का अमल सत्तर साल तक (सम्वत् १७४२ तक) ढंपा रहा। प्रचार-प्रसार नहीं हुआ। वाणी धीरे-धीरे उतरती रही और फिर सम्वत् १७४८ में मारफत सागर का ज्ञान उतरने के बाद बसरी और मल्की सूरत का ज्ञान हकी सूरत से जाहिर हो गया।

आए हुआ इत रोसन, ऊपर अपनी सरत।
अव्वल आखिरी इलमें, जाहेर करी कयामत।। १३ ।।

अव्वल का ज्ञान कुरान तथा आखिर का ज्ञान तारतम वाणी से श्री राजजी महाराज ने अपने वायदे के अनुसार आकर सबको जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर कयामत को जाहिर किया।

Nijanand App

एही बका अर्स की, हक करें हिदायत।
खोली खिलवत गैब की, हक की वाहेदत।। १४ ।।

परमधाम की रूहों के वास्ते श्री राजजी महाराज ने मूल-मिलावा की हकीकत बताई। यही अखण्ड परमधाम के मोमिन हैं, जिनको श्री राजजी महाराज समझा रहे हैं।

लिख्या सिपारे आठमें, मोमिनों की हकीकत।
हुई ढील फजर वास्ते, करी जाहेर गैब खिलवत।। १५ ।।

कुरान के आठवें सिपारे में मोमिनों की हकीकत लिखी है। ज्ञान का सवेरा मारफत सागर का ज्ञान आने में जो देरी हुई, उस देरी का कारण परमधाम की खिलवत, परिकरमा, सागर और सिनगार की वाणी उतरना था।

खोल बका अर्स मोहोलात, और बाग हौज जोए।
मोमिन देखें जिमी जंगल, पसु पंखी सोए।। १६ ।।

इस वाणी के उतरने से परमधाम के महल, बगीचे, हौज कौसर, ताल, जमुनाजी, जमीन, जंगल, पशु, पक्षी, सभी को मोमिन देखने लगे।

सूरत आतेना–कलकौसर, लिखी आम सिपारे।
सो आए देखो तुम महंमदी, खोले नूर पार द्वारे।। १७ ।।

कुरान के तीसवें सिपारे में आतेना कल्कौसर की सूरत लिखी है। दीन-ए-मुहम्मदी के मानने वालो! आओ, उसको देखो। अक्षर के पार परमधाम का वर्णन है।

कह्या होसी जाहेर, अर्स रूहें मोमिन।
उतरे नूर बिलंद से, करें सब अर्स रोसन।। १८ ।।

इसमें कहा है कि परमधाम के रूह मोमिन संसार में जाहिर होंगे। वह परमधाम से खेल में उतरे हैं और वही परमधाम की सारी जानकारी देंगे।

जो कह्या महंमदें, लैल मेयराज माहीं।
सोई कौल रूहअल्ला ने, कहे रूहों के तांईं।। १९ ।।

रसूल साहब ने मेयराज (दर्शन) की रात की जो बातें बताई थीं, वही बातें श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने रूहों को बताईं।

जब इन दोऊ मरदों ने, मिल साहेदी दई।
तब मेरे दिल अर्स में, जरा सक ना रही।। २० ।।

जब रसूल साहब और श्री श्यामाजी महारानी दोनों मर्दों ने एक ही बात बताई, तब मेरे अर्श दिल में किसी तरह का संशय नहीं रहा।

तो इन रूहों मोमिनों, दिल अर्स केहेलाया।
जो हक इलम लदुन्नी, मेरे दिल आगूं ही आया।। २१ ।।

संशय मिट जाने पर रूह मोमिनों के दिल को जो अर्श कहा है, उसकी पहचान हो गई। अब श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान मेरे हृदय में आ गया।

Nijanand App

तब कह्या हुई फजर, ऊग्या हक बका दिन।
तब सूरज मारफत के, करी गिरो रोसन।। २२ ।।

जब श्री राजजी महाराज के अखण्ड ज्ञान का दिन उग गया, तब सवेरा हो गया और जागृत बुद्धि के ज्ञान के सूर्य को मोमिनों ने जाहिर किया।

कौल कहे सो सब हुए, और भी कह्या होत।
रुहअल्ला ल्याए इलम, भरे जिमी आसमान जोत।। २३ ।।

परमधाम के मूल-मिलावा में जो वायदे किए थे, वह सब सत्य हुए। आगे भी सत्य होंगे। श्री श्यामाजी महारानी जो जागृत बुद्धि का ज्ञान लाई हैं, उसने सारे संसार में ज्ञान का उजाला कर दिया।

रूहअल्ला अर्स अजीम से, नूर आला ले आए।
सो ए नूर कोई क्यों कर, सकेगा छिपाए।। २४ ।।

श्री श्यामाजी परमधाम से सर्वश्रेष्ठ (न्यामत) तारतम ज्ञान लेकर आए हैं। इसके तेज को (प्रकाश को) अब कोई कैसे छिपा सकेगा?

हवा अंधेरी बीच रात के, ऊग्या मारफत सूर।
भरे जिमी और आसमान, दुनियां पूर नूर।। २५ ।।

इस निराकार के अंधेरे में ज्ञान का सूर्य उदय हुआ है, जिससे आसमान और जमीन में सब जगह प्रकाश ही प्रकाश फैल गया।

ऐसी करी बीच आलम, रूहअल्ला के इलम।
मारया कुली दज्जाल को, जो करता था जुलम।। २६ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के जागृत बुद्धि के ज्ञान ने संसार की ऐसी हालत कर दी कि शैतान और कलियुग को मारकर समाप्त कर दिया, जो संसार में सभी को गुमराह करता था।

फुरमाया सो सब हुआ, जो कछू कह्या महंमद।
तो जो किया रूहअल्लाने, दज्जाल को रद।। २७ ।।

रसूल साहब ने जो कहा था, वह सब बातें सत्य हुईं, इसलिए रूह अल्लाह श्री श्यामाजी ने दज्जाल (अज्ञान) को मार दिया।

कुरान माजजा नबी नबुवत, साबित होए हुए एक दीन।
ईसा करसी हक इलमें, आवसी सबों आकीन।। २८ ।।

अज्ञान के समाप्त होने से सब एक पारब्रह्म के पूजक बनेंगे और तब श्री श्यामाजी (ईसा रूह अल्लाह) श्री राजजी के जागृत बुद्धि के ज्ञान से सबको यकीन दिलाएंगे। उस समय कुरान की सभी बातें सत्य हैं और रसूल साहब की पैगम्बरी सत्य है, जाहिर हो जाएगा।

फुरमाया सो सब हुआ, ऊपर अपनी सरत।
कौल रसूल के फिरवले, आई ए आखिरत।। २९ ।।

रसूल साहब ने जो कुछ कहा था, सभी बातें अपने समय पर पूरी हुईं। अब रसूल साहब की बातें सत्य लगती हैं, क्योंकि समय आखिरत का आ गया है।

Nijanand App

कौल किए हक हादीने, माहें खिलवत रूहन।
सो दिल महंमद मोमिनों, हुआ पूर रोसन।। ३० ।।

परमधाम में रूहों से, श्री श्यामाजी से श्री राजजी ने जो वायदे किए थे, आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी महाराज ने मोमिनों के दिलों में उसकी पूरी जानकारी कर दी।

एक गिरो रूहें अर्स से, हुकमें आई जो इत।
जिन ऊपर रसूल, ल्याए किताबत।। ३१ ।।

एक जमात रूहों की परमधाम से श्री राजजी के हुकम से यहां आई है। उसके वास्ते ही रसूल साहब कुरान का ज्ञान लेकर यहां आए हैं।

तिन रूहों के बीच में, रूहअल्ला सिरदार।
सो ए लिखी माहें हदीसों, जो कही परवरदिगार।। ३२ ।।

उन रूहों के बीच में श्री श्यामाजी महारानी सिरदार (प्रमुख) हैं। श्री राजजी महाराज ने यह बात कही थी जो हदीस में लिखी है।

सो ए करी जाहेर, रसूलें इत आए।
सोई रूहअल्ला सुकन, ल्याए मोमिनों बताए।। ३३ ।।

रसूल साहब ने उसी बात को यहां आकर जाहिर किया। श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने भी आकर वही बातें मोमिनों को बताई।

सो तो आया हक का, लदुन्नी इलम।
लिख्या दिल अर्स पर, मोमिनों बिना कलम।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान आ गया है, जो मोमिनों के दिलों में पहले से ही अंकित है, क्योंकि मोमिन अर्श के रहने वाले हैं। इनको अपने घर की सब बातों का पता है।

सो ए लिख्या कुरान में, बाईसमें सिपारे।
लिखियां आयतां जंजीरां, बयान न्यारे न्यारे।। ३५ ।।

कुरान के बाईसवें सिपारे की अलग-अलग आयतों में यह बात लिखी है। सब बातें किस्सों के रूप में अलग-अलग तरह से लिखी हैं।

जो देखेगा दिल दे, आयतां जंजीरां मिलाए।
माएने मगज मुसाफ के, होसी नूर रोसन ताए।। ३६ ।।

यदि कुरान की आयतों की कड़ियों को मिलाकर देखोगे तो कुरान के छिपे रहस्यों का ज्ञान मिलेगा।

ऐसा अब लग कबहूं, हुआ नहीं रोसन।
सो हक हादी जानत, या जानें रूहें मोमिन।। ३७ ।।

आज दिन तक कभी भी ऐसा ज्ञान नहीं मिला। इसे श्री राजजी, श्री श्यामाजी और मोमिन ही जानते हैं।

Nijanand App

जब हक का इलम, हुआ जाहेर ए।
तिन इलमें कायम करी, दुनी फानी हुती जे।। ३८ ।।

जब श्री राजजी की जागृत बुद्धि का ज्ञान संसार में जाहिर हुआ, तब इस जागृत बुद्धि के ज्ञान ने मिटने वाली दुनियां को जन्म-मरण से छुड़ाकर अखण्ड कर दिया।

ए सुकन बातून जिन को, दिल बीच सोहाए।
सो सुनके तबहीं, एक दीनमें आए।। ३९ ।।

इन वचनों के बातूनी अर्थ जिनको दिल में अच्छे लगे, वही इन वचनों को सुनकर एक पारब्रह्म के पूजक बने और निजानन्द सम्प्रदाय में आ गए।

बका अर्स हक सूरत, हुआ नूर रोसन।
सो ए सरत जाहेर हुआ, फरदा रोज का दिन।। ४० ।।

श्री राजजी महाराज का अखण्ड परमधाम, उनका स्वरूप और सारी बातों का ज्ञान अपने समय पर जाहिर हो गया। इसी बात को रसूल साहब ने कुरान में फर्दा-रोज के दिन खुदा आएगा, लिखा है।

जो कलाम अल्लाह में, फुरमाई फजर।
सो खुली हक इलमें, रूह बातून नजर।। ४१ ।।

कुरान में जिसे सवेरे का ज्ञान बताया था, श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के उस ज्ञान से मेरी नजर खुल गई और बातूनी भेद खुल गए।

हुआ खासलखास जो, रूह मोमिनों मेला।
बहत्तर से जुदा कह्या, नाजी फिरका अकेला।। ४२ ।।

खासल-खास रूह मोमिनों का मेला हुआ। यह मुहम्मद साहब के बहत्तर फिरकों से अलग नाजी फिरका कहलाया।

जिन को लिखी आयतों हदीसों, हिदायत हक।
हकें इलम अपना, तिन को दिया बेसक।। ४३ ।।

श्री राजजी महाराज ने जिन मोमिनों के वास्ते आयतों और हदीसों में हिदायतें (सिखापन) लिखी हैं, उन्हीं को ही श्री राजजी महाराज ने अपनी जागृत बुद्धि का बेशक ज्ञान दिया। यही नाजी फिरका है।

सोई मोमिन अर्स के, उतरे नूर बिलंद।
ताको टाली हक इलमें, झूठ फरेबी फंद।। ४४ ।।

यही वह मोमिन हैं जो परमधाम से खेल में उतरे हैं। जागृत बुद्धि के ज्ञान ने इन मोमिनों को झूठ की पूजा और फरेबी माया के संसार के फन्दे से मुक्त कराया।

हुई मोमिनों को पूरन, तौहीद की मदत।
सो लेवें दुनियां मिने, हक अर्स लज्जत।। ४५ ।।

अब इन मोमिनों को श्री प्राणनाथजी की पूरी मदद मिल गई है। यह दुनियां में बैठकर भी परमधाम और श्री राजजी महाराज के सुखों का आनन्द लेते हैं।

Nijanand App

नाहीं मोमिनों कबहूं, दुनियां का दिमाक।
जाको हक इलमें, किए सबों को पाक।। ४६ ।।

मोमिनों को कभी दुनियांवी शक्ति का अहंकार, घमण्ड नहीं होगा। इनको श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान ने पाक-साफ कर दिया है।

ए जो मोमिन हकीकी, सो कहे अर्स दिल।
सो तो पाक हमेसगी, रूहें अर्स निरमल।। ४७ ।।

यह जो मोमिन हैं, इनका दिल हकीकी कहा है, क्योंकि श्री राजजी महाराज ने इन्हीं के दिल को अपना अर्श कहा है। यह परमधाम की आत्माएं हैं जो हमेशा ही पाक-साफ हैं।

सिपारे सत्ताईसमें, लिख्या नीके कर।
सो लीजो तुम मोमिनों, बीच अर्स दिल धर।। ४८ ।।

कुरान के सत्ताईसवें सिपारे में अच्छी तरह स्पष्ट लिखा है। इसलिए हे मोमिनो! तुम अर्श दिल में विचारकर दृढ़ कर लेना।

अर्समें सूरत मोमिनों, जो कही हैं असल।
तिन पाया बीच नासूत के, बका हाहूती फल।। ४९ ।।

परमधाम में मोमिनों के असली तन हैं। उनके अखण्ड सुखों का आनन्द मोमिनों को मृत्युलोक में मिला।

और गिरो फरिस्तन की, मुतकी परहेजगार।
ए भी आए लैलत कदर में, तीनों तकरार।। ५० ।।

एक और जमात ईश्वरीसृष्टि, दुनियां से परहेज कर खुदाई इलम पर चलने वाले हैं। यह भी हमारे साथ लैल तुल कदर में तीनों ब्रह्माण्डों में आई हैं।

आम खलक जो तीसरी, पैदा जो जुलमात।
सो अटके वजूद में, पकड़े पुल–सरात।। ५१ ।।

बाकी तीसरी सारी दुनियां है जो जीवसृष्टि है। वह सब निराकार से पैदा है। यह कर्मकाण्ड को पकड़कर अपने शरीरों की पूजा में ही अटके पड़े हैं।

रूहें दिल हकीकी, कहे अर्समें तन।
अर्स जिनों के दिल कहे, सोई रूहें मोमिन।। ५२ ।।

रूहों के दिल को हकीकी कहा है, क्योंकि इनके मूल तन (परआतम) परमधाम में हैं। जिनके दिल को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श कहा है, वह यही मोमिन हैं।

लिखी इनों की बुजरकी, मुसाफ माहें सिफत।
बीच महंमद की हदीसों, लिखी बड़ी इज्जत।। ५३ ।।

कुरान में इन मोमिनों की बड़ी महिमा गाई है। मुहम्मद साहब ने भी अपनी हदीसों में इनको बड़ा मान दिया है।

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, तुमें करी हिदायत हक।
और कहूं फिरके पैगंमरों, जो चलाए हुए बुजरक।।५४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने तुम्हें यह सब ज्ञान देकर समझाया है। अब आगे उन पैगम्बरों की हकीकत बताती हूं, जिन्होंने अपने-अपने फिरके चला रखे हैं और बड़े कहलाते हैं।

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ १३३ ॥

बाब फिरकों का

फिरके नारी तो कहे, ए जो बीच कुरान।
बहत्तर बांटे होए के, सबे हुए हैरान।। १ ।।

कुरान के बीच में नारी (दोजखी) फिरकों का बयान है, जो बहत्तर फिरकों में बंटकर परेशान हो रहे हैं।

सिपारे चौबीसमें मिने, लिखी सूरत अबलीस।
जल थल सबों में ए कह्या, याको पूजें कर जगदीस।। २ ।।

कुरान के चौबीसवें सिपारे में शैतान की सूरत का बयान है। वहां लिखा है कि जल, थल सबमें अबलीस समाया है। दुनियां इसको अपना परमात्मा मानती है।

कह्या दरिया जंगल से, नेहेरें चलें दज्जाल।
सो नेहेरें जंगल से क्यों चलें, ए फिरके चले इन हाल।। ३ ।।

कुरान में लिखा है कि जंगलों से नदियां बहेंगी। उसका अर्थ है कि शून्य हृदय जंगल (वीरान) की तरह है। उससे निराकार के उपासकों के नित्य नए-नए फिरके (धर्म) चलेंगे।

ए जो कहे बनी–आदम, सब पूजत डाली हवा।
कह्या निकाह अबलीस से, दुनियां जो दाभा।। ४ ।।

यह आदम की औलाद, जिसे आदमी कहा है, सब निराकार के ही पूजक हैं। इनका सम्बन्ध (शादी) दुनियां को माया की आग से जलाने वाले अबलीस से हुआ है।

कह्या गधा जो दज्जालका, ऊंचा लग आसमान।
एही हवा तारीकी सिर सबों, जासों पैदा ए जहान।। ५ ।।

कुरान में लिखा है कि वह शैतान अबलीस का बड़ा लम्बा-चौड़ा गधा होगा जो आसमान तक ऊंचा होगा। यही सारे ब्रह्माण्ड को पैदा करने वाला मोह तत्व है (वैराट का रूप है)।

तो दुनियां ताबे दज्जाल के, पातसाह सैतान दिलों पर।
दुनी सिफली अबलीस बिना, एक दम न सके भर।। ६ ।।

सारी दुनियां इसी शैतान अबलीस (नारद) के अधीन है। यह सबके दिलों पर बैठकर बादशाही कर रहा है। यह झूठी दुनियां शैतान अबलीस के बिना एक पल भी नहीं चल सकती है। दुनियां मन के अधीन है। मन वही शैतान है।

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, तुमें करी हिदायत हक।
और कहूं फिरके पैगंमरों, जो चलाए हुए बुजरक।।५४।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने तुम्हें यह सब ज्ञान देकर समझाया है। अब आगे उन पैगम्बरों की हकीकत बताती हूं, जिन्होंने अपने-अपने फिरके चला रखे हैं और बड़े कहलाते हैं।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। १३३ ।।

बाब फिरकों का

फिरके नारी तो कहे, ए जो बीच कुरान।
बहत्तर बांटे होए के, सबे हुए हैरान।।१।।

कुरान के बीच में नारी (दोजखी) फिरकों का बयान है, जो बहत्तर फिरकों में बंटकर परेशान हो रहे हैं।

सिपारे चौबीसमें मिने, लिखी सूरत अबलीस।
जल थल सबों में ए कह्या, याको पूजें कर जगदीस।।२।।

कुरान के चौबीसवें सिपारे में शैतान की सूरत का बयान है। वहां लिखा है कि जल, थल सबमें अबलीस समाया है। दुनियां इसको अपना परमात्मा मानती है।

कह्या दरिया जंगल से, नेहेरें चलें दज्जाल।
सो नेहेरें जंगल से क्यों चलें, ए फिरके चले इन हाल।।३।।

कुरान में लिखा है कि जंगलों से नदियां बहेंगी। उसका अर्थ है कि शून्य हृदय जंगल (वीरान) की तरह है। उससे निराकार के उपासकों के नित्य नए-नए फिरके (धर्म) चलेंगे।

ए जो कहे बनी–आदम, सब पूजत डाली हवा।
कह्या निकाह अबलीस से, दुनियां जो दाभा।।४।।

यह आदम की औलाद, जिसे आदमी कहा है, सब निराकार के ही पूजक हैं। इनका सम्बन्ध (शादी) दुनियां को माया की आग से जलाने वाले अबलीस से हुआ है।

कह्या गधा जो दज्जालका, ऊंचा लग आसमान।
एही हवा तारीकी सिर सबों, जासों पैदा ए जहान।।५।।

कुरान में लिखा है कि वह शैतान अबलीस का बड़ा लम्बा-चौड़ा गधा होगा जो आसमान तक ऊंचा होगा। यही सारे ब्रह्माण्ड को पैदा करने वाला मोह तत्व है (वैराट का रूप है)।

तो दुनियां तावे दज्जाल के, पातसाह सैतान दिलों पर।
दुनी सिफली अबलीस बिना, एक दम न सके भर।।६।।

सारी दुनियां इसी शैतान अबलीस (नारद) के अधीन है। यह सबके दिलों पर बैठकर बादशाही कर रहा है। यह झूठी दुनियां शैतान अबलीस के बिना एक पल भी नहीं चल सकती है। दुनियां मन के अधीन है। मन वही शैतान है।

Nijanand App

राह अंधेरी रात की, सब की चली सरीयत।
बैठा दिल पर दुस्मन, लेने न दे हकीकत।। ७ ।।

अज्ञान की अंधेरी रात में सबने अपने अलग-अलग कर्मकाण्डों से धर्म चला रखे हैं। शैतान अबलीस (अहंकार) सबके दिलों पर बैठा है जो सत्य के ज्ञान को नहीं लेने देता।

ए जो बीच दुनी के, जाहेर परस्त जेता।
तिन फिरकों सबों का, खुलासा एता।। ८ ।।

दुनियां के अन्दर जितने भी धर्म (सम्प्रदाय) जाहिरी को पूजने वाले हैं, उन सबकी हकीकत ऐसी ही है, अर्थात् वह सब सत्य मार्ग से दूर हैं।

जो हुए पैगंमर रात के, सुरिया न उलंघी किन।
जो जेते लग पोहोंचिया, सोई पैगाम दिए तिन।। ९ ।।

अज्ञान के अन्धकार में धर्मों के जो प्रवर्तक हुए हैं, उनमें से किसी ने भी सुरिया सितारा (ज्योति स्वरूप) के आगे का ज्ञान नहीं दिया। जो जहां तक पहुंचा उसने वहीं तक का ज्ञान दिया।

पैगंमर या और कोई, जो हुए रात में बुजरक।
किन नूर पार पोहोंच के, ले खबर न दई बका हक।। १० ।।

परमात्मा के ज्ञान का पैगाम देने वाले या अज्ञान के अन्धकार में बड़े कहलाने वाले किसी ने भी अक्षरधाम के पार पहुंचकर अखण्ड परमधाम या पारब्रह्म की पहचान नहीं दी।

तरफ न कही किन ने, तो पट खोले क्यों कर।
ए हुए जो बड़े रात के, तिन सबकी एह खबर।। ११ ।।

जब किसी ने पारब्रह्म की तरफ की राह ही नहीं बताई तो वह अज्ञानता के पर्दे कैसे खोलते? अज्ञान के अन्धेरे में जितने बड़े धर्माचार्य हुए हैं, उन सबकी यही हकीकत है।

मनसूख कही जो किताबें, रात में आईं जे।
इन उमतें सब रानी कही, जिनों मांगे माजजे रात के।। १२ ।।

अज्ञान के अन्धकार में ज्ञान की जो किताबें रात में उतरी थीं, उनको रद्द कर दिया। जो चमत्कार चाहते थे, उन सबके धर्मों को रद्द कर दिया।

एक करी किताबें मनसूख, वाही नाम की करी हक।
तिन उमतें सब रानी गई, अब कहो क्यों भागे सक।। १३ ।।

पुरानी किताबों (अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान) को रद्द किया और उन्हीं नामों को रास, प्रकास, कलस और सनंध की नई किताबें दीं। उन पुरानी किताबों के मानने वालों की जमातों को जो कर्मकाण्ड पर चलते थे, रद्द कर दिया। अब बताओ, उन रूढ़िवादी लोगों के संशय कैसे मिटेंगे?

करी अगली किताबें मनसूख, आखिर सोई पैंगंमर ल्याए।
नफा पाया तासों खलकों, आखिर चारों किताब पढ़ाए।। १४ ।।

पुरानी किताबों को रद्दकर उन्हीं पैगम्बरों के नाम से आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी नई किताबें लाए, जिससे सारे संसार को लाभ हुआ। उन्होंने सारे संसार को चारों किताबों का ज्ञान दिया।

Nijanand App

देखो मनसूख कही किन माएनों, क्यों मोहोर करी कही हक।
सो लिख्या कौल तौरेत में, जासों नफा लेसी खलक।। १५ ।।

अब उन किताबों का कैसे परिवर्तन किया और किस तरह से सच्चे ज्ञान वाली नई किताबें दीं, इसका ब्यौरा कलस किताब में है, जिसे पढ़कर सारी दुनियां लाभ लेगी।

अब कौन मनसूख को हक, ए दुनी सिफली क्यों समझाए।
एक हरफ बिना लदुन्नी, बिन वारस न बूझा जाए।। १६ ।।

अब कौन सी किताब को रद्दकर कौन सी सच्ची किताब दी है, इसको झूठी दुनियां वाले कैसे समझें? इन किताबों के वारिस मोमिन हैं। इनके बिना और जागृत बुद्धि के बिना एक शब्द भी समझ में नहीं आ सकता।

याही नाम की किताबें, याही नामें ल्याए पैगंमर।
ए जो कही बड़ाई इनों की, सो सब बीच आखिर।। १७ ।।

अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान किताबों को रास, प्रकास, कलस और सनंध के नाम से आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी लाए। इनकी ही सब जगह महिमा गाई है और आखिरत के वक्त के यही मालिक हैं।

जब पट खोल्या महंमदें, सो नूर बूंदें लई जिन।
तिन दिए पैगाम हक के, सबमें किया बका दिन।। १८ ।।

आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी ने परमधाम के दरवाजे खोल दिए हैं। उनकी तारतम वाणी की बूंदें जिन्होंने ली हैं, वह सभी ब्रह्मसृष्टियां श्री राजजी का पैगाम देने वाले पैगम्बर हैं। उन्हीं सबमें सूर्य के समान अखण्ड ज्ञान दिया है।

जाकी बड़ाई लिखी कुरान में, किताबों और पैगंमर।
जापर मोहोर महंमद की, सो सबों देसी फल फजर।। १९ ।।

पैगम्बर ने अन्य किताबों में तथा कुरान में जिनकी बड़ाई लिखी है, यह वही आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी महाराज को फजर के फल देने का अधिकार दिया गया था। सबको फजर के ज्ञान का सुख देंगे।

कई बड़े कहे पैगंमर, पर एक महंमद पर खतम।
कई फिरके हर पैगंमरों, गिरो सब कहे नाजी हम।। २० ।।

संसार में कई बड़े-बड़े पैगम्बर हो गए हैं, परन्तु उन सबकी शक्ति आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के सामने समाप्त हो जाती है। वैसे सभी पैगम्बरों के फिरके मर्द मोमिनों के नाजी फिरके का दावा लेते हैं।

सबों एक हादी हिदायत, सबों गिरो में नाजी एक।
ए कौन जाने बिना अर्स दिल, ए नबी नाजी दोऊ नेक।। २१ ।।

सभी पैगम्बरों के फिरकों में एक नाजी फिरका होगा, जिसे हादी की हिदायत होगी, ऐसा ग्रन्थों में लिखा है, परन्तु इस रहस्य को बिना मोमिनों के जिनके दिल को अर्श कहा है, कौन जान सकता है? आखिरी नबी हकी सूरत श्री प्राणनाथजी और मोमिनों का नाजी फिरका नेकचलन वाला होगा।

Nijanand App

नेक सुनो तुम मोमिनों, बीच लिख्या तफसीर।
सो देखो चौथे सिपारे, दिल पाक करो सरीर।। २२ ।।

हे मोमिनो! जो कुरान की तफसीर में लिखा है। वही कुरान के चौथे सिपारे में लिखा है। उसे समझकर अपने दिल के संशय मिटाकर पाक हो जाओ।

रसूलें कह्या जालूत को, तुम में पीछे मूसा के।
कहो फिरके केते हुए, मोहे देओ खबर ए।। २३ ।।

रसूल साहब ने जालूत से पूछा कि मूसा पैगम्बर के बाद कितने फिरके हुए हैं? मुझे इसकी खबर दो।

तब कह्या जालूत ने, देखों मैं किताब।
सो ए देख के कहोंगा, करो जिन सिताब।। २४ ।।

तब जालूत ने कहा कि मैं किताब को देखकर बताऊंगा, जल्दी मत करो।

तब कह्या रसूलें किताब, जले या चोरी जाए।
तब क्यों करो इमामत, देखो दिल सों ल्याए।। २५ ।।

तब रसूल साहब ने कहा कि किताब जल जाए या चोरी चली जाए तो समाज की नेतागिरी कैसे करोगे? यह अपने दिल से बताओ।

ईसा के पीछे फिरके, पूछा रसूलें जानिक को।
कहे फिरके पैंतालीस, जानिके रसूल सों।। २६ ।।

ईसा पैगम्बर के बाद कितने फिरके हुए, रसूल साहब ने जानिक से पूछा। जानिक ने रसूल साहब को उत्तर दिया कि पैंतालीस फिरके हुए।

तब फेर कह्या रसूल ने, ए सुध नहीं तुमें किन।
ए नीके मैं जानत, माएने किताब इन।। २७ ।।

फिर रसूल साहब ने कहा इसकी खबर तुम लोगों में से किसी को नहीं है। इनकी किताबों के अर्थ मैं अच्छी तरह से जानता हूं।

पीछे मूसा के इकहत्तर, तामें फिरका नाजी एक।
और सत्तर नारी कहे, ए समझो विवेक।। २८ ।।

मूसा पैगम्बर के पीछे इकहत्तर फिरके हुए, जिसमें एक नाजी फिरका हुआ। सत्तर दोजखी (नारी) कहे हैं। इस बात को विचार करके समझो।

बहत्तर ईसा के भए, नाजी एक तिन में।
और नारी फिरके इकहत्तर, कह्या रसूलें जानिक से।। २९ ।।

ईसा पैगम्बर के बहत्तर फिरके हुए। उनमें भी एक फिरका मर्द मोमिनों का है और इकहत्तर फिरके नारी अर्थात् दोजखी हैं। ऐसा रसूल साहब ने जानिक से कहा।

Nijanand App

यों तिहत्तर मेरे होवहीं, नारी बहत्तर नाजी एक।
ताको हिदायत हक की, जो हुआ नेकों में नेक।। ३० ।।

इसी तरह से तिहत्तर फिरके मेरे होंगे जिसमें बहत्तर नारी (दोजखी) होंगे और एक फिरका मर्द मोमिनों का होगा। उस एक फिरके को पारब्रह्म का ज्ञान प्राप्त होगा, जो सबसे अच्छा होगा।

मूसे ईसे रसूल के, सबों नारी कहे फिरके।
कह्या एक नाजी तिनों में, खासलखास अर्सका जे।। ३१ ।।

मूसा, ईसा और रसूल सभी ने अपने नारी (दोजखी) फिरके बतलाए। सभी ने अपने में एक नाजी फिरके का होना बताया। यह खासल-खास परमधाम का होगा।

गिनती फिरके केते कहूं, कई हुए बीच जहूदान।
कहे तावे दज्जाल के, जलसी जो कुफरान।। ३२ ।।

और भी कितने धर्म-सम्प्रदाय हैं, जो यहूदियों के अधीन हैं, जिन सभी को दोजख की अग्नि में जलना होगा।

यों एक नाजी अव्वल से, पाया वाही ने फल आखिरत।
वास्ते नूर नवीय के, देखाए करी कयामत।। ३३ ।।

इस तरह से शुरू से ही एक मर्द मोमिनों के फिरके का बयान है। इसको ही आखिर के वक्त का लाभ मिलने वाला है। इसको ही श्री प्राणनाथजी अपना (नबी का) ज्ञान दिखाकर ब्रह्माण्ड को कायम करेंगे।

लिख्या सिपारे अठारमें, कुरान माजजा नबी नबुवत।
एक दीन जब होएसी, तब होसी साबित।। ३४ ।।

कुरान के अठारहवें सिपारे में कुरान के भेद खुलने का और नबी रसूल ने जो कहा है, वह सत्य है इसका बयान लिखा है। यह बातें तब सत्य होंगी, जब सब दुनियां एक दीन निजानन्द सम्प्रदाय में आ जाएगी।

कहे रसूल कौल हकके, सबे करों एक दीन।
सो ए कौल तोड़्या दुनी, जिनों रह्या ना आकीन।। ३५ ।।

रसूल साहब ने कहा है कि खुदा ने वायदा किया कि मैं आखिर में आकर सबको एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में लाऊंगा। दुनियां में जिन्हें विश्वास नहीं रहा, उन्होंने इन वचनों को तोड़ दिया।

माएना ऊपर का पोहोंचे नहीं, बीच अर्स बका।
नजर बांध फना बीच, हुए जिदकर तफरका।। ३६ ।।

ऊपर के अर्थ लेने से अखण्ड परमधाम के ज्ञान तक नहीं पहुंचा जा सकता, इसलिए झूठे संसार के अन्दर लड़-झगड़कर अलग-अलग सम्प्रदाय बन गए, जो केवल दुनियां की ख्वाहिश रखते हैं।

हुई हिदायत हक की, एक नाजी को बातन।
खोल नजर रूह की, देखाए अर्स तन।। ३७ ।।

एक नाजी फिरके को ही श्री राजजी महाराज ने बातूनी ज्ञान दिया और आत्मदृष्टि खोलकर उन्हें परमधाम के मूल तन दिखाए।

Nijanand App

कौल किए रूहों सों, उतरते हक।
सो सिर लिए अपने, मजाजी खलक।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज ने खेल में उतरते समय जो रूहों से वायदे किए थे, उन्हें यह झूठी दुनियां के लोग अपना समझ बैठे हैं।

बुजरकी अर्स रूहों की, सिर अपने लेवें।
सिफत एक नाजीय की, सो बहत्तरों को देवें।। ३९ ।।

परमधाम की रूहों की महिमा को दुनियां वाले अपने सिर पर लेते हैं और एक नाजी फिरके की सिफत को सभी बहत्तर नारी फिरके लिए बैठे हैं, अर्थात् सब कहते हैं कि हमारा ही नाजी फिरका है।

जबराईल जित अटक्या, आगूं पोहोंच्या नाहें।
सो ए जाने दुनियां हम, पोहोंचे तिन ठौर माहें।। ४० ।।

जहां से जबराईल फरिश्ता आगे नहीं जा सका, अटक गया। यह दुनियां वाले जानते हैं कि हम उस अखण्ड घर को जाएंगे।

दुनियां जो तिलसम की, आगूं होने चाहे तिन।
जो ल्याया रूहल-अमीन, कलाम अल्ला रोसन।। ४१ ।।

यह जो झूठी दुनियां वाले हैं, वह उन मोमिनों जिनके वास्ते रसूल साहब पारब्रह्म की वाणी को लेकर आए हैं, के आगे होना चाहते हैं।

राह न देखे उपले माएनों, बीच अंधेरी रात।
सो ए रहे बीच नासूत के, घेरे पुल-सरात।। ४२ ।।

अज्ञान के अंधेरे में दुनियां वाले ऊपर का अर्थ लेते हैं, इसलिए इनको सीधा रास्ता दिखाई नहीं देता और मृत्युलोक के अन्दर कर्मकाण्ड के चक्कर में फंसते हैं।

ए देत देखाई दुनी फना, ए जो बीच नासूत।
ऊपर फना सब फरिस्ते, ए जो कह्या मलकूत।। ४३ ।।

इस संसार के चौदह लोक में जो कुछ दिखाई देता है, वह सारी दुनियां मिट जाने वाली है। इसके ऊपर सभी देवी-देवता, बैकुण्ठ तक मिट जाने वाले हैं।

ए खाली जो तिन ऊपर, ला हवा जो सुंन।
ए जुलमत तिन बीचमें, चौदे तबक पलन।। ४४ ।।

बैकुण्ठ के ऊपर जो निराकार शून्य मण्डल है, उसको ही जुलमत कहते हैं, जिसमें चौदह तबक का ब्रह्माण्ड एक झूले की तरह झूलता है।

ए लिख्या दूसरे सिपारे, आयत कुरान के माहें।
सक सुभे होवे जिन को, सो देखे जाए तांहें।। ४५ ।।

यह कुरान के दूसरे सिपारे सयकूल में लिखा है, जिसको संशय हो उसे खोलकर देख ले।

Nijanand App

ए छल महंमद गिरो को, हकें देखाया।
सो ए खेल कुंन हुकमें, याही वास्ते बनाया।। ४६ ।।

मुहम्मद की जमात (मोमिनों) को श्री राजजी महाराज ने यह झूठा खेल दिखाया, इसलिए अपने हुकम से कुंन शब्द कहकर खेल बनाया।

ए छल फरेब तो कह्या, राह न सूझे रात।
ए गुम हुए ढूंढें फना बीच, आड़ी हुई जुलमात।। ४७ ।।

इसे छल का खेल इसलिए कहा है कि अज्ञान के अंधेरे में रास्ता दिखाई नहीं देता। इस मिटने वाले संसार में सभी लोग गुम हो गए हैं और ढूंढ़ते फिरते हैं। उनके आगे निराकार का परदा पड़ा है, इसलिए अखण्ड घर का रास्ता नहीं सूझता।

ढूंढ्या चौदे तबकों, पर पाई न किन तरफ।
बका का बीच दुनियां, कोई बोल्या न एक हरफ।। ४८ ।।

चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में ढूंढ़ा, पर घर की तरफ बताने वाला कोई न मिला। अखण्ड घर की दुनियां के अन्दर किसी ने एक हरफ भी नहीं बताया।

और सुरिया जो सितारा, कह्या उलंघा न किन।
सो देखो सिपारे सोलमें, काहूं छोड़ी न सरे सुंन।। ४९ ।।

जो सुरिया सितारा, अर्थात् ज्योति स्वरूप है, इसके आगे तो कोई जा ही नहीं सका। यह बात कुरान के सोलहवें सिपारे में लिखी है कि कोई शून्य मण्डल को नहीं छोड़ सका।

मेयराज हुआ महंमद पर, कई किए जाहेर बयान।
और रखे छिपे हुकमें, वास्ते हादी गिरो पेहेचान।। ५० ।।

मुहम्मद साहब को दर्शन हुआ और उन्होंने कई बातें जाहिरी बताईं। श्री श्यामाजी और रूहों की पहचान के वास्ते हुकम से बहुत सी बातें छिपाकर रखीं।

तेहेतसरा से हवा लग, एक फरिस्ता खड़ा इन कद।
ए बड़का सबन का, तो पोहोंच्या हवा सिर हद।। ५१ ।।

पाताल से निराकार तक एक बड़ा लम्बा-चौड़ा फरिश्ता, अर्थात् विराट स्वरूप (आदि नारायण) खड़ा है, जिसका सिर निराकार तक लगा है। यही सबका बड़ा नारायण है।

इन फरिस्ते के कई सिर, तिन सिर सिर कई मोंहों।
मोंह मोंह कई जुबान, ए देखो इसारत फरिस्तों।। ५२ ।।

इस फरिश्ते के कई सिर हैं और हर सिर में कई मुख। हर मुख में कई जबानें हैं। इस तरह से देवी-देवताओं की हकीकत इशारतों में लिखी हैं। सब देवी-देवता ज्योति स्वरूप के मुख हैं और सब धर्म ग्रन्थ उसकी जबान हैं।

एक इनसे बड़े कहे, ऐसे जाएं जाकी नाकमें।
तो भी उने सुध ना पड़े, अंदर फिरके मोंह निकसें।। ५३ ।।

इस फरिश्ते से भी बड़े एक और फरिश्ते का बयान कहा है, जिसकी नाक में से ऐसे कई बड़े फरिश्ते हैं, जो उसकी नाक से अन्दर घुस जाते हैं और अन्दर घूमकर बाहर निकल आते हैं, फिर भी उसे कुछ सुध नहीं होती (यह आदि नारायण का विराट स्वरूप है जो अर्जुन को दिखाया था)।

Nijanand App

ए मसनंद मलकूत की, फरिस्ता एक पातसाह।
कोई बुजरक पोहोंचे इनलों, और पांउं कटे पुल सरात राह।।५४ ।।

यह बड़ा फरिश्ता ही बैकुण्ठ की बादशाही कर रहा है। कोई ज्ञानी (सयाने लोग) ही बैकुण्ठ तक पहुंच पाते हैं और बाकी कर्मकाण्ड की धार में कट जाते हैं।

जो आवत अरवा नासूतमें, पकड़े वजूद नाबूद।
सो ले सरीयत चढ़ ना सके, छूटे ना फना वजूद।।५५ ।।

जो रूह मृत्युलोक में आकर झूठे तन धारण करती है, वह शरीयत (कर्मकाण्ड) को लेकर शरीर को छोड़कर आगे नहीं जा सकती।

ले तरीकत पोहोंचे मलकूत, सो किन लई न जाए।
करे बोहोत दौड़ आप वास्ते, ले निजस न ऊंचा चढ़ाए।।५६ ।।

कोई तरीकत का ज्ञान लेकर बैकुण्ठ तक पहुंचते हैं। वह भी रास्ता किसी से नहीं लिया जाता। वह अपने वास्ते दौड़ तो बहुत करते हैं, परन्तु इस झूठे तन के सुख के लिए ऊंचे नहीं चढ़ पाते हैं।

ए बीच फना के सब कहे, हवा समेत पलना।
ए दिन रात आजूज माजूज, खाए सब करसी फना।।५७ ।।

यह सब संसार में निराकार और ब्रह्माण्ड सहित नाशवान कहे गए हैं। इनको आजूज-माजूज (रात-दिन) आयु समाप्त कर खा जाएंगे और नष्ट कर देंगे।

मारफत सागर क्यों कहूं, करी सरे में पुकार।
इन हक ठौर के नाम धर, पूज फिरके हुए बेसुमार।।५८ ।।

शरीयत के अन्दर शोर मचाकर मारफत की बातें कैसे बताएं? इन दुनियां वालों ने परमात्मा के नाम से बेशुमार सम्प्रदाय खोल रखे हैं।

कोई कहे विष्णु नारायन, कोई अरहंत बतावे।
कोई देवी देव पत्थर, पानी आग पुजावे।।५९ ।।

कोई इस परमात्मा को आदि नारायण, कोई विष्णु, कोई अरहंत बताते हैं। कोई देवी-देवता, आग, पानी, पत्थर की पूजा करवाते हैं।

कोई कहे बेचून है, और बेचगून।
भी कहे बेसवी है, और बेनिमून।।६० ।।

कोई बेचून, बेचगून, बेसबी और बेनिमून कहता है।

कोई कहे निराकार है, और निरंजन।
कोई कहे अहं बका, सब में ब्रह्म निरगुन।।६१ ।।

कोई निराकार, कोई निरंजन, कोई ब्रह्म को निर्गुण तथा सबमें व्यापक तथा कोई अपने को अखण्ड ब्रह्म (अहं ब्रह्माऽस्मि) बताते हैं।

Nijanand App

ए जो पैदा मोह तत्व, कही तारीकी जुलमात।
कौल दूजा हवा ला मकान, जहां से पैदा रात।। ६२ ।।

यह जो मोह तत्व पैदा हुआ है, इसी को जुलमत, तारीकी, लामकान और दूसरे वचनों में हवा कहते हैं। यहां से सारे संसार (माया) की उत्पत्ति होती है।

ए जो उरझी दुनी रात की, न पावे तौहीद राह।
तो लिख्या सिपारे उनईसमें, बनी–आदम पूजे सब हवाए।। ६३ ।।

यह अज्ञान की दुनियां ऐसी उलझी हुई है कि यह पारब्रह्म का रास्ता नहीं पाती। कुरान के उन्नीसवें सिपारे में लिखा है कि आदम की औलाद हवा (निराकार) को पूजेगी।

दिया हवा का कुलफ, ईमान के द्वारे पर।
ए खोलेगा सोई सिरदार, याको पीठ देवे पैगंमर।। ६४ ।।

दुनियां वालों के ईमान के ऊपर निराकार का ताला पड़ा होगा। जो इसे खोलेगा वही सिरदार (प्रधान) कहलाएगा। जो इस निराकार को पीठ देकर आगे जाए, वही सच्चा पैगम्बर है।

चारों चीज पूजी रात की, पानी खाक पत्थर अगिन।
आकास पूज्या कैयों नाम धर, निराकार हवा ला सुंन।। ६५ ।।

माया के अन्दर की चार चीजों (मिट्टी, पानी, पत्थर, आग) की सभी पूजा करते हैं। कई लोग आकाश की, निराकर, हवा, ला और शून्य नाम से पूजा करते हैं।

ए हवा सुन्य जुलमत कही, एही हिजाब रात अंधेर।
ऊपर तले बीच दुनियां, फिरवली गिरदवाए फेर।। ६६ ।।

जिसको निराकार, सुन्य, जुलमत कहा है, वही परदे का रूप है, जिसके अंधेरे में लोग भटकते हैं। इस निराकार ने दुनियां को चारों तरफ से घेर रखा है।

ए सबे बीच अंधेरी, किन तरफ न पाई हक।
काहूं न पाया अर्स बका, कई हुए रात बीच बुजरक।। ६७ ।।

यह सब अंधेरे में है। किसी को पारब्रह्म की सुध नहीं है। किसी को अखण्ड घर का पता नहीं लगा, जबकि इस अंधेरे में बड़े-बड़े सयाने लोग हो गए।

तिन पर नूर अछर, जो कायम जबरूत।
तापर अर्स अजीम, जो कह्या बका हाहूत।। ६८ ।।

निराकार के ऊपर अक्षरधाम है जो जबरूत कहलाता है। उसके ऊपर परमधाम है, जिसको अखण्ड मूल-मिलावा कहते हैं।

ए जो ठौर दोऊ कायम, कहे अर्स हक।
सो ल्यावे फना बीच वजूद, ए जो फानी खलक।। ६९ ।।

यह अक्षरधाम और परमधाम अखण्ड कहे गए हैं। यह श्री राजजी महाराज के अर्श कहे गए हैं। यह झूठी दुनियां वाले अखण्ड घर परमधाम और अक्षरधाम को तन के अन्दर ही मान बैठे हैं।

Nijanand App

फरिस्ता जबराईल, पैगंमरों सिरदार।
सो माहें पैठ ना सक्या, अर्स अजीम द्वार।।७०।।

फरिश्तों में सिरदार (प्रधान) जबराईल फरिश्ता है। वह भी परमधाम के दरवाजे के अन्दर नहीं जा सका।

ना तो महंमद की हिमायतें, आगूं चल्या एक कदम।
तिन राह पांच सै साल की, काटी माहें दम।।७१।।

वरना मुहम्मद साहब की मदद से अक्षरधाम को छोड़कर एक कदम आगे गया और पांच सौ साल का रास्ता एक क्षण में पूरा कर दिया।

आगूं चलते तिन यों कह्या, जल जाए मेरे पर।
सो ए बीच जाए न सक्या, ए जो अर्स अकबर।।७२।।

आगे चलने पर जबराईल फरिश्ता कहता है कि आगे जाने पर मेरे पर जल जाएंगे, इसलिए महान् परमधाम के अन्दर वह नहीं जा सका।

ए साहेदी लिखी जाहेर, मेयराज नामें माहें।
सरहद जबरूत की, फरिस्ते छोड़ी नाहें।।७३।।

मेयराजनामे में स्पष्ट लिखा है कि जबराईल फरिश्ता अक्षरधाम की सरहद छोड़ नहीं सका।

गुनाह पोंहोच्या तिन अर्समें, इन दरगाह रूहन।
दिल हकीकी ए कहे, अर्स कलूब मोमिन।।७४।।

ऐसे परमधाम में रूहों के ऊपर खेल मांगने का गुनाह लगा। उन मोमिनों के दिलों को ही हकीकी कहा है और श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है।

खासों में खासे कहे, रबानी उमत।
खिलवत हक हादी रूहें, अर्स हक वाहेदत।।७५।।

यह मोमिन ही श्री राजजी महाराज की जमात और उनके खासलखास बन्दे कहलाते हैं। परमधाम के मूल-मिलावा में श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें सब एकतन (वाहेदत) कहलाते हैं।

कह्या हदीसों आयतों, द्वार न खोल्या किन।
अव्वल बीच या आखिर, खुले ना रसूल बिन।।७६।।

आयतों और हदीसों में कहा है कि परमधाम के दरवाजे आज तक किसी ने नहीं खोले। अव्वल, बीच और आखिर तक रसूल साहब के बिना इसके दरवाजे कोई खोल नहीं सकता।

जंजीर द्वार भिस्तकी, अव्वल खोले महंमद।
दिल साफ करो ए देख के, ले हदीस साहेद।।७७।।

सबसे पहले रसूल साहब ने ही आकर अखण्ड परमधाम की पहचान बताई। यह हदीसों में लिखा है, जिसे देखकर अपने दिल के संशय मिटा लो।

Nijanand App

जेता कोई पैगंमर, रसूल नबी औलिए।
गोस कुतब वली अंबिए, नबी नसीहत सिर सब के।। ७८ ।।

जितने भी पैगम्बर, रसूल, नबी, अंबिए, औलिए, गौस, कुतुब हुए हैं, उन सबके ऊपर रसूल साहब का ज्ञान है।

कई बड़े कहावे पीर फकीर, कई आरिफ उलमा।
यार असहाब कई खलीफे, हादी महंमद है सब का।। ७९ ।।

संसार में कई बड़े-बड़े पीर, फकीर, आरिफ, उलमा, यार, असहाब, खलीफा कहलाए हैं, परन्तु उन सबको हिदायत रसूल साहब की है (हादी की है)।

रसूलें बुजरकी अपनी, दई कई जहूदों को।
पर ओ छोड़ बड़ाई अपनी, आए नहीं कदमों।। ८० ।।

रसूल साहब ने अपनी बुजरकी का ज्ञान कई यहूदियों को भी दिया, पर वह अपनी मान-प्रतिष्ठा छोड़कर रसूल साहब के चरणों में नहीं आए।

कई कहावें खावंद कलमें, कई साहेब सहीफे किताब।
होए न काम महंमद बिना, जिन सिर आखिरी खिताब।। ८१ ।।

कई अपने को ज्ञान का मालिक बताते हैं। कई अपने को धर्मग्रन्थों के मालिक बताते हैं, परन्तु यह काम आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के बिना कोई कर नहीं सकता।

जहूद नसारे पैगंमर, कई केहेलाए रात के माहें।
दिन ऊगे महंमद बुर्राक के, आगूं दौड़े सब जाएं।। ८२ ।।

यहूदियों के मूसा, ईसाइयों के ईसा अज्ञान के अन्धकार में पैगम्बर कहलाए। आखिर में ज्ञान के सूर्य श्री प्राणनाथजी के आने पर सब दौड़-दौड़कर उनकी शरण में आए।

देखो नामे मेयराज में, किताब सिकंदर।
अस्वार महंमद की जलेबमें, चलें प्यादे पैगंमर।। ८३ ।।

मेयराजनामा की किताब में देखो। यह बड़ी महान् है। उसमें लिखा है कि आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की सवारी के आगे कुल पैगम्बर पैदल चलेंगे।

बैठावें आठों भिस्तमें, छोटा बड़ा जो कोए।
जो जैसा तैसी तिनों, महंमद पोहोंचावें सोए।। ८४ ।।

यह आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी महाराज छोटे-बड़े सभी जीवों को आठ बहिश्तों में अखण्ड करेंगे।

या दोऊ गिरो दोऊ अर्सों की, जो बका ठौर हैं दोए।
फरिस्ते रूहें उतरीं लैलमें, सो भी सूरत हकी से होए।। ८५ ।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि दो जमातें दो अखण्ड घरों से खेल में उतरी हैं। उन्हें भी हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी महाराज अपने-अपने घरों पहुचाएंगे।

Nijanand App

एही फजर दिन मारफत, सब आवें माहें दीन।
तबहीं मुआ दज्जाल, आया सबों आकीन।। ८६ ।।

इसी को ही मारफत के ज्ञान का सवेरा कहा है। जब सब दुनियां एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में आ जाएगी, तभी सबका शैतान (मन) मर जाएगा और सबको यकीन आया समझना।

एक कुरान का माजजा, और नबीकी नबुवत।
अव्वल फुरमाया सब हुआ, तब होए साबित।। ८७ ।।

तभी कुरान की बातें सत्य हैं तथा रसूल साहब की पैगम्बरी सत्य है। जैसा पहले कहा है, वैसा सत्य सिद्ध होगा।

आयतें हदीसें सब कहे, खुदा एक महंमद बरहक।
और न कोई आगे पीछे, बिना महंमद बुजरक।। ८८ ।।

कुरान की आयतें और हदीसें सभी कहती हैं कि पारब्रह्म सारे जगत का मालिक एक है। मुहम्मद ने जो कहा वह सत्य है। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के बिना आगे-पीछे और कोई नहीं है।

ए जो कहे लाखों हो गए, रात में पैगंमर।
पैगाम ल्यावे कोई हक का, तो क्यों न करे फजर।। ८९ ।।

कुरान में लिखा है कि रात में लाखों पैगम्बर हो गए। श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि जब खुदा का ज्ञान देने वाले इतने हो गए तो ज्ञान का सवेरा क्यों नहीं हुआ?

कहे लाखों पैगंमर हो गए, कई और लिखे बुजरक।
किन बका पट न खोलिया, दिए किनने किसे पैगाम हक।। ९० ।।

जब यह कहते हैं कि लाखों पैगम्बर हो गए और कई बुजरक हो गए, परन्तु किसी ने अखण्ड परमधाम का दरवाजा नहीं खोला, तो अब बताओ कि पारब्रह्म का पैगाम किसने किसको दिया?

बका तरफ न पाई काहूने, तो द्वार खोले क्यों कर।
क्यों बका बिन बड़े कहे रातमें, क्यों किन तरफ न कही पैगंमर।। ९१ ।।

किसी को अखण्ड घर की खबर ही नहीं मिली, तो दरवाजा कैसे खोलते? अंधेरे में बिना अखण्ड घर के ज्ञान के अपने आप को बड़ा कैसे कहलवाते हैं, जब किसी पैगम्बर ने पारब्रह्म के ठिकाने को बताया ही नहीं।

मेयराज एक महंमद पर, दूजे हुआ न किन ऊपर।
मेयराज हुए बिना पैगंमरों, पैगाम दिए क्यों कर।। ९२ ।।

पारब्रह्म का मेयराज (दर्शन) एक रसूल साहब को ही हुआ। दूसरे किसी पैगम्बर को हुआ ही नहीं। यदि दर्शन ही नहीं हुआ, तो फिर बिना दर्शन के पैगाम कैसे दे सकते हैं?

अजूं खड़ियां इनों की उमतें, पूजें पानी आग पत्थर।
सो तो कही सब रानियां, मांगे माजजे किया कुफर।। ९३ ।।

आज भी दुनियां में इनकी जमातें पानी, पत्थर, आग को पूजती हैं, इसलिए इन सबको रद्द कर दिया गया है, क्योंकि यह झूठे संसार की ही मांग करते थे।

Nijanand App

लिख्या सिपारे दूसरे, बखत नूह पैदास।
तब कही सब कुफरान, इसलाम न गिरो कोई खास।। ९४ ।।

कुरान के दूसरे सिपारे में लिखा है कि नूह पैगम्बर के समय में सभी काफिर थे। ब्रह्मसृष्टि या मोमिन कोई नहीं था।

कह्या एक गिरो थी मोमिन, ले आदम लग तोफान।
आगूं अमल इबराहीम के, हुती सबें कुफरान।। ९५ ।।

यह भी लिखा है कि मोमिनों की एक जमात थी जो सृष्टि के आदि से नूह-तूफान के महाप्रलय तक के समय केवल एक जमात मोमिनों की आई, जो बृज में रही। फिर उसके बाद श्री देवचन्द्रजी के आने तक सब झूठे संसार के लोग थे।

मोमिन गिरो एक नूह के, जिनों बीच था स्याम।
सो पार हुई किस्ती चढ़, जो चालीस जुफ्त तमाम।। ९६ ।।

नूह पैगम्बर के घर मोमिनों की जमात में एक श्री कृष्ण थे, जिनके सहारे से चालीस जुत्थ बारह हजार सखियां योगमाया की किश्ती से पार हो गईं।

कहे एही चालीस तूबे पर, जो दरखत जिमी बीच स्याम।
यामें न होए कोई कम, जाकी सिफत लिखी अल्ला कलाम।। ९७ ।।

यही चालीस जुत्थ योगमाया की नाव में बैठकर नित्य वृंदावन में वृक्ष के नीचे पहुंचे। इनकी ,ही सिफत कुरान में गाई गई है। इनकी गिनती किसी प्रकार से कम नहीं हो सकती।

आदम नूह तोफान लग, एक गिरोह थी नूह अमल।
सो पार हुई किस्ती चढ़, और काफर डूबे सब जल।। ९८ ।।

शुरू से लेकर नूह-तूफान के समय तक एक ही जमात मोमिनों की थी, जो योगमाया की किश्ती पर बैठकर पार हो गई और बाकी जहान का प्रलय हो गया।

सो भी गिरो कही महंमद की, लिखी हदीसों महंमद।
आखिर कह्या नूह गिरो की, महंमद देसी साहेद।। ९९ ।।

यही जमात आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की है। ऐसा रसूल साहब ने अपनी हदीस में लिखा है। उन्होंने यह भी कहा है कि आखिर में नूह पैगम्बर की इस जमात की साक्षी आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी देंगे।

इबराहीम के अमल में, ना इसलाम गिरो दीन।
कही एक लड़की निमरूद की, कहू ल्याई थी आकीन।। १०० ।।

इब्राहीम पैगम्बर जब हुए हैं तब कोई इस्लाम धर्म नहीं था और न ब्रह्मसृष्टियों की जमात ही उतरी थी। इब्राहीम पैगम्बर पर एक निमरूद बादशाह की लड़की ईमान लाई थी।

लिख्या फलाने सिपारे, इबराहीम के अमलमें।
और मुसलमान कोई ना हुता, तो लई वारसी जहूदोंने।। १०१ ।।

कुरान के एक सिपारे में लिखा है कि इब्राहीम के समय में कोई मुसलमान नहीं था, इसलिए उनके वारिस यहूदी हुए।

Nijanand App

मगज देखो मुसाफ का, सबों महंमद हिदायत।
आसमान जिमी या जो कछू, और न काहू नसीहत।। १०२ ।।

कुरान के इस रहस्य को देखो कि मुहम्मद साहब ने सबको हिदायत दी है, खुदा के घर का रास्ता बताया। आसमान और जमीन के बीच जो कुछ भी है ऐसा ज्ञान और कहीं नहीं है।

ए तीनों सूरत महंमद की, करें सब पर हिदायत।
तो लिख भेज्या हक ने, क्यों हलाक होए उमत।। १०३ ।।

मुहम्मद साहब की तीन सूरतें बसरी, मलकी और हकी सभी को ज्ञान देंगी, इसलिए श्री राजजी महाराज ने लिखकर भेज दिया कि मेरी जमात परेशान क्यों होती है?

जो बीच जिमी आसमान के, महंमद हिदायत सब पर।
भाई महंमद अर्स खिलवत, नसीहत और न इन बिगर।। १०४ ।।

आसमान और जमीन के बीच जो भी लोग रहते हैं, उन सबको इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी का ज्ञान मिलेगा। मुहम्मद साहब के भाई मोमिन हैं, अर्श की खिल्वत और मूल-मिलावा की बातों की पहचान श्री प्राणनाथजी के बिना और कौन दे सकेगा?

करी अगली किताबें मनसूख, कहे जमाने रद।
ना नूह तोफान पीछे मोमिन, जो लों आए महंमद।। १०५ ।।

इसलिए पहले आई किताबें अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान के ज्ञान को रद्द किया और उनकी शरीयत को रद्द किया। रास लीला के बाद में जब तक श्री श्यामाजी महारानी (मलकी मुहम्मद) और श्री प्राणनाथजी (हकी मुहम्मद) नहीं आए, कोई भी मोमिन नहीं थे।

कह्या तब ल्याए कई ईमान, कई रहे ईमान बिगर।
केतेक पीछे ल्याए थे, ईमान इस्माईल पर।। १०६ ।।

श्री प्राणनाथजी (इमाम मेंहेंदी) जब आए, उस समय कई लोग ईमान लाए और कई ईमान के बिना रह गए। इसके बाद कई लोग बिहारीजी (इस्माईल पैगम्बर) पर ईमान लाए।

सो ईमान तोलों चल्या, एहिया आया बखत जिन।
तब मजाजी दुनी का, ईमान न रह्या किन।। १०७ ।।

यह ईमान सुन्दरसाथ के बीच में सूरत तक चला, जब तक श्री इन्द्रावतीजी को एहिया का खिताब मिल गया। फिर झूठी दुनियां का ईमान किसी का भी कायम नहीं रहा।

सो एहिया ईसे पर, पेहेले ल्याया ईमान।
कायम किया तिन दीन को, ए देखो दिल से बयान।। १०८ ।।

यही एहिया पैगम्बर श्री मेहराज ठाकुर ईसा रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) पर ईमान लाए और उन्होंने ही निजानन्द सम्प्रदाय की स्थापना की। इसको दिल से विचारकर देखो।

दुनी कहे पैगंमर हो गए, लिखी सिफतें इनों आखिर।
ए बका बातून क्यों बूझहीं, जो फंदे बीच माएनों ऊपर।। १०९ ।।

दुनियां कहती है कि यह पैगम्बर पहले हो गए हैं। इनकी सिफतें आखिर में होनी हैं। यह अखण्ड की बातूनी बातों को दुनियां वाले कैसे समझें? क्योंकि यह वह जाहिर मायनों के ऊपर ही ऊपर फंसे हैं, जबकि यह सब भविष्यवाणी प्राणनाथजी के लिए है।

Nijanand App

जेता माएना मुसाफ का, किया नजूम और बातन।
सो पढ़े कहें किस्से हो गए, डालें बीच नाबूद दिन।। ११० ।।

कुरान के जितनी भी भविष्यवाणी या बातूनी मायने हैं, पढ़े-लिखे लोग किस्सा समझकर उसे गुजरे जमाने पर घटा देते हैं।

किस्से आखिरी कलाम अल्लाह के, जिन खोलें होसी हैयात।
सो पढ़े कहें होए गए, जित दुनी रानी बीच जुलमात।। १११ ।।

कुरान के यह किस्से आखिरत के वक्त के लिए हैं, जिनके खुलने से दुनियां को अखण्ड मुक्ति मिलेगी। यह पढ़े-लिखे लोग कहते हैं कि यह किस्से हो गए हैं, इसलिए दुनियां के इन लोगों को निराकार के नर्कों में धकेल दिया।

जो कहे किस्से हो गए, कहे दाग देऊं तिन नाक।
लिख्या सिपारे उनतीस में, राह गुम हुआ नापाक।। ११२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो यह कहते हैं कि यह किस्से हो गए हैं, उनकी नाक को दाग दूं, जला दूं (अग्नि की गर्म सलाखों से)। यह कुरान के उन्तीसवें सिपारे में लिखा है। ऐसे नाकाम लोग रास्ता न मिलने से भटक गए हैं।

लिख्या नूर नामें मिने, रूह मुरग किया गुसल।
पर झारे बूंदें गिरीं, सो खड़े हुए पैगंमर मिल।। ११३ ।।

नूरनामा में लिखा है कि श्री श्यामा महारानी की आत्मा ने मोह सागर में गुसल किया (तन धारण किया)। और अपने पर (पंख) झटके। उनके परों से बूंदें गिरीं। यही बूंदें पैगम्बर बन गए, अर्थात् श्री श्यामाजी महारानी सबको लेकर खेल में उतरीं और उनको मनुष्य के तन मिले।

सो मुरग रूह महंमद की, तहां से बरसी बूंदें नूर।
सो नूर से हुए पैगंमर, इनों दे पैगाम किया जहूर।। ११४ ।।

श्री श्यामाजी महारानी की रूह को ही अर्श-ए-अजीम का मुर्ग कहा है, जहां से नूर की बूंदें, अर्थात् जिससे अखण्ड परमधाम के मोमिन आए और सारे संसार को अखण्ड ज्ञान देने लगे, तो पैगम्बर बन गए।

लाख ऊपर चौबीस हजार, कहे उठे बूंदों के।
पैगाम दिए इनों आखिर, जो बका पट महंमदें खोले।। ११५ ।।

लिखा है कि इन बूंदों के एक लाख चौबीस हजार पैगम्बर बने, जिनके वास्ते अखण्ड परमधाम के पट श्री प्राणनाथजी ने खोले। अब यही मोमिन संसार को परमधाम का ज्ञान देते हैं।

जो हो गए एते पैगंमर, तो क्यों रही अबलो रात।
तो तबहीं बका दिन कर, उड़ाए देते जुलमात।। ११६ ।।

यदि इतने पैगम्बर पहले हो गए होते तो अज्ञान और अंधेरा न रहता। तो उसी समय ज्ञान का उजाला हो जाता और निराकार का परदा हट जाता।

Nijanand App

एही गिरो पैगंमरों आखिरी, कही जो खासल खास।
जाकी सिफत हदीसों आयतों, पेड़ नूर बिलंद से पैदास।। ११७ ।।

इसी मोमिन की जमात को खासलखास आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की जमात कहा है। इनकी सिफत आयतों और हदीसों में जगह-जगह लिखी है। यह श्री राजजी महाराज के ही अंग हैं, जो परमधाम में रहते हैं।

नूर–अनामिन अल्ला तो कह्या, कुल-सैयन-मिन्नूरी।
करे इन का दावा दिल मजाजी, देखो अकल इनों सहूरी।। ११८ ।।

इन्हीं को श्री श्यामाजी महारानी ने अपने नूर के अंग बताया है और अपने को खुदा के नूर का अंग बताया है। इन मोमिनों का दावा झूठी अक्ल वाले लिए बैठे हैं। जरा इनकी अक्ल पर विचार करो।

महंमद नूर हक का, यों गिरो महंमद का नूर।
जिन किया दावा इन का, सो रहे दूर से दूर।। ११९ ।।

श्री श्यामाजी महारानी श्री राजजी महाराज के नूरी अंग हैं और ब्रह्मसृष्टियां श्री श्यामाजी के नूरी अंग हैं। झूठी दुनियां वालें ने जो इनका दावा ले रखा है, वह सच्चाई से सदा बहुत दूर रहते हैं।

ताथें जो कछू कह्या मुसाफमें, सो सब आखिरी सिफत।
सो क्यों बूझे दिल मजाजी, जिनों पाई न हक मारफत।। १२० ।।

इसलिए जो कुछ कुरान में कहा था, वह सब सारी महिमा आखिर में आने वाले मोमिनों के लिए है। जिनके दिल झूठे हैं और जिनको मारफत का ज्ञान नहीं मिला, वह इस बात को कैसे समझें?

जो लों ले ऊपर का माएना, तो लों छोड़ ना सके फना।
हक हादी पाए बिना, दुनी उड़ जात ज्यों सुपना।। १२१ ।।

जब तक कुरान के ऊपरी अर्थ को लेंगे, तब तक वह मिटने वाले संसार को नहीं छोड़ सकते। श्री राजजी और श्री श्यामाजी की पहचान के बिना दुनियां सपने की तरह नष्ट हो जाती है।

महामत कहे मोमिनों पर, बरसत बदली नूर।
हक बका अर्स अजीम में, पट खोल लिए हजूर।। १२२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनों के ऊपर श्री राजजी महाराज की मेहर की बरसात होती है। उन्होंने मामिनों के लिए परमधाम के दरवाजे खोल रखे हैं।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। २५५ ।।

बाब तीनों गिरोके फैल हाल मकान

जो लों पट न खोल्या बका का, तो लों फना दुनी बीच रात।
मारफत दिल महंमद, करे दिन देखाए हक जात।। १ ।।

इमाम मेहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने जब तक अखण्ड परमधाम के दरवाजे नहीं खोले, तब तक मिटने वाले दुनियां के लोग अन्धकार में ही भटकते रहे। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी ने मारफत के ज्ञान से अज्ञान को मिटाकर ज्ञान का उजाला कर दिया और मोमिनों के वास्ते परमधाम के दरवाजे खोल दिए।

Nijanand App

एही गिरो पैगंमरों आखिरी, कही जो खासल खास।
जाकी सिफत हदीसों आयतों, पेड़ नूर बिलंद से पैदास।। ११७ ।।

इसी मोमिन की जमात को खासलखास आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की जमात कहा है। इनकी सिफत आयतों और हदीसों में जगह-जगह लिखी है। यह श्री राजजी महाराज के ही अंग हैं, जो परमधाम में रहते हैं।

नूर–अनामिन अल्ला तो कह्या, कुल-सैयन-मिन्नूरी।
करे इन का दावा दिल मजाजी, देखो अकल इनों सहूरी।। ११८ ।।

इन्हीं को श्री श्यामाजी महारानी ने अपने नूर के अंग बताया है और अपने को खुदा के नूर का अंग बताया है। इन मोमिनों का दावा झूठी अक्ल वाले लिए बैठे हैं। जरा इनकी अक्ल पर विचार करो।

महंमद नूर हक का, यों गिरो महंमद का नूर।
जिन किया दावा इन का, सो रहे दूर से दूर।। ११९ ।।

श्री श्यामाजी महारानी श्री राजजी महाराज के नूरी अंग हैं और ब्रह्मसृष्टियां श्री श्यामाजी के नूरी अंग हैं। झूठी दुनियां वालों ने जो इनका दावा ले रखा है, वह सच्चाई से सदा बहुत दूर रहते हैं।

ताथें जो कछू कह्या मुसाफमें, सो सब आखिरी सिफत।
सो क्यों बूझे दिल मजाजी, जिनों पाई न हक मारफत।। १२० ।।

इसलिए जो कुछ कुरान में कहा था, वह सब सारी महिमा आखिर में आने वाले मोमिनों के लिए है। जिनके दिल झूठे हैं और जिनको मारफत का ज्ञान नहीं मिला, वह इस बात को कैसे समझें?

जो लों ले ऊपर का माएना, तो लों छोड़ ना सके फना।
हक हादी पाए बिना, दुनी उड़ जात ज्यों सुपना।। १२१ ।।

जब तक कुरान के ऊपरी अर्थ को लेंगे, तब तक वह मिटने वाले संसार को नहीं छोड़ सकते। श्री राजजी और श्री श्यामाजी की पहचान के बिना दुनियां सपने की तरह नष्ट हो जाती है।

महामत कहे मोमिनों पर, बरसत बदली नूर।
हक बका अर्स अजीम में, पट खोल लिए हजूर।। १२२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मोमिनों के ऊपर श्री राजजी महाराज की मेहर की बरसात होती है। उन्होंने मामिनों के लिए परमधाम के दरवाजे खोल रखे हैं।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। २५५ ।।

बाब तीनों गिरोके फैल हाल मकान

जो लों पट न खोल्या बका का, तो लों फना दुनी बीच रात।
मारफत दिल महंमद, करे दिन देखाए हक जात।। १ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने जब तक अखण्ड परमधाम के दरवाजे नहीं खोले, तब तक मिटने वाले दुनियां के लोग अन्धकार में ही भटकते रहे। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी ने मारफत के ज्ञान से अज्ञान को मिटाकर ज्ञान का उजाला कर दिया और मोमिनों के वास्ते परमधाम के दरवाजे खोल दिए।

Nijanand App

पेहेले सरत करी महंमदें, हक हम आवेंगे आखिर।
द्वार खोलें तब हक बका, करें दिन सिफायत फजर।। २ ।।

पारब्रह्म श्री राजजी महाराज ने पहले से ही मुहम्मद साहब से वायदा किया था कि हम आखिर के वक्त में आएंगे और अखण्ड परमधाम के दरवाजे खोलकर ज्ञान का सवेरा करके सबकी सिफायत करेंगे।

तबहीं दुनी पाक होएसी, तबहीं होसी एक दीन।
जब मुआ सबोंका सैतान, तब आया सबों आकीन।। ३ ।।

उस समय ही सब दुनियां पाक (साफ) होकर एक दीन एक पारब्रह्म की पूजक बनकर निजानन्द सम्प्रदाय में आ जाएगी। जब सबके दिलों से शैतान हट जाएगा, तब सबको यकीन आ जाएगा।

इत इमाम करें इमामत, हक बका सूरत देखाए।
करें मोमिनात मोमिन सिजदा, कराए इस्कें खुदी उड़ाए।। ४ ।।

फिर अखण्ड परमधाम का तथा श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान कराकर इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी कयामत करेंगे और मोमिनों के अहंकार को इश्क से समाप्त कर खुदा पर सिजदा कराएंगे।

देखा देखी का सिजदा, किया होवे जिन।
कह्या हाड़ पीठका सींग ज्यों, पीठ नरम न होवे तिन।। ५ ।।

मोमिनों के देखा-देखी जो निजानन्द सम्प्रदाय में आएंगे, उनकी पीठ की हड्डी सींग के समान कड़ी हो जाएगी और वह नीचे झुक नहीं सकेंगे।

कह्या चमड़ी टूटे पीठ की, सिर ना नीचा होए।
कही सेर छाती मुरग गरदन, ए पीठ हाड़ चमड़ी तोड़त दोए।। ६ ।।

कुरान में लिखा है कि उनकी पीठ की चमड़ी भले फट जाएगी, परन्तु सिर नहीं झुकेगा। उनकी छाती शेर के समान कठोर और गर्दन मुर्गे के समान अहंकार से भरी होगी, जो उनकी पीठ की हड्डी और चमड़ी को तोड़ेगी।

हक इलमें पट खोल के, सब को चिन्हाए करे दिन।
अर्सों भिस्तों हद अपनी, करे कयामत उठाए बका तन।। ७ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज सबको जागृत बुद्धि के ज्ञान से पहचान कराकर परमधाम के दरवाजे खोलेंगे। दुनियां के जीवों को बहिश्तों में पहुंचाकर कयामत के समय मोमिनों को परमधाम में उठा लेंगे।

लिख्या बीच कुरान के, हक करें आप जो चाहे।
दई पातसाही बनी इस्माईल को, लईबनी असराईल से छिनाए।। ८ ।।

कुरान में यह भी लिखा है कि खुदा जो चाहे, वह कर सकता है। खुदा ने बनी असराईल (मेहराज ठाकुर) से जाहिरी गद्दी लेकर बनी इस्माईल (श्री बिहारीजी) को दे दी।

और लिख्या हदीसों आयतों, ले माएने मुसाफ बातन।
सोई होसी हक नजीकी, जो दिल मोमिन अर्स तन।। ९ ।।

कुरान की आयतों और हदीसों में लिखा है कि जिन मोमिनों के असल तन अर्श (परमधाम) में हैं, खुदा के वही नजदीकी होंगे और खुदा को वही समझेंगे।

Nijanand App

जेता कोई हक अर्स दिल, सो कहे मरद मोमिन।
सो देखो हक इलम से, खोल रूह नजर बातन।। १० ।।

जिनके ही दिल में श्री राजजी महाराज का अर्श है, उनको ही मर्द मोमिन कहते हैं। जागृत बुद्धि के ज्ञान से अपनी आत्मा की नजर खोलो और उन्हें पहचानो।

रूहें हजूर लई पट खोल के, बीच अर्स बका वतन।
याद हादी सोई देत हैं, जो कहे हकें सुकन।। ११ ।।

रूहों को श्री राजजी महाराज सब परदे खोलकर अपने निज घर (परमधाम) में ले लेंगे। श्री प्राणनाथजी महाराज उन्हीं वायदों की याद दिला रहे हैं।

कहे अव्वल उतरते रूहों को, रदबदल है जेह।
सो लिखी हदीसों आयतों, सूरतें देत साहेदियां एह।। १२ ।।

परमधाम से उतरते समय रूहों को रदबदल (वार्तालाप) के समय जो वायदे किए थे, वह सब आयतों, हदीसों और सूरतों में लिखे हैं। यह इस बात की गवाही देते हैं।

खोल्या नूर पार इमामें, अर्स अजीम बका द्वार।
कराया सिजदा हजूर, इस्क पूरा दे प्यार।। १३ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने अक्षर पार परमधाम के दरवाजे खोल दिए और मोमिनों को इश्क तथा पूरा प्यार देकर श्री राजजी महाराज के सामने सिजदा कराया।

हक हजूर रूहों ने, लई सिजदे बड़ी लज्जत।
किया रूहों हैयाती सिजदा, ए आखिरी इमामत।। १४ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की इमामत से मोमिनों को पारब्रह्म का दर्शन हुआ और उन्होंने पारब्रह्म के चरणों में मूल-मिलावा में प्रणाम कर सुखों को प्राप्त किया।

देखो साहेदी हदीसों आयतों, उन्तीसमें सिपारे।
उमतें किया सिजदा, खोल अर्स बका द्वारे।। १५ ।।

कुरान के उन्तीसवें सिपारे की आयतों में और हदीसों में इस गवाही को देखो, जहां लिखा है कि मोमिनों ने परमधाम के दरवाजे खोलकर श्री राजजी महाराज के चरणों में सिजदा बजाया।

कहूं हुकमें साहेदी, जो हकें फुरमाई।
सो देखो आयतों हदीसों, ज्यों दिल होवे रोसनाई।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यह गवाही श्री राजजी के हुकम से ही मैं दे रही हूं। जो श्री राजजी महाराज ने कहा था, वह बातें आयतों और हदीसो में देखो तो तुम्हारे दिल के संशय मिटकर पहचान हो जाएगी।

सिजदा कराया इमामें, ऊपर हक कदम।
ए आसिक रूहों सिजदा, करें खासलखास दम दम।। १७ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने श्री राजजी के चरणों में मोमिनों को सिजदा कराया। यह खासलखास रूहें श्री राजजी महाराज के आशिक हैं और प्रतिपल उनके चरणों पर ही कुर्बान हैं।

Nijanand App

एते दिन अर्स–अजीम का, किन कह्या न एक हरफ।
अबलों चौदे तबक में, पाई न काहू तरफ।। १८ ।।

इतने दिन तक परमधाम का किसी ने एक हरफ नहीं बताया और न ही चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में किसी को अखण्ड घर की दिशा का ही पता चला।

ए हरफ सो केहेवहीं, जो रूह बका की होए।
नूर बूंदें महंमद की, और क्यों कर लेवे कोए।। १९ ।।

अब जो अखण्ड परमधाम की रूहें हैं वही वहां का बयान करेंगी। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की तारतम वाणी की बूंदें दूसरा कोई कैसे ले सकता है?

देखो दिल विचार के, हदीसें कुरान।
दिल हकीकी अर्स तन बिना, होए नहीं पेहेचान।। २० ।।

कुरान और हदीसों के ज्ञान को दिल से विचार करके देखो। जब तक दिल हकीकी नहीं होंगे या जिनके परमधाम में तन नहीं होंगे, इस वाणी की पहचान उनको नहीं हो सकती।

लिख्या सबों किताबों, हद ऊपर सुकन।
ए जानें सब अर्स दिल, जो लदुन्निएं किए रोसन।। २१ ।।

सभी धर्मशास्त्रों मे बेहद की वाणी इशारे में लिखी है। जिनका दिल श्री राजजी महाराज का अर्श हो गया है, तारतम वाणी से यह ज्ञान की बातें वही समझ सकते हैं।

तीन ठौर गिरो तीन के, बेवरा देखो दिल ल्याए।
एक आम दूजे नूरी फरिस्ते, गिरो जित महंमद पोहोंचे जाए।। २२ ।।

सृष्टि तीन ठौर की है और तीन तरह की जमातें हैं, जिसका विवरण दिल से समझो। एक आम खल्क जीवसृष्टि है। दूसरी नूरी फरिश्ते ईश्वरीसृष्टि है। तीसरी जमात ब्रह्मसृष्टि मोमिनों की है, जो परमधाम में रहती है और जहां मुहम्मद साहब पहुंचे थे।

सरीयत तरीकत हकीकत, और हक मारफत।
इन चारों की बिने इसलाम, जुदी जुदी कही जुगत।। २३ ।।

शरीयत, तरीकत, हकीकत और मारफत ज्ञान की चार सीढ़ियां कही हैं, जिनकी अलग-अलग युक्तियां हैं।

इन चारों की बिने इसलाम, जो हादी न देवें बताए।
तब लग अपने मकान को, क्यों कर पोहोंचे जाए।। २४ ।।

इन चारों के अलग-अलग नियम हैं। जब तक इनके भेद श्री प्राणनाथजी नहीं बता देते, तब तक यह तीनों सृष्टियां अपने-अपने घर को कैसे जा सकती हैं?

सरीयत बीच रात के, अमल चलाया नेक।
मुसरक होने ना दिया, हक कह्या एकका एक।। २५ ।।

अज्ञान के अंधेरे में शरीयत का ज्ञान रसूल साहब ने चलाया। उन्होंने मूर्तिपूजा बन्द कर 'खुदा एक है' ऐसा कहा।

Nijanand App

पांच बिने इसलाम की, दुनी सिर करी फरज।
दिल मजाजी यों जानत, हम देत पीछला करज।। २६ ।।

दुनियां के जीवों के ऊपर उन्होंने फर्ज अदा करने के लिए धर्म के पांच कानून बनाए। झूठे दिल वाले जीवसृष्टि यह जानते हैं कि इस तरह के पांच नियम पालन कर हम पिछला कर्जा चुका रहे हैं।

किन किन लई तरीकत, पर कोई जाए न सक्या बीच दिन।
ना खुली हकीकत मारफत, तो क्यों पावे फजर रोसन।। २७ ।।

उनमें किसी-किसी ने तरीकत का ज्ञान ग्रहण किया। वह भी दिन के उजाले में नहीं आ सके। उन्हें हकीकत और मारफत के भेद नहीं खुले तो ज्ञान का सवेरा कैसे होगा?

सरीयत बिने इसलाम की, पाक करे वजूद।
तरीकत पोहोंचे मलकूत लों, आगे होए न बका मकसूद।। २८ ।।

इस्लाम की शरीयत शरीर को पाक करती है और तरीकत के ज्ञान से बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है। इसके आगे अखण्ड की प्राप्ति नहीं होती।

बिने इसलाम हकीकत, सो खोले बातून रूह नजर।
पोहोंचे बका नूर मकान, खास गिरो फरिस्तों फजर।। २९ ।।

इस्लाम में हकीकत के ज्ञान से रूह की बातूनी नजर खुलती है। इससे अखण्ड अक्षरधाम तक पहुंचा जा सकता है, जहां फजर के समय ईश्वरीसृष्टि जाएगी।

इसलाम बिने हक मारफत, पोहोंचावे तजल्ला नूर।
ए मकान आसिक रूहों, गिरो खासलखास हजूर।। ३० ।।

इस्लाम में श्री राजजी की मारफत का ज्ञान नूरतजल्ला (परमधाम) में पहुंचाता है। यही आशिक रूहों की जगह है, जहां यह खासलखास रूहें राजजी के सामने रहती हैं।

इत इस्क बिना पोहोंचे नहीं, बिना हक हादी निसबत।
इलम लदुन्नी फुरमाए से, पोहोंचे अर्स बका खिलवत।। ३१ ।।

इस अखण्ड घर परमधाम में श्री राजजी, श्री श्यामाजी के सम्बन्ध बिना तथा इश्क के बिना नहीं पहुंचा जा सकता। तारतम वाणी के ज्ञान से मोमिन अखण्ड घर मूल-मिलावा में पहुंचे।

मोमिन मुस्लिम मुनाफक, बिन ईमान सोई हैवान।
ए आखिर हिदायत हादी बिना, पोहोंचे न अपने मकान।। ३२ ।।

मोमिनों की, फरिश्तों की और जीवसृष्टि की हकीकत बताई। जिनके अन्दर ईमान नहीं है, वह सभी जानवर हैं। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना यह अपने-अपने घरों को नहीं जा सकते।

खासलखास गिरो रुहें, अर्स अजीम सूरत हक।
और गिरो खास फिरस्तों, रहें नूर मकान बुजरक।। ३३ ।।

रूहों की जमात खासलखास कही है। यह श्री राजजी महाराज के अंग हैं और परमधाम के रहने वाले हैं। दूसरी जमात खास ईश्वरीसृष्टि को खास लिखा है, जो अखण्ड अक्षरधाम की रहने वाली है।

Nijanand App

कुंन केहेते पैदा हुई, ए जो खलक आम।
जो कही जुलमत से, तीसरी दुनी तमाम।। ३४ ।।

कुंन कहने से जो सृष्टि कही है वह आम खलक है। यह निराकार से पैदा है। यही तीसरी सृष्टि की सारी दुनियां है।

जेता पैदा जुलमत से, ए जो मजाजी दिल।
सो दिल हकीकी मोमिन मिने, कबहूं ना सके मिल।। ३५ ।।

यह निराकार से पैदा जो जीवसृष्टि है, उनके दिल झूठे मजाजी हैं। यह हकीकी दिल मोमिन से कभी नहीं मिल सकते।

सिपारे इकईसमें, लिख्या जाहेर बंदगी बयान।
पर हादी देखाएं देखिए, मोमिन करें पेहेचान।। ३६ ।।

कुरान के इक्कीसवें सिपारे में इस तरह की बंदगियों का स्पष्ट बयान है, पर हादी श्री प्राणनाथजी जब बताएंगे तभी मोमिन पहचान कर सकेंगे।

राह रूहानी बिने बातून, न पाइए बिना हकीकत।
सो हादी देखाएं देखिए, गुझ साहेदी बका मारफत।। ३७ ।।

हकीकत के ज्ञान के बिना बातूनी रहस्य और रूहों के रास्ते की जानकारी नहीं होती। श्री प्राणनाथजी महाराज के दिखाने से ही अखण्ड परमधाम की छिपी बातें जाहिर होती हैं।

कही निमाज करे छे विध की, दो सरीयत एक तरीकत।
आगूं एक हकीकत, दोए बका मारफत।। ३८ ।।

कुरान में छः तरह की नमाज का वर्णन आया है। जिनमें दो शरीयत की, एक तरीकत की, एक हकीकत की और दो अखण्ड मारफत की हैं।

तिन तीन निमाजका बेवरा, एक कही नफसानी।
दूजी पाक करत है, वजूद जिसमानी।। ३९ ।।

इनमें तीन नमाजों का ब्यौरा यह है। पहली नमाज से इन्द्रियां वश में की जाती हैं। दूसरी शरीयत की नमाज शरीर को पाक करती है।

दिल बंदगी तरीकत तीसरी, मलकूत पोहोंचे पाक होए।
दिल मजाजी जुलमत लों, आप अकल न छोड़े कोए।। ४० ।।

तरीकत की बन्दगी तीसरी है जो दिल से की जाती है, जिससे पाक होकर बैकुण्ठ पहुंचते हैं। झूठे दिलवाले निराकार तक जा सकते हैं। वह अपनी अक्ल से हद को नहीं छोड़ सकते।

अब बेवरा तीन निमाज का, खोले भेद की हकीकत।
करत निमाज जबरूत में, बीच बका फरिस्ते पोहोंचत।। ४१ ।।

बाकी तीन नमाजों के भेद हकीकत से खोल रही हूं। हकीकत की नमाज से अक्षरधाम (फरिश्तों) तक पहुंचा जाता है।

Nijanand App

बंदगी रूहानी और छिपी, जो कही साहेदी हजूर।
ए दोऊ बंदगी मारफत की, बीच तजल्ला नूर।।४२।।

रूहानी और छिपी बन्दगी पारब्रह्म श्री राजजी के परमधाम की हुजूरी बन्दगी है। इन दोनों को मारफत की बन्दगी कहते हैं।

ए आसिक रूहें गिरो रबानी, बीच नूरतजल्ला माहें।
दई साहेदी महंमदें मेयराज में, जो हकें केहेलाई मसी जुबांएं।।४३।।

श्री राजजी महाराज की आशिक रूहें परमधाम में रहती हैं। यह उनकी बन्दगी है। इसकी गवाही रसूल साहब ने मेयराजनामा में दी है। श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) से भी वही कहलवाया।

एही कुंजी कलाम हक इलम, खोले सब मगज किताब।
आगूं अर्स दिल मोमिनों, सो खोले जिन हादी खिताब।।४४।।

जागृत बुद्धि का ज्ञान ही कुरान के सब रहस्यों को खोलने की कुंजी है। इन रहस्यों को मोमिनों के सामने श्री प्राणनाथजी महाराज ने खोला, क्योंकि उन्हें ही यह अधिकार प्राप्त था।

कहे हदीस निमाज का, भेद न पाया किन।
हादी तीन सूरत आए बिना, काहू खोली नहीं बातन।।४५।।

रसूल साहब ने यह छः तरह की नमाज का रहस्य हदीस में कहा है, जो आज दिन तक किसी को पता नहीं चला। मुहम्मद की तीन सूरत बसरी, मलकी और हकी के बिना किसी ने आज दिन तक बातूनी भेद नहीं खोले।

अग्यारे सदी दस साल कम, तो लों खोल्या न पट कुरान।
पाक बिना मत छुइयो, ए दिल दे करो बयान।।४६।।

एक हजार नब्बे वर्ष तक कुरान के रहस्य नहीं खुले। कुरान में लिखा है कि बिना पाक हुए मुझे मत छूना।

सिपारे सत्ताईस में, लिख्या बीच फुरमान।
पाक बिना मत छुइयो, यों कहे हजरत कुरान।।४७।।

हजरत कुरान के सत्ताइसवें सिपारे में लिखा है कि जो दिल पाक नहीं है वह मुझे मत छूना।

अब लग दुनी यों जानिया, माएने न पाए किनने।
तो बोले जुदे जुदे आरिफ, जो सक है सबों में।।४८।।

आज दिन तक दुनियां भटकती फिरती थी। किसी को कुरान के रहस्यों का पता नहीं चला, इसलिए पढ़े-लिखे इलमी लोग अलग-अलग अर्थ करते रहे, क्योंकि सभी के अन्दर संशय थे।

और किए मुहककों माएने, जुदे जुदे दिल ल्याए।
तिन सबों से तेहेकीक, माएने गुझ क्यों समझाए।।४९।।

और खोज करने वाले इलमी, ज्ञानी लोग भी अलग-अलग अपने दिल से अर्थ करते रहे। श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान के छिपे रहस्यों को दुनियां के तुच्छ जीव कैसे जान सकते हैं?

Nijanand App

कह्या याही के तरजुमें, जो दिल घसे न छाती से।
अब लों छिपा मता ए तो रह्या, जो जाहेर न किया किनने।।५०।।

किसी के अनुवाद (टीका) में यह भी लिखा है कि जब तक दिल में चोट न लगे और दिल निर्मल न हो, तब तक कुछ नहीं होगा, पर फिर भी अभी तक यह रहस्य छिपे रहे। कोई जाहिर नहीं कर सका।

तब से परदा मुंह पर, रह्या हजरत मुसाफ के।
सो सदी अग्यारहीं लग, किन दीदार न पाया ए।।५१।।

इसलिए लिखा है कि हजरत कुरान के मुंह पर ग्यारवहीं सदी तक परदा पड़ा रहा और कुरान के छिपे भेदों को कोई समझ नहीं सका।

पाक न होए पानी खाक से, और इलाज न पाकी कोए।
बिना पाक न हुकम छुए का, एक पाक हक से होए।।५२।।

संसार के पानी और मिट्टी से दिल पाक नहीं होता। दिल पाक करने का कोई उपाय नहीं है। बिना पाक हुए कुरान को छूने का हुकम भी नहीं है। दिल पाक एक श्री राजजी महाराज की मेहर से ही होता है।

कह्या मुसाफ नजीक हक के, सो हक नजीक खोलाए।
नापाक इत आए ना सके, ए इन पाकी खोल्या जाए।।५३।।

कुरान को श्री राजजी महाराज के नजदीक कहा है, इसलिए इनके रहस्यों को वही खोल सकते हैं, जो श्री राजजी महाराज के नजदीकी हैं। दुनियां के नापाक इन्सान श्री राजजी के नजदीक आ नहीं सकते, इसलिए कुरान के रहस्यों को मोमिन ही खोल सकते हैं।

हादी मोमिनों बीचमें, पाइए हक इस्क ईमान।
ए पाकी हैं मोमिनों, होए खाली सोर जहान।।५४।।

श्री श्यामाजी और मोमिनों के अन्दर ही श्री राजजी का इश्क और ईमान है और यही मोमिन पाक साफ हैं। बाकी दुनियां वाले सब शोर मचाने वाले हैं।

पेहेला दीदार होए मोमिनों, बीच आखिरी पैगंमर।
ए मुसाफ कह्या आखिरी, देवे दीदार आखिर।।५५।।

आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के दर्शन पहले मोमिनों को ही होंगे। बाद में वह सारी दुनियां को दर्शन देंगे, ऐसा कुरान में कहा है।

बखत महंमद के उठने, और आवे अस्हाब।
तब सो खोले मुसाफ को, पोहोंचे लग कोसे नकाब।।५६।।

आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी आएंगे। उनके साथ उनके मोमिन आएंगे और तब कुरान के रहस्य खुलेंगे, अर्थात् कुरान का घूंघट उठाएंगे।

ए पट खोल करें जाहेर, तब हुई तौहीद मदत।
दिल पाक करो इन आवसें, मुसाफ तब मोंह देखावत।।५७।।

कुरान के छिपे रहस्य खोलकर जाहिर कर देंगे, क्योंकि इन्हें पारब्रह्म की मेहर प्राप्त है। श्री राजजी महाराज की मेहर से ही अपने दिल को पाक करो और तब कुरान के दर्शन होंगे।

Nijanand App

कह्या हक सेहेरग से नजीक, सो हक अर्स मोमिन दिल।
ना ऊपर तले दाएं बाएं, ए बतावें मुरसद कामिल।।५८ ।।

कुरान में लिखा है खुदा सेहेरग से भी मोमिनों के करीब है। वह मोमिनों के दिल में है। ऐसे योग्य पढ़ने वाले ज्ञान बतलाते हैं और कहते हैं कि खुदा ऊपर, नीचे, दाएं, बाएं कहीं नहीं है। उसका अर्श मोमिनों का दिल ही है।

जब पट अपने मोंह से, किया मुसाफें दूर।
तब नूर बका जाहेर हुआ, और तजल्ला नूर।।५९ ।।

जब कुरान के मुख से परदा उठ गया, तब अखण्ड परमधाम और वहां की सब बातें जाहिर हो गईं।

जब मोंह मुसाफें खोलिया, तब पट न आड़े हक।
तब दीदार पावे दुनियां, जो हक इलमें हुई बेसक।।६० ।।

जब कुरान के भेद खुल गए तो श्री राजजी महाराज के बीच कोई परदा नहीं रह गया। अब जागृत बुद्धि के ज्ञान से दुनियां संशय रहित होकर पारब्रह्म के दर्शन करेगी।

दुनी तरफ न पावे हक की, और मुसाफ हुआ पास हक।
हक मुसाफ आड़े एक पट, सो पट उड़े देखे खलक।।६१ ।।

दुनियां को पारब्रह्म के ठिकाने का पता नहीं है। कुरान श्री राजजी महाराज के पास है। श्री राजजी महाराज के कुरान और दुनियां के बीच एक यही अज्ञानता का परदा है। जब यह परदा तारतम ज्ञान से उड़ेगा, तब दुनियां वालों को कुरान के छिपे रहस्यों की और श्री राजजी की पहचान होगी।

हक नजीक सेहेरग से, पर तरफ न पावे कोए।
ढूंढ्या अव्वल से अब लग, पर किन बका न रोसन होए।।६२ ।।

खुदा सेहेरग से नजदीक कहा गया है, परन्तु वह किस तरफ से है, कोई नहीं जानता। शुरू से आज दिन तक सब खोजते ही रह गए, पर किसी को अखण्ड घर की पहचान नहीं हुई।

सब सय फना कही, क्यों बका कह्या ढिग तिन।
जिमी बका अर्स ढिग फना, ए सक सुभे रही सबन।।६३ ।।

सारी दुनियां को नाशवान कहा है, तो अखण्ड घर उनके पास कैसे हो सकता है? परमधाम की सब जमीन अखण्ड है, तो परमधाम उनके नजदीक कैसे हो सकता है? यही संशय सब का बना रहा।

ए मुरसद कामिल बिना, और न काहूं खोलाए।
अब हादिएं ए पट तो खोल्या, जो गिरो सरतें पोहोंची आए।।६४ ।।

कामिल मुर्शिद (सतगुरु) मोमिनों के बिना इन रहस्यों को और कोई नहीं खोल सकता। अब हादी श्री प्राणनाथजी ने इस परदे को मोमिनों के लिए खोल दिया है, क्योंकि आखिरत का समय आ गया है।

मुसाफ उठया तो उत से, जो बिकर रही फुरकान।
याके वारस मसी मोमिन, जो कहे अहेल फुरमान।।६५ ।।

कुरान आज दिन तक कुंवारी थी। उसके वारिस श्री श्यामाजी और मोमिन के लिए पाक कुरान को मक्का से उठाकर जबराईल ले आया। इन्हीं मोमिनों को कुरान का वारिस कहा।

Nijanand App

तो जुदे जुदे कहे जंजीरों, देखो दाखले मिलाए।
पेहेचान जंजीर जंजीरों, ज्यों दिल पाक होवे ताए।। ६६ ।।

यह बातें अलग-अलग आयतों में लिखी हैं, जिनको पहचानने के वास्ते दिल को पाककर अलग-अलग आयतों को मिलाकर देखो।

मुईनुद्दीन ने भेजी हदीसें, देने मुरीद आकीन।
तालिब होए सो देखियो, करी जाहेर कुतबदीन।। ६७ ।।

कुरान में लिखा है कि खुदा ने अपने बन्दों को यकीन देने के वास्ते हदीसें भेज दीं। जो इसका ख्वाहिशमन्द हो, वह ध्यान देकर समझना। वह रहस्य कुतुबुद्दीन के नाम से जाहिर हुए ऐसा कुरान में लिखा है, अर्थात् यह किस्सा आखिर के वक्त का है। श्री प्राणनाथजी ने कयामतनामा का ज्ञान छत्रसालजी के नाम से जाहिर किया, ताकि सुन्दरसाथ को यकीन आ जाए।

कह्या हदीसमें रसूलें, स्वाल किया उमर।
सरा तरीकत हकीकत, तीनों की देओ खबर।। ६८ ।।

रसूल साहब के यार हजरत उमर ने रसूल साहब से कहा कि शरीयत, तरीकत और हकीकत का ज्ञान हमें दो। यह बात हदीस में लिखी है।

पांच बिने कही तीनों की, जाहेर किए बयान।
निसां होए तालिब की, देखो अर्स दिल पेहेचान।। ६९ ।।

शरीयत, तरीकत और हकीकत के पांच नियम जाहिरी में बताए हैं। जिन मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज ने अर्श किया है, वही इस जानकारी के ख्वाहिशमन्द (इच्छुक) हैं। इसको पहचानकर उनको सन्तुष्टि हो जाएगी। (तोहीद, रोजा, नमाज, जकात और हज)।

कह्या उठें पैगंमर अस्हाब, एही आखिरी किताब।
खोलें बीच आखिरी उमत, जिन सिर आखिरी खिताब।। ७० ।।

आखिर के समय में पैगाम देने वाले मोमिन और ईश्वरीसृष्टि सब संसार में आएंगे और कतेब की आखिरी किताब कुरान के रहस्यों को इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज जिसको कुरान के रहस्यों को खोलने का अधिकार है, अपनी उम्मत मोमिनों के बीच खोलेंगे।

नूर सागर सूर मारफत, सब दिलों करसी दिन।
रात गुमराही कुफर मेट के, करे चौदे तबक रोसन।। ७१ ।।

श्री प्राणनाथजी अक्षर नूर सागर की एक बूंद कुलजम सरूप साहेब सूर्य के समान चमकाकर सबकी अज्ञानता का अन्धकार हटाकर चौदह तबक में उजाला भर देगा।

हक मारफत दिन होएसी, दिल महंमद सूर नूर।
हक अर्स बका जाहेर किए, मिटी हवा तारीक देख जहूर।। ७२ ।।

कुलजम सरूप साहब की वाणी श्री प्राणनाथजी के दिल से जाहिर होगी, जिससे श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम की पहचान होगी। इस ज्ञान के प्रकाश से निराकार की अज्ञानता का अन्धकार मिट जाएगा।

Nijanand App

तो कलाम अल्ला की आयतें, और हदीसें महंमद।
ए मोमिन देखें दिल अर्स में, ले मुसाफ मगज साहेद।।७३ ।।

तब कुरान की आयतों के छिपे रहस्य और मुहम्मद साहब की हदीसों को मोमिन ही अपने अर्श दिल में समझ लेंगे।

कहूं बेवरा आदम औलाद, तिनमें कही विध तीन।
सोई समझें हक इलमें, जिनमें इस्क आकीन।।७४ ।।

बाबा आदम (आदि नारायण) की औलाद में तीन तरह के लोग हैं जिनमें इश्क और ईमान है। जागृत बुद्धि के ज्ञान से वही कुरान के रहस्यों को समझ सकते हैं (जीव, ईश्वरी और ब्रह्म)।

कही एक गिरो पैदा जुलमत से, तिन के फैल हाल जुलमत।
सो दुनी बिन कछू न देखहीं, दुस्मन दिल पर सखत।।७५ ।।

एक जमात निराकार से (जीवसृष्टि) पैदा है। उसकी करनी और रहनी भी अन्धकार की है। उनके दिलों पर शैतान अबलीस (नारद) की सत्ता (कठोर हुकूमत) है, इसलिए इस जमात की नजर केवल दुनियांदारी की तरफ ही रहती है।

दूजी गिरो फरिस्तन की, भई पैदा नूर मकान।
उतरी लैलत कदरमें, सो ताबे न होए सैतान।।७६ ।।

दूसरी जमात ईश्वरीसृष्टि की है, जो अक्षर धाम से पैदा है। यह भी खेल में लैल तुल कदर की रात्रि में उतरी है, इसलिए यह शैतान अबलीस के अधीन नहीं रह सकती।

गिरो तीसरी नूर बिलंदसे, ताको कौल फैल हाल नूर।
रूहें अर्स दिल उतरीं लैलमें, करें हमेसा हक जहूर।।७७ ।।

तीसरी जमात परमधाम से आई हैं। उनकी कहनी, करनी और रहनी सब नूरी है। इनके दिल को ही अर्श कहा है। यह भी लैल तुल कदर की रात्रि में खेल देखने के लिए उतरी हैं, वरना यह सदा ही श्री राजजी महाराज के साथ रहती हैं।

कहे मोमिन नूर सूरतमें, जो बीच अर्स हमेसगी।
एक तन मोमिन अर्स में, दूजी सूरत सुपन की।।७८ ।।

परमधाम में मोमिनों की परआतम के नूरी तन हैं। मोमिनों का एक तन अर्श परमधाम में है और दूसरा तन संसार का है।

तो कहे सेहेरग से नजीक, खासलखास बंदे हक के।
किए अर्स तन से रूबरू, जो नूर बिलंद से उतरे।।७९ ।।

श्री राजजी महाराज के यही खासलखास बन्दे कहे गए हैं। इनके लिए ही श्री राजजी महाराज को सेहेरग से नजदीक कहा है। यह मोमिन जो परमधाम से उतरे हैं, इनके अर्श दिल को, अर्थात् संसार के तन, आत्मा को परआतम के आमने सामने पहचान करा दी है।

Nijanand App

जाकी न असल अर्समें, सो सेहेरग से नजीक क्यों होए।
वह फना बका को क्यों मिले, वाकी अकलमें न आवे सोए।। ८० ।।

जिसकी परआतम परमधाम में नहीं है, उसको श्री राजजी महाराज (हक) सेहेरग से नजदीक कैसे हो सकते हैं? संसार के जीव मिटने वाले हैं। वह अखण्ड से नहीं मिल सकते। यह बात उनकी समझ में भी नहीं आ सकती है।

हकें कह्या छबीसमें सिपारे, मैं मेरे बंदों से अकरब।
वे मोमिन एक तन अर्समें, ताए सेहेरग से नजीक रब।। ८१ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान के छब्बीसवें सिपारे में लिखा है कि मैं मोमिनों के नजदीक रहता हूं। मोमिनों का एक तन परमधाम में है, इसलिए खुदा सेहेरग से नजदीक है।

रुबरू होना अर्स तन से, इन फना वजूद नासूत।
नजीक न होए बिना अर्स तन, नूर लाहूत परे हाहूत।। ८२ ।।

संसार के यह झूठे शरीर परमधाम के अखण्ड तनों के सामने नहीं जा सकते। अक्षरधाम से परे परमधाम और परमधाम में मूल-मिलावा में विराजमान श्री राजजी महाराज के नजदीक मोमिनों के बिना और कोई नहीं जा सकता।

दुनी असल जिनों तारीकी, सो इलमें करो पेहेचान।
ताको नजीक सेहेरग से, खाली हवा ला मकान।। ८३ ।।

दुनियां जो मोह तत्व (जुल्मत) से पैदा है, उसकी पहचान ज्ञान से करो। उनके सेहेरग से नजदीक निराकार है।

नाहीं करें बराबरी है की, क्यों मिले दाखला ताए।
बका नींद उड़ें उठें अर्समें, फना नींद उड़े उड़ जाए।। ८४ ।।

मिटने वाली दुनियां अखण्ड मोमिनों की बराबरी नहीं कर सकती। फरामोशी हटने पर मोमिन अखण्ड परमधाम में उठ खड़े होंगे और संसार का प्रलय हो जाएगा।

सुपन उड़े जब मोमिनों, उठ बैठें अर्स वजूद।
कहे खासे बंदे दरगाही रूहें, कदमों हमेसा मौजूद।। ८५ ।।

मोमिनों की जब फरामोशी टलेगी, तब उनके परमधाम की परआतम मूल-मिलावा में उठकर खड़ी हो जाएंगी। यह परमधाम में श्री राजजी महाराज के खासे बन्दे दरगाही कहे जाते हैं और उनके चरणों में ही सदा रहते हैं।

लिख्या है हदीस में, मोमिन असल अर्स माहें।
ताको मोमिन जिन कहो, जाकी असल अर्समें नाहें।। ८६ ।।

मुहम्मद साहब ने हदीस में कहा है कि मोमिनों के मूल तन परमधाम में हैं। जिनके तन परमधाम में नहीं हैं, उनको मोमिन मत कहो।

Nijanand App

ए वेद कतेब पुकारहीं, कोई पोहोंच्या न अपनी अकल।
बिना हादी गोते खावहीं, जो तन मोमिन अर्स असल।। ८७ ।।

वेद कतेब में साफ लिखा है कि अपनी सांसारिक बुद्धि से वहां कोई नहीं पहुंच सकता। बिना श्री प्राणनाथजी की कुलजम सरूप की वाणी के सब संसार में भटकते रहेंगे। इनमें कुछ मोमिन भी होंगे, भले ही उनके तन परमधाम में हैं।

तो क्यों पोहोंचें दिल मजाजी, जाकी पैदास कही जुलमत।
सो चाहे बिना हादी असल, जबराईल न पोहोंच्या जित।। ८८ ।।

जब मोमिन बिना वाणी के भटक सकते हैं, तो यह संसार के जीव जो मोह तत्व निराकार से पैदा हैं, जिनके दिल झूठे हैं, वह कैसे परमधाम तक पहुंच सकते हैं? जहां जबराईल नहीं जा सका, वहां श्री प्राणनाथजी के चाहे बिना कोई नहीं पहुंच सकता।

तो कही रात दुनी इन वास्ते, दिए बंदगी फरज लगाए।
ले तरीकत चल कोई न सक्या, गए पांउं पुल-सरातें कटाए।। ८९ ।।

इसलिए दुनियां के वास्ते अज्ञानता का अंधेरा कहा है और उनके ऊपर फर्ज बन्दगी लाद दी गई है। यह दुनियां वाले तरीकत के रास्ते पर भी नहीं चल सके और कर्मकाण्ड की तलवार से ही इनके पर कट गए।

तरीकत भी ले ना सके, सो रातै की बरकत।
जो तरीकत ले पोहोंचे मलकूत, तो भी आड़ी हवा जुलमत।। ९० ।।

अज्ञानता के कारण ही यह तरीकत की बन्दगी के रास्ते नहीं चल सके। कोई तरीकत की राह से चलकर यदि बैकुण्ठ पहुंच भी गया तो उसके आगे निराकार का आवरण आ गया।

ले हिसाब दई हैयाती, कह्या वास्ते महंमद नूर।
भिस्त तो कही तले नूर के, रखे दिल बीच बका जहूर।। ९१ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के अंग मोमिनों के वास्ते ही श्री प्राणनाथजी महाराज सबका हिसाब लेकर अक्षर की नजर के नीचे योगमाया में बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति देंगे।

खास गिरो फरिस्तन की, ए जो पैदा नूर मकान।
सो पोहोंचे बका बीच नूर के, ले हक इलम ईमान।। ९२ ।।

ईश्वरीसृष्टि की जमात जो अक्षरधाम से पैदा है, वह भी श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से ईमान लाएंगे और अपने अखण्ड घर अक्षरधाम जाएंगे।

हक हकीकत मारफत, रूहें इस्कें राह लई जाए।
सो बिन चले पांउं हक बका, दई सेहेरग से नजीक बताए।। ९३ ।।

श्री राजजी महाराज की हकीकत और मारफत के ज्ञान का रास्ता मोमिन ही इश्क से लेंगे। वह बिना पांव के चले (बिना किसी कर्मकाण्ड) ही अखण्ड घर परमधाम पहुंच जाएंगे। श्री राजजी महाराज ने इनको ही सेहेरग से नजदीक कहा है।

Nijanand App

हक खासलखासों को, खेल देखावें लैल का।
नूर-तजल्ला बीचमें, खेल देखें बैठे बीच बका।। ९४ ।।

श्री राजजी महाराज अपने खासलखास मोमिनों को परमधाम के बीच बैठाकर लैल का खेल दिखा रहे हैं।

ए क्या जानें मजाजी दुनियां, जो तारीकी से पैदास।
वाके दाखले मिलावे आपमें, जो अर्स रूहें खासलखास।। ९५ ।।

जो दुनियां निराकार से पैदा है, वह झूठी दुनियां इन बातों के भेदों को क्या समझे। परमधाम की जो खासलखास रूहें हैं, इनके साथ संसार के जीव अपनी तुलना करते हैं।

आयतों हदीसों माएने, जो देखो हक इलम ले।
तो खासलखास खासे आम की, तीनों जाहेर देखाई दे।। ९६ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से आयतों, हदीसों से मायने देखो, तो खासलखास (मोमिन), खास (ईश्वरी सृष्टि) और आम खल्क (जीवसृष्टि) इन तीनों की पहचान जाहिर दिखाई देगी।

हुकम हुआ तीनों गिरो को, कर महंमद हिदायत।
हकीकत और तरीकत, तीसरी जो सरीयत।। ९७ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी को हुआ कि तुम तीनों किस्म की सृष्टि को हिदायत करो। हकीकत से, तरीकत से और शरीयत से सबको पहचान कराओ।

खासलखासों दे हिकमत, ज्यों रहे न सुभेसक।
बिगर वास्ते पोहोंचें बीच, अर्स अजीम बका हक।। ९८ ।।

खासलखास जो ब्रह्मसृष्टि है उनको जागृत बुद्धि की हिकमत दो, जिससे उनको किसी प्रकार के संशय न रह जाए और वह बिना किसी रुकावट के अखण्ड परमधाम में श्री राजजी महाराज के सामने पहुंच जाएं।

तरीकत देखाओ खास दूजी को, केहे मीठी हलीमी जुबांन।
तेरा हुकम न फेरे ए गिरो, पोहोंचाओ बका नूर मकान।। ९९ ।।

दूसरी जो ईश्वरीसृष्टि है उसे तरीकत की राह दिखाओ। उनसे मीठा और नम्रता से बोलो। यह जमात भी तुम्हारे हुकम को नहीं टालेगी। इनको भी अक्षरधाम अखण्ड घर में पहुंचा दो।

और जिद कर आम खलक सों, वे तेरे सामी ल्यावें हुज्जत।
ताए समझाओ जिदसों, जो जाहेरी चले सरीयत।। १०० ।।

साधारण दुनियां के जीवों को बल से समझाओ। वह तुम्हारे सामने हमेशा झगड़ा करेंगे, इसलिए उनका इलाज लट्ठ (सखती) ही है। यह दिखाने के वास्ते शरीयत पर चलते हैं। धर्म का आडम्बर करते हैं।

लिखी तीनों की अकलें, और तासों पाए जो फल।
सो लिखी बीच आयतों मुसाफ, सो देखो मोमिन अर्स दिल।। १०१ ।।

इस तरह से तीनों की अक्ल का विवरण लिखा है। उससे जो फल मिलता है वही कुरान की आयतों में लिखा है। हे मोमिनो! तुम्हारे दिल को श्री राजजी महाराज ने अर्श किया है, इसलिए तुम इसे समझो।

Nijanand App

सरीयत तरीकत हकीकत, ए तीनों अहेल कुरान।
जिन जो पाई अकल, तिन तैसी हुई पेहेचान।। १०२ ।।

शरीयत, तरीकत और हकीकत से मानने वाले तीनों अपने आप को कुरान का वारिस बताते हैं, परन्तु जिनको जैसे बुद्धि मिली, उन्होंने कुरान की वाणी को वैसा ही पहचाना।

जो आयत हब्बूनी हब्बहुंम, तिन किए तरजुमें तीन।
पेहेचान जैसी तैसी मजल, फल सोई देवे आकीन।। १०३ ।।

कुरान की आयत हब्बूनी-हब्बहुंम का तीन प्रकार का अनुवाद है। उसमें लिखा है जिससे कुरान की वाणी को जिस रूप में पहचाना, उनको वैसा ठिकाना मिला, वैसा ही फल मिला और वैसा ही उनको यकीन आया।

बीच लिख्या हदीसों आयतों, हक खिलवत के सुकन।
सो क्यों पावें दिल दुस्मन, बिना अर्स दिल मोमिन।। १०४ ।।

श्री राजजी महाराज के मूल-मिलावा की बातें कुरान की आयतों और हदीसों में लिखी हैं, जिसकी जानकारी उन मोमिनों को ही हो सकती है, जिनके दिल को श्री राजजी महाराज ने अर्श किया है। जिनके दिल पर शैतान (दुश्मन अबलीस) की बादशाही है, वह इस रहस्य को नहीं समझ सकते।

बिना हक हादी निसबत, कोई होए न सके दाखिल।
मारफत पाइए मुसाफ की, जो हक दें कुल्ल अकल।। १०५ ।।

बिना श्री राज श्यामाजी के सम्बन्ध के परमधाम में कोई घुस नहीं सकता। जब श्री राजजी महाराज जागृत बुद्धि दें, तभी कुरान के भेद समझे जा सकते हैं।

लिख्या सिपारे तीसरे, इबराहीम पूछा हक से।
ए जो मरत है दुनियां, क्यों कर मुरदे उठें।। १०६ ।।

कुरान के तीसरे सिपारे में लिखा है कि इब्राहीम ने खुदा से पूछा कि यह दुनियां वाले मरते जाते हैं, तो यह मुर्दे किस तरह से उठेंगे?

तब लिख्या आया आयतमें, बाजे पैदा कलमें कुंन।
एक कहे एक हाथ से, कहे बाजे दो हाथन।। १०७ ।।

तो ऊपर से आयत उतरी। कुछ लोग कुंन शब्द कहने से पैदा हुए हैं। एक सृष्टि एक हाथ से तथा दूसरी को दो हाथ से बताया है।

एक गिरो इसदाए से, मौजूद से ले आए।
दूजी गिरो खिलकत और से, इनों वास्ते करी पैदाए।। १०८ ।।

एक जमात शुरू से ही है, जिसे परमधाम से उतारा है। एक जमात और ईश्वरीसृष्टि है जो मोमिनों के वास्ते पैदा की है।

ए तीनों गिरो का बेवरा, देखो दाखले मिलाए।
एक कुंन दूजे पाक फरिस्ते, तीसरी असल खुदाए।। १०९ ।।

इस तरह से तीन प्रकार की सृष्टि के दृष्टांत को मिलाकर देखो। एक सृष्टि जीव है जो कुंन से पैदा हुई है। दूसरी पाक फरिस्तों (ईश्वरीसृष्टि) की है। तीसरी खुदा के ही तन ब्रह्मसृष्टि हैं।

Nijanand App

एक हाथ सूरत महंमद की, दूजे दो हाथ सूरत दोए।
ए तीनों कही हाथ से, ए दोए तीन एक सोए।। ११० ।।

खुदा ने एक हाथ से रसूल मुहम्मद को बनाया। दूसरे दोनों हाथ से मल्की और हकी सूरत को बनाया। यह तीनों बसरी, मल्की और हकी को खुदा ने अपने हाथ से बनाया है (ऐसा कुरान के तीसरे सिपारे तिल्कर रसूल में आया है)। अब यह दोनों सूरत बसरी, मल्की, तीसरी सूरत हकी में आकर मिल गई और एकाकार हो गई।

कोई कहे कहां कह्या हाथ से, देखो सिपारे तेईसमें।
देखो सहूर कर मोमिनों, कह्या आदम पैदा हाथ से।। १११ ।।

कोई पूछे कि यह खुदा ने हाथ से बनाया है, ऐसा कहां लिखा है। मोमिनो! इसे कुरान के तेईसवें सिपारे में विचार करके देखो, जहां आदम के पुतले को हाथ से बनाने का आदेश अजाजील को दिया।

महामत कहे हक इलमें, बेवरा कह्या नेक ए।
दो गिरो पोहोंचाई दोऊ अर्सों में, औरों पट खोले भिस्त आठों के।। ११२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से मैंने थोड़ा सा यह विवरण कहा है। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि को परमधाम और अक्षरधाम में जाने के लिए दरवाजे खोल दिए। बाकी सब जीवों के लिए आठ किस्म की बहिश्तें कायम कर दी हैं।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ३६७ ।।

बाब तीनों फरिस्तों का बयान

तीनों फरिस्तों का बेवरा, लिख्या बीच कुरान।
सो खोल हकीकत मारफत, हादी मोमिन देवें पेहेचान।। १ ।।

कुरान के अन्दर तीन बड़े फरिश्तों का विवरण लिखा है। हादी श्री प्राणनाथ जी महाराज मोमिनों के वास्ते हकीकत और मारफत के भेद खोलकर बता रहे हैं।

बयान बड़े बोहोत निसान, तार्थे जुदे जुदे लिखे जात।
एक दूजे के आगे जो कहिए, तो कागद में न समात।। २ ।।

इन तीन फरिश्तों की हकीकत बहुत ज्यादा है। यह अलग-अलग ठिकानों में कही गई है। जिनका एक-दूसरे के साथ मीजान (जोड़) करके विवरण किया जाए तो कागज में लिखा नहीं जाएगा।

जुदी जुदी सनंधों साहेदी, हकें भेजी कई किताब।
जासों पढ़ा या अनपढ़ा, सब रोसन होए सिताब।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज ने कई धर्मशास्त्र अलग-अलग हकीकत की गवाहियों के वास्ते भेजे हैं। जिससे पढ़े हों या अनपढ़े, दोनों को जल्दी से जानकारी मिल जाए।

छिपाया देखाऊं जाहेर कर, जो हकें फुरमाए।
त्यों देखाऊं कर माएने, ज्यों छोटे बड़े समझी जाए।। ४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने कुरान के जो भेद छिपाकर रखे हैं, उनको मैं जाहिर करती हूं। उनका निरूपण (स्पष्ट, प्रकाश) कर ऐसा जाहिर करूंगी, जिससे सब छोटे-बड़ों को समझ में आ जाए।

Nijanand App

एक हाथ सूरत महंमद की, दूजे दो हाथ सूरत दोए।
ए तीनों कही हाथ से, ए दोए तीन एक सोए।। ११० ।।

खुदा ने एक हाथ से रसूल मुहम्मद को बनाया। दूसरे दोनों हाथ से मलकी और हकी सूरत को बनाया। यह तीनों बसरी, मल्की और हकी को खुदा ने अपने हाथ से बनाया है (ऐसा कुरान के तीसरे सिपारे तिल्कर रसूल में आया है)। अब यह दोनों सूरत बसरी, मलकी, तीसरी सूरत हकी में आकर मिल गईं और एकाकार हो गईं।

कोई कहे कहां कह्या हाथ से, देखो सिपारे तेईसमें।
देखो सहूर कर मोमिनों, कह्या आदम पैदा हाथ से।। १११ ।।

कोई पूछे कि यह खुदा ने हाथ से बनाया है, ऐसा कहां लिखा है। मोमिनो! इसे कुरान के तेईसवें सिपारे में विचार करके देखो, जहां आदम के पुतले को हाथ से बनाने का आदेश अजाजील को दिया।

महामत कहे हक इलमें, बेवरा कह्या नेक ए।
दो गिरो पोहोंचाई दोऊ अर्सों में, औरों पट खोले भिस्त आठों के।। ११२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से मैंने थोड़ा सा यह विवरण कहा है। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि को परमधाम और अक्षरधाम में जाने के लिए दरवाजे खोल दिए। बाकी सब जीवों के लिए आठ किस्म की बहिश्तें कायम कर दी हैं।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ३६७ ।।

बाब तीनों फरिस्तों का बयान

तीनों फरिस्तों का बेवरा, लिख्या बीच कुरान।
सो खोल हकीकत मारफत, हादी मोमिन देवें पेहेचान।। १ ।।

कुरान के अन्दर तीन बड़े फरिश्तों का विवरण लिखा है। हादी श्री प्राणनाथ जी महाराज मोमिनों के वास्ते हकीकत और मारफत के भेद खोलकर बता रहे हैं।

बयान बड़े बोहोत निसान, ताथें जुदे जुदे लिखे जात।
एक दूजे के आगे जो कहिए, तो कागद में न समात।। २ ।।

इन तीन फरिश्तों की हकीकत बहुत ज्यादा है। यह अलग-अलग ठिकानों में कही गई है। जिनका एक-दूसरे के साथ मीजान (जोड़) करके विवरण किया जाए तो कागज में लिखा नहीं जाएगा।

जुदी जुदी सनंधों साहेदी, हकें भेजी कई किताब।
जासों पढ़ा या अनपढ़ा, सब रोसन होए सिताब।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज ने कई धर्मशास्त्र अलग-अलग हकीकत की गवाहियों के वास्ते भेजे हैं। जिससे पढ़े हों या अनपढ़े, दोनों को जल्दी से जानकारी मिल जाए।

छिपाया देखाऊं जाहेर कर, जो हकें फुरमाए।
त्यों देखाऊं कर माएने, ज्यों छोटे बड़े समझी जाए।। ४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने कुरान के जो भेद छिपाकर रखे हैं, उनको मैं जाहिर करती हूं। उनका निरूपण (स्पष्ट, प्रकाश) कर ऐसा जाहिर करूंगी, जिससे सब छोटे-बड़ों को समझ में आ जाए।

Nijanand App

हलाल हराम दोऊ छिपे हुते, सो बयान किए हुकम।
ले अकल असराफील, नबी कदमों धरे कदम।।५ ।।

दुनियां में नेकचलन और बदचलन वाले मिल गए थे। उनको जुदा-जुदा करने के लिए श्री राजजी महाराज के हुकम से असराफील फरिश्ता श्री राजजी की जागृत बुद्धि लेकर आया तथा नेकचलन और बदचलन का भेद बताया। श्री प्राणनाथजी के चलाए रास्ते पर चला।

हक साथ मैं आऊंगा, असराफील ईसा इमाम।
लिखे फैल सबन के, जासों पेहेचानिए तमाम।।६ ।।

मुहम्मद साहब ने कुरान में कहा है कि आखिरत के वक्त में मैं खुदा के साथ आऊंगा। मेरे साथ असराफील, ईसा रूह अल्लाह और इमाम मेंहेंदी होंगे। जिससे इनकी पहचान हो सके, वह सब तरीका भी लिखा है।

यों केती कहूं निसानियां, हैं हिसाब बिन।
पर ए मीठा लगसी मोमिनों, औरों लगसी सखत सुकन।।७ ।।

इस तरह से कितने हिसाब बताऊं जो कुरान में लिखे हैं। यह वाणी मोमिनों को प्यारी लगेगी और सबको कठोर वचन लगेंगे।

ए कह्या आयतों हदीसों, जिन सिर आखिरी खिताब।
जाहेर देखावें दिन कर, खोल माएने मगज किताब।।८ ।।

आयतों, हदीसों में कहा है कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज को यह रहस्य खोलने का अधिकार है। वही इस कुरान के भेदों को खोलकर सबके अज्ञान को मिटाकर दिन जैसा उजाला कर देंगे।

यों दिन बका जाहेर हुआ, तब देखसी सब निसान।
नजरों आवसी कयामत, होसी रोसन सबों पेहेचान।।९ ।।

इस तरह से अखण्ड ज्ञान जाहिर होने पर सब कुरान के निशानों की पहचान हो जाएगी और सभी कयामत को देखने लगेंगे। सबको संसार की कायमी समझ आने लगेगी।

कहे बिगर ना रेहे सकों, जो हक हादी फुरमाए।
हक बका के अर्सों के, पट महंमद मसी खोलाए।।१० ।।

श्री श्यामाजी ने मूल-मिलावा में जो वायदे किए थे, श्री महामतिजी कहते हैं, मैं उनको कहे बिना नहीं रह सकती। श्री राजजी महाराज के अखण्ड घरों अक्षरधाम और परमधाम के परदे आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी और श्री श्यामा महारानी ने खोल दिए हैं।

ए इसारतें कोई न समझया, ना तो जाहेर दई बताए।
कह्या गुनाह किया अजाजीलें, सो सब दिलों करी खताए।।११ ।।

कुरान में लिखा है कि अजाजील ने गुनाह किया, इसलिए दुनियां के सब जीवों के दिलों पर गुनाह लगा। इन इशारतों को कोई नहीं समझता था, जबकि यह बात बता दी गई कि अजाजील सबके दिलों पर बैठा है।

Nijanand App

अव्वल आए कही महंमदें, कह्या आगूं होसी बड़े निसान।
सो भी वास्ते रूह मोमिनों, देख के ल्यावें ईमान।। १२ ।।

मुहम्मद साहब ने पहले से ही आकर कहा कि आगे कयामत के बड़े-बड़े निशान जाहिर होंगे। वह भी रूह मोमिनों के वास्ते ताकि वह देखकर ईमान ला सकें।

जबराईल साथ रसूल के, आया बीच अव्वल।
कुरान ल्याया बीच रात के, चलाया सरा अमल।। १३ ।।

रसूल साहब के साथ सबसे पहले जबराईल फरिश्ता आया। उनकी संगति से ही वह रात के बीच कुरान का ज्ञान लाया और शरीयत का धर्म चलाया।

एक जबराईल फरिस्ता, और महंमद पैगंमर।
राह देखाई मोमिनों, अर्स चढ़ उतर।। १४ ।।

जबराईल फरिश्ते ने और दूसरे रसूल साहब ने मोमिनों को परमधाम से आने-जाने का रास्ता बताया।

जबराईल नूर मकान लग, आगूं न सक्या चल।
ना तो ल्यावने वाला मुसाफका, कहे आगूं जाऊं तो जाए पर जल।। १५ ।।

जबराईल फरिश्ता की हद अक्षरधाम तक है। वह आगे नहीं चल सका। वरना मुहम्मद साहब की संगति से कुरान जैसा महान ज्ञान लाने वाला फरिश्ता कहता है कि आगे जाऊंगा तो मेरे पर जल जाएंगे।

जबराईल जबरूत से, याकी असल नूर मकान।
सोहोबत करी महंमद की, तो ल्याया हक फुरमान।। १६ ।।

जबराईल फरिश्ता की असल रूह अक्षरधाम में रहती है। यह तो मुहम्मद साहब की संगति से ही श्री राजजी महाराज का आदेश (कुरान) को लाया।

जो रूह अर्स महंमद की, तिनको न सक्या पेहेचान।
तो न आया बड़े नूर में, छोड़या न नूर मकान।। १७ ।।

यह जबराईल फरिश्ता मुहम्मद साहब की पहचान नहीं कर सका कि यह परमधाम के हैं, इसलिए अक्षरधाम को छोड़कर परमधाम नहीं जा सका।

चल न सक्या जबराईल, रह्या हद जबरूत।
मासूक कह्या महमंद को, तो पोहोंच्या बका हाहूत।। १८ ।।

जबराईल फरिश्ता अक्षरधाम तक ही रह गया। आगे नहीं चल सका। श्री राजजी महाराज ने मुहम्मद को माशूक कहा है, इसलिए मुहम्मद साहब मूल-मिलावे में पहुंच गए।

सो ए वतन रूह मोमिनों, जित पोहोंच्या न जबराईल।
एक महंमद संग आखिरी, बीच पोहोंच्या असराफील।। १९ ।।

यह मोमिनों का वही अखण्ड घर है जहां जबराईल फरिश्ता नहीं जा सकता। मुहम्मद साहब के साथ में इनके स्वरूप की पहचान कर एक असराफील फरिश्ता ही परमधाम गया।

Nijanand App

इत और न कोई पोहोंचिया, ए हक हादी मोमिनों वतन।
तो असराफील आइया, करने बका सबन।। २० ।।

परमधाम श्री राजश्यामाजी और रूहों का अखण्ड घर है जहां आज दिन तक कोई नहीं पहुंचा। अब श्री प्राणनाथजी ने दुनियां को अखण्ड करना था तो असराफील फरिश्ता परमधाम के अन्दर आ सका।

महंमद सिफायत सब को, कुल्ल सैयन महंमद नूर।
सो बिन फरिस्ते क्यों होवहीं, तो लिया बीच रूह हजूर।। २१ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के ही अंग सब मोमिन हैं, इसलिए उन की मेहर सभी के ऊपर है। श्री राजजी महाराज ने रूहों के बीच जागृत ज्ञान देने के लिए ही असराफील फरिश्ते को अन्दर बुलाया। बिना इश्क के यह सम्भव कैसे होता?

तो अव्वल आखिर महंमद, महंमद सब अवसर।
सब नूर इनका कह्या, कोई बखत न इन बिगर।। २२ ।।

मुहम्मद के वास्ते ही सब संसार बना, इसलिए मुहम्मद की सभी समय (अव्वल, बीच और आखिर) की लीला है। सब इन्हीं के नूर से ही हैं। पूरा परमधाम और संसार का खेल सब मुहम्मद के नूर से ही है। कोई वक्त, कोई भी चीज इनके बगैर नहीं है।

साथ महंमद मेंहेंदी असराफील, ले मगज मुसाफी बल।
तो आया बीच अर्स अजीम के, पोहोंच्या बीच बड़े नूर असल।। २३ ।।

रसूल साहब के साथ असराफील फरिश्ता परमधाम के अन्दर गया। हकीकत और मारफत का ज्ञान लेकर मुहम्मद साहब के साथ इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के अन्दर आया।

ना तो असराफील है नूर का, क्यों फरिस्ता सके आगे आए।
पर मगज मुसाफी नूरमें, रूह महंमद लिया मिलाए।। २४ ।।

वरना असराफील फरिश्ता भी अक्षरधाम का है वह भी परमधाम के अन्दर नहीं आ सकता था, पर मुहम्मद साहब के अन्दर बैठकर रंग महल के अन्दर जाकर हकीकत और मारफत का ज्ञान लिया।

ए नूरी तीनों फरिस्ते, इनों की असल एक।
ए किया महंमद मोमिनों वास्ते, हक इलमें पाइए विवेक।। २५ ।।

असराफील, जबराईल और अजाजील तीनों की परआतम एक ही ठिकाने की है। श्री श्यामाजी महारानी और मोमिनों की लीला के वास्ते ही यह अलग-अलग हुए। जिसकी जानकारी जागृत बुद्धि के ज्ञान से मिलती है।

कह्या सिजदा कर आदम पर, जो सब के अव्वल आदम।
अजाजीलें देख्या आपको, तो न पकड़े रसूल कदम।। २६ ।।

खुदा ने अजाजील को आदेश दिया कि संसार के पहले आदमी आदम (आदि नारायण) पर सिजदा करो। अजाजील ने अपनी शक्ति को देखा कि मैं संसार का मालिक हूं। इस अहंकार में आकर आदि नारायण पर सिजदा न करने पर लानत लगने से सब इन्सानों के दिल और आंख में बैठा है, इसलिए सारी दुनियां ने (मोमिनों के सिवाय) श्री प्राणनाथजी के संसारी वजूद को देखा और पहचान नहीं की।

Nijanand App

हकें आप पढ़ाइया, अंगुली से आदम को।
दे इलम नाम पढ़ाए, सक न सुभे इनमों।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज ने स्वयं उंगली के इशारे मात्र से आदम को ज्ञान दिया। अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर सब संसार की हकीकत बताई। इसमें जरा भी शक और संशय नहीं है।

हुकम हुआ आदम को, कहे फरिस्तों आगे नाम।
करें तुझ पर सिजदा हैयाती, मिलकर सब तमाम।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज ने इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को हुकम किया कि सब मोमिनों और ईश्वरी सृष्टि के आगे अपनी पहचान करा दो। यह सभी मिलकर तुम्हारे ऊपर ईमान लाएंगे और सिजदा बजाएंगे।

सो पढ़े कहें नाम आदमें, जाहेर किए सब पर।
तब फरिस्तों किए सिजदे, एक अबलीस बिगर।। २९ ।।

दुनियां के पढ़े-लिखे लोग कहते हैं कि आदि आदम ने यह सब बातें दुनियां में जाहिर कर दीं और तब सब फरिश्तों ने आदम पर सिजदा बजाया, परन्तु एक शैतान अबलीस ने नहीं बजाया, अर्थात् श्री प्राणनाथजी के ऊपर ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि ईमान ले आई, परन्तु जिनके दिलों पर अबलीस शैतान बैठा है, वह ईमान नहीं लाई।

जो किए होते एते सिजदे, ऊपर उस आदम।
जाको हक करें एता बड़ा, सो क्यों रद करे हुकम।। ३० ।।

कहते हैं कि अजाजील ने खुदा के ऊपर बहुत सिजदे बजाए थे। फिर जिस आदम के ऊपर सिजदा बजाने के लिए खुदा हुकम करें और अजाजील, इतने बड़े फरिश्ते ने कैसे इन्कार कर दिया।

हैयात हुए के होसी आखिर, जो हुए नाम जाहेर सब पर।
तो बूझ हैयाती दुनियां, ए सरे से छिपी रही क्यों कर।। ३१ ।।

जो लोग अखण्ड हो गए उनके नाम दुनियां में जाहिर हैं और कुछ लोग आखिरत में अखण्ड होंगे। यह बात सबने समझ ली, मगर दुनियां कब अखण्ड होगी, शरा के काजियों से यह कैसे छिपा रह गया?

ए किस्से आखिरत के, पढ़े डारें गुजरों में।
काम कयामत का रोसन, होसी इन किस्सों से।। ३२ ।।

यह कुरान की सब बातें आखिर में अभी होने वाली हैं। दुनियां के विद्वान कहते हैं कि कुरान की यह बातें हो गई हैं। श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान के किस्सों से ही कयामत की जानकारी मिलेगी।

जो हक के सब फरिस्ते, किया सिजदा आदम पर।
तो अबलों तिन हुकम से, सरा होत नहीं मुनकर।। ३३ ।।

यदि श्री राजजी महाराज के सभी मोमिनों और ईश्वरीसृष्टि ने इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज के स्वरूप की पहचान कर सिजदा किया होता तो शरीयत के मानने वाले इमाम मेंहेंदी के जाहिर होने से मुनकर कैसे होते?

Nijanand App

कहूं हकीकत फरिस्तों, मोमिनों करो पेहेचान।
तबक चौदे फरिस्ते, तिल जेता न खाली मकान।। ३४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं सब देवी-देवताओं की हकीकत बताती हूं। हे मोमिनो! तुम इन्हें पहचान कर देखो। चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में एक तिलभर जगह खाली नहीं है, जहां अजाजील और उसके देवी-देवता न हों।

जेता कोई फरिस्ता, बीच हैवान या इनसान।
बिना फरिस्ते जरा नहीं, बीच जिमी या आसमान।। ३५ ।।

जानवरों में या इन्सानों में, जमीन और आसमान में और देवी-देवताओं में जितने भी फरिश्ते हैं, इन सबके अन्दर अजाजील का ही जीव बैठा है।

एक छोटी बड़ी बूंद पानी की, सो भी फरिस्ता सब ल्यावत।
या जड़ों दरखतों फरिस्ते, या पर पेट पांउं चलत।। ३६ ।।

पानी की छोटी-बड़ी बूंद का लाने वाला भी यही अजाजील फरिश्ता है। संसार के जड़ वृक्ष या पेट से चलने वाले सांप या पांव से चलने वाले जानवरों में अजाजील (विष्णु भगवान) समाया है।

देखो सहूर कर मोमिनों, हक के सब फरिस्ते।
ए बखत करसी आखिर, किन नबी पर किए सबों सिजदे।। ३७ ।।

हे मोमिनो! तुम अब विचार कर देखो कि श्री राजजी महाराज के इन सब फरिश्तों में से किस किसने इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के चरणों में प्रणाम किया। यह बातें आखिर में जाहिर होंगी।

पेहेचानो अजाजील को, सिजदा न किया आदम पर।
दूर हुआ ले लानत, सो सबों लगी क्योंकर।। ३८ ।।

अब अजाजील को पहचानो, जिसने आदम पर सिजदा नहीं किया था और उसे लानत लगी थी। वही दुनियां वालों को क्यों लगी ?

फरिस्तों अजाजील सिरदार, अबलीस जिनों वकील।
पोहोंचाया सबों सय दिलों, पलक न करी ढील।। ३९ ।।

इस सब दुनियां में अजाजील (विष्णु भगवान) ही सबका परमात्मा है, जिसका अबलीस शैतान (नारद) ही वकील है, इसलिए उसने एक पल भर की देरी भी न करते हुए सब मानवों के दिलों में कुफ्र भर दिया।

ना किया अजाजीलें सिजदा, तो सब रहे सिजदे बिन।
सब दुनियां ताबे तिन के, ताथें किया न सिजदा किन।। ४० ।।

आदम के ऊपर जब अजाजील ने सिजदा नहीं किया तो बाकी दुनियां वाले भी सिजदा नहीं कर सके, क्योंकि दुनियां सब अजाजील के अधीन है, इसलिए किसी ने सिजदा नहीं किया।

तो लानत हुई तिन को, वजूद देख गया भूल।
देख्या न तरफ रूह की, वह तो हक का नूरी रसूल।। ४१ ।।

जैसे अजाजील आदम के तन देखकर भूल गया, इसी तरह श्री प्राणनाथजी के स्वरूप को देखकर संसार की सारी दुनियां भूल गई और पहचान नहीं कर सकी, क्योंकि श्री राजजी महाराज के नूरी अंग रसूल साहब हैं।

Nijanand App

हकें आदम कह्या रसूल को, वह तो अबलीसें किया ख्वार।
गेहूं खिलाए काढ़्या भिस्त से, करके गुन्हेगार।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज ने बाबा आदम को ही पैगम्बर कहा है, जिसको कुरान के किस्से के अनुसार अबलीस ने गेहूं खिलाकर गुनहगार बनाया और बहिश्त से बाहर निकलवाया।

हिरस हवा मोर सांप जिद, साथ निकस्या अबलीस ले।
क्यों हकें इन आदम पर, नूरी पे कराए सिजदे।। ४३ ।।

यह शैतान अबलीस मोर और सांप के झगड़े में हौवा को गेहूं खिलाकर गुनहगार बनाकर बहिश्त से बाहर निकाल लाया। ऐसे गुनहगार आदम के ऊपर सिजदा बजाने के लिए नूरी फरिश्ते अजाजील को क्यों आदेश देते?

जिन सब जिमी पर सिजदे, किए हक पर बेसुमार।
उन आदम के वास्ते, क्या हक नूरी को देवें डार।। ४४ ।।

जिस अजाजील फरिश्ते ने खुदा के ऊपर पूरी जमीन पर बेशुमार सिजदे बजाए हैं तो उस गुनहगार आदम के वास्ते खुदा अजाजील को क्यों लानत देते?

एता देखाया जाहेर कर, दई नूरी को लानत।
दुनी तो न खोले आंख दिल, जो असल पैदा जुलमत।। ४५ ।।

यह बातें साफ कुरान में लिखी हैं कि नूरी फरिश्ते को लानत है। दुनियां जो निराकार से पैदा है वह अपने दिल की आंखें खोलकर इस बात को नहीं समझती।

जो लों ले ऊपर के माएने, दुनी छूटे न उपली नजर।
तो भी न लेवें बातून, जो यों लिख्या जाहेर कर।। ४६ ।।

जब तक ऊपर के मायने देखेंगे, तब तक माया की दृष्टि नहीं छूटेगी। ऐसा साफ लिखा होने पर भी बातूनी अर्थ नहीं लेते।

तो कह्या मजाजी दिल को, गोस्त का टुकड़ा।
तिन दिलों पातसाह दुस्मन, और दिल तो कह्या मुरदा।। ४७ ।।

इसलिए दुनियां वालों का दिल मजाजी, अर्थात् गोश्त का टुकड़ा कहा है। जिनके दिलों में बादशाही अबलीस की है, इसलिए दुनियां वालों को मुर्दा दिल कहा है।

कही लानत अजाजील को, सो लगी सब दुनियां को।
एती फरिस्ते की पाक बंदगी, क्यों दुनी मारी जाए इनसों।। ४८ ।।

अजाजील की लानत इसलिए सारी दुनियां को लग गई वरना अजाजील फरिश्ता जिसने इतने सिजदे बजाए हों, उसके कारण दुनियां को नुकसान नहीं होना चाहिए था।

गुनाह एक अबलीस के, क्यों सब दुनी मारी जाए।
पाक सरा हक अदल, सो ऐसे क्यों फुरमाए।। ४९ ।।

गुनाह तो एक अबलीस ने किया तो सब दुनियां को सजा क्यों मिले? खुदा की सच्ची अदालत में ऐसा न्याय क्यों हुआ?

Nijanand App

पाक फरिस्ते पाक सिजदे, बेसुमार किए हक पर।
तिन बदले दुनी को दोजख, क्यों देवें कादर।।५० ।।

अजाजील फरिश्ता पाक (साफ) था। उसके बेशुमार सिजदे जो उसने खुदा पर किए, पाक थे। उसके बदले में खुदा जो समर्थ हैं, दुनियां को दोजख की अग्नि में क्यों डालेंगे?

जो न लेवें हकीकत, नजर खोल बातन।
तो लों अंधेरी ना मिटे, दिल होए नहीं रोसन।।५१ ।।

जब तक बातूनी नजर को खोलकर हकीकत के ज्ञान को नहीं समझेंगे, तब तक अज्ञानता की अंधेरी नहीं मिटेगी और ज्ञान नहीं आएगा।

ए कलाम नजूम और बातून, माहें हक हकीकत।
हक इलमें खोले रूह नजर, तब दिन ऊगे बका मारफत।।५२ ।।

इन वचनों में श्री राजजी महाराज की हकीकत के बातूनी रहस्य छिपे हैं। जब श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से रूह की नजर खुल जाए तब समझो अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय हो गया।

ए तीनों फरिस्ते नूर से, हुए पैदा तीनों तालब।
जिन जैसा चीन्हा महंमद को, तिन तैसा पाया मरातब।।५३ ।।

यह असराफील, जबराईल और अजाजील अक्षर से हैं। वह रूहों के खेल देखने की चाहना के कारण ही संसार में आए। इन तीनों ने आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के स्वरूप को जिसने जिस रूप में पहचाना, उसे वैसा ही फल मिला।

जिन जैसी करी दोस्ती, तिन तैसी पाई बकसीस।
दूर नजीक या अन्दर, देखो माएने आयत हदीस।।५४ ।।

इन तीनों में से जिसने जिस तरह से श्री प्राणनाथजी से दोस्ती की, उनको वैसी ही बख्शीश मिली। अजाजील को दूर किया। जबराईल को नजदीक किया। असराफील को अन्दर बिठा लिया। कुरान की आयतों और हदीसों के मायनों को समझो।

बंदगी का फल मांगिया, नूरी फरिस्ते हक पे।
तिन बदले दुनी सब दोजख, क्यों डारी जाए आगमें।।५५ ।।

नूरी फरिश्ता अजाजील ने श्री राजजी महाराज से अपनी बन्दगी का फल मांगा कि आदम की औलाद के दिलों पर मेरी बादशाही कर दें, तो फिर उसके बदले में दुनियां को दोजख की अग्नि में क्यों जलाया जाए?

ए इन्साफ सरा ना करे, दुरस्त माएने बातन।
उपले माएने ले आप सिर, सिफत जो मोमिन।।५६ ।।

बातून के हकीकी मायनों में ऐसा इन्साफ शरीयत नहीं करती। दुनियां वाले मोमिनों की सिफत को ऊपरी मायनों से अपने सिर पर लिए बैठे हैं।

ना तो अजाजील भी नूर से, दे गुमाने डारया दूर।
एक रह्या दरम्यान में, एक माहें आया हजूर।।५७ ।।

वरना अजाजील फरिश्ता भी अक्षर का फरिश्ता है, जिसे अहंकार के कारण दूर फेंक दिया गया। एक जबराईल फरिश्ता बीच में रहा और एक मूल-मिलावे में असराफील श्री राजजी के सामने पहुंच गया।

Nijanand App

हकें महंमद मोमिनों वास्ते, कई मेहेर कर खेल देखाए।
एक दूर किए इनों वास्ते, एक नजीक लिए बोलाए।।५८ ।।

श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी और मोमिनों को मेहर करके यह खेल दिखाया। इनके वास्ते ही एक फरिश्ते अजाजील को दूर भेजा और असराफील फरिश्ते को अपने पास बुला लिया।

मोमिनों की सरीयत में, आया मैकाईल बुध बल।
पीछे बीच हकीकत, आया जबराईल सामिल।।५९ ।।

मोमिनों की शरीयत में संसार की बुद्धि का फरिश्ता ब्रह्मा आया और हकीकत का ज्ञान लेकर जबराईल फरिश्ता भी साथ में चल पड़ा।

आखिर आए असराफीलें, खोले मुसाफ मारफत द्वार।
दिन बका किया जाहेर, खोले अर्स अजीम नूर पार।।६० ।।

आखिर में असराफील ने आकर कुरान के मारफत के ज्ञान के दरवाजे खोल दिए। अक्षर के पार अखण्ड परमधाम को संसार में जाहिर कर दिया।

महामत कहे ए मोमिनों, कही हकीकत फरिस्तों।
अब कहूं कजा और फितना, जो उठया बरारब मों।।६१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने यह फरिश्तों की हकीकत बताई है। अब न्याय की और झगड़े की हकीकत बताती हूं जो बरारब में उठी।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ४२८ ।।

बाब कजाका

जैसा अमल रात का, चाहिए ज्यों चलाया।
बीच सरे जबराईलें, किया हक का फुरमाया।। १ ।।

अज्ञान के अंधेरे में श्री राजजी महाराज के फुरमान के अनुसार जबराईल फरिश्ते ने शरीयत का शासन चलाया।

रसूलें सरा रात का, चलाया हक अदल।
जब रसूल जबराईल ले चले, तब क्यों चले अदल अमल।। २ ।।

अज्ञान के अंधेरे में श्री राजजी महाराज का सच्चा न्याय रसूल साहब ने चलाया। जब रसूल साहब और जबराईल चले गए, तो फिर सच्चा न्याय कैसे चले?

कजा कही तीन सकस की, एक भिस्ती दोए दोजख।
भिस्ती हक को चीन्ह के, अदल कजा करी हक।। ३ ।।

कुरान में तीन लोगों के न्याय का वर्णन है। जिनमें एक को बहिश्त मिली, दो को दोजख की अग्नि में जलना पड़ा। जिनको बहिश्त मिली, उन्होंने खुदा की पहचान कर ली। यही खुदा को न्याय करना था।

कही कजा दूजे सकस की, हक से करी चिन्हार।
पर अदल कजा तो भी ना हुई, तो लिख्या बीच नार।। ४ ।।

दूसरे आदमी ने भी खुदा की पहचान तो की, परन्तु सच्चा न्याय नहीं दे सका। ऐसा किताब में लिखा है।

Nijanand App

हकें महंमद मोमिनों वास्ते, कई मेहेर कर खेल देखाए।
एक दूर किए इनों वास्ते, एक नजीक लिए बोलाए।। ५८ ।।

श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी और मोमिनों को मेहर करके यह खेल दिखाया। इनके वास्ते ही एक फरिश्ते अजाजील को दूर भेजा और असराफील फरिश्ते को अपने पास बुला लिया।

मोमिनों की सरीयत में, आया मैकाईल बुध बल।
पीछे बीच हकीकत, आया जबराईल सामिल।। ५९ ।।

मोमिनों की शरीयत में संसार की बुद्धि का फरिश्ता ब्रह्मा आया और हकीकत का ज्ञान लेकर जबराईल फरिश्ता भी साथ में चल पड़ा।

आखिर आए असराफीलें, खोले मुसाफ मारफत द्वार।
दिन बका किया जाहेर, खोले अर्स अजीम नूर पार।। ६० ।।

आखिर में असराफील ने आकर कुरान के मारफत के ज्ञान के दरवाजे खोल दिए। अक्षर के पार अखण्ड परमधाम को संसार में जाहिर कर दिया।

महामत कहे ए मोमिनों, कही हकीकत फरिस्तों।
अब कहूं कजा और फितना, जो उठया बरारब मों।। ६१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने यह फरिश्तों की हकीकत बताई है। अब न्याय की और झगड़े की हकीकत बताती हूं जो बरारब में उठी।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। ४२८ ।।

बाब कजाका

जैसा अमल रात का, चाहिए ज्यों चलाया।
बीच सरे जबराईलें, किया हक का फुरमाया।। १ ।।

अज्ञान के अंधेरे में श्री राजजी महाराज के फुरमान के अनुसार जबराईल फरिश्ते ने शरीयत का शासन चलाया।

रसूलें सरा रात का, चलाया हक अदल।
जब रसूल जबराईल ले चले, तब क्यों चले अदल अमल।। २ ।।

अज्ञान के अंधेरे में श्री राजजी महाराज का सच्चा न्याय रसूल साहब ने चलाया। जब रसूल साहब और जबराईल चले गए, तो फिर सच्चा न्याय कैसे चले?

कजा कही तीन सकस की, एक भिस्ती दोए दोजख।
भिस्ती हक को चीन्ह के, अदल कजा करी हक।। ३ ।।

कुरान में तीन लोगों के न्याय का वर्णन है। जिनमें एक को बहिश्त मिली, दो को दोजख की अग्नि में जलना पड़ा। जिनको बहिश्त मिली, उन्होंने खुदा की पहचान कर ली। यही खुदा को न्याय करना था।

कही कजा दूजे सकस की, हक से करी चिन्हार।
पर अदल कजा तो भी ना हुई, तो लिख्या बीच नार।। ४ ।।

दूसरे आदमी ने भी खुदा की पहचान तो की, परन्तु सच्चा न्याय नहीं दे सका। ऐसा किताब में लिखा है।

Nijanand App

तीसरे जो कजा करी, अपनी जाहिल अकल।
सो तो कह्या दोजखी, आगे कजा न सकी चल।।५ ।।

तीसरे आदमी ने जो न्याय का काम किया वह अपनी मूर्ख बुद्धि से किया, इसलिए इसको दोजख की आग में जलना पड़ा। आगे न्याय का काम बन्द होगा, अतः कजा (न्याय) नहीं मिल सकी।

कह्या साहेदी भी रवा नहीं, जिन को नहीं ईमान।
और रवा नहीं खूनी की, ना रवा खुदी गुमान।।६ ।।

जिनका ईमान सच्चा नहीं उनकी गवाही भी लेनी ठीक नहीं। खूनी आदमी की तथा अभिमानी आदमी जिनको अहंकार है, की गवाही नहीं लेनी चाहिए।

कही अदल यों साहेदी, कहां साहेद पाइए सोए।
इन जमाने नुकसानमें, अदल कजा क्यों होए।।७ ।।

कुरान में न्याय का और गवाहों का इस तरह ब्यौरा लिखा है वह वहां से लें तो फिर इस झूठे जमाने में सच्चा न्याय कैसे किया जाए?

अब्दुल्ला बिन उमरें, छोड़ कजा दिया जवाब।
सोए लिख्या बीच हदीसों, सुनो तिनों का सवाब।।८ ।।

उमर के बेटे अब्दुल्ला ने न्यायाधीश का काम छोड़ दिया। यह बात हदीस में लिखी है। उसका फल सुनो।

कहे उस्मान सुन अब्दुल्ला, कजा करता था उमर।
सो तो तेरी वारसी, तूं छोड़े क्यों कर।।९ ।।

उस्मान ने अब्दुल्ला से कहा कि तेरे पिता उमर न्यायाधीश थे। उस पर तेरा वारिसाना अधिकार है। तू न्याय का काम क्यों छोड़ रहा है?

कहे अब्दुल्ला उस्मान को, कजा न मुझ से होए।
मैं पाई खबर रसूल से, कर सकसी ना अदल कोए।।१० ।।

अब्दुल्ला ने उस्मान को जवाब दिया कि न्याय का काम मुझसे नहीं होगा। मुझे रसूल साहब से पता चला कि आगे न्याय का काम कोई नहीं कर सकेगा।

कजा करते उमर को, कदी सूझत नाहीं सुकन।
तब पूछत जाए रसूल को, सो सब करत रोसन।।११ ।।

न्याय करते समय मेरे पिता उमर को समझ नहीं आती थी तो वह रसूल साहब के पास जाकर पूछते थे और वह सच्ची बात बता देते थे।

रसूल अदल कछू चाहते, तब जबराईल ल्यावत खबर।
तो कजा करता था उमर, जो रसूल थे सिर पर।।१२ ।।

रसूल साहब यदि न्याय के समय कुछ पूछना चाहते थे तो जबराईल खुदा के पास से खबर लाकर देता था। इस तरह से जब तक रसूल साहब की कृपा प्राप्त थी, तभी मेरे पिता उमर न्याय करते थे।

Nijanand App

बोहोत कही उस्मान ने, कजा न करी कबूल।
मैं इन्साफ अदल कर ना सकों, तो कहां पाऊं जबराईल रसूल।। १३ ।।

उस्मान ने बहुत समझाया, परन्तु अब्दुल्ला ने न्याय का काम करना पसन्द नहीं किया। उसने साफ कह दिया कि न मेरे पास रसूल साहब हैं और न जबराईल। इसलिए मैं सच्चा इन्साफ नहीं कर सकता।

कजा अदल कही हक की, सो हत चली एते दिन।
कही साहेदी इन भांत की, आगे क्यों चले रसूल बिन।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज की अदालत का सच्चा न्याय इतने दिन तक ही चला। अब गवाह भी इस तरह के सच्चे नहीं रह गए, इसलिए रसूल साहब के बाद न्याय का काम कैसे चले?

और भी देखो साहेदी, जो रसूलें फुरमाए।
जब हक ईमान तरफ देखिए, तो अब क्यों कजा करी जाए।। १५ ।।

और भी रसूल साहब ने जो कहा है उसकी तरफ देखो। साथ में जब खुदा की तरफ ईमान रखने वालों को देखते हैं, तो लगता है कि अब इन्साफ नहीं होगा।

कह्या रसूलें माज को इमन, अदल कजा करो जाए।
क्यों कर करेगा अदल, सो मोकों कहो समझाए।। १६ ।।

रसूल साहब ने माज को कहा कि तुम इमन देश में जाकर इन्साफ का काम करो। फिर माज से पूछा कि तू जाकर न्याय कैसे करेगा। मुझे बता।

तब कह्या माज बिन जबलें, करूं कजा देख मुसाफ।
कहे रसूल जो तूं अटके, तो क्यों करे इन्साफ।। १७ ।।

तो जबल के लड़के माज ने उत्तर दिया कि मैं कुरान देखकर न्याय करूंगा। रसूल साहब ने कहा अगर तू कुरान में अटक गया, तो फैसला कैसे करेगा?

सुंनत जमात राह लेय के, करूं कजा अदल।
कहे रसूल जो इत अटके, कहे करों अपनी अकल।। १८ ।।

माज ने रसूल साहब से कहा कि मैं फिर धर्म पर चलने वालों का अनुकरण कर फैसला करूंगा। रसूल साहब ने कहा कि यदि इसमें भी रुकावट आ गई। तब माज ने उत्तर दिया अपनी अक्ल से फैसला करूंगा।

तब मारया रसूलें छाती मिने, केहे के अल्हंमदो-लिल्लाह।
कही रजामंदी खुदाए की, है सिर रसूल अल्लाह।। १९ ।।

रसूल साहब ने खुदा खैर करे (अलहम्दो लिल्लाह) कहकर अपनी छाती ठोक ली। अल्लाह से विनती की कि मुझे बचाकर रखना।

ताथें अव्वल कजा महंमद लग, पीछे अदल क्यों होए।
हक तरफ का सिलसिला, क्यों कर पाइए सोए।। २० ।।

इसलिए न्याय का सिलसिला रसूल साहब तक चला। रसूल के बाद न्याय कैसे हो सकता है? खुदा की तरफ से जबराईल फरिश्ता जो जानकारी लाता था, वह कैसे मिलती?

Nijanand App

जबराईल साथ महंमद, सो तो हुए बीच परदे।
अब अदल कजा बीच दुनी के, कौन चलावे ए।। २१ ।।

जबराईल फरिश्ता मुहम्मद साहब के तन छोड़ते ही परदे में हो गया। अब दुनियां के बीच न्याय कौन चलाता?

रह्या अदल इस दिनलों, कहे हदीस महंमद।
आगे अदल ना चल सके, याही लग थी हद।। २२ ।।

रसूल साहब ने हदीस में कहा है कि न्याय करने का कार्य यहीं तक चला। आगे नहीं चला, क्योंकि खुदा का ऐसा ही आदेश था।

पीछे जमाने रसूल के, पैदा होसी बलाए बतर।
अदल न चले तिनमें, एक रसूल बिगर।। २३ ।।

रसूल साहब के जमाने के बाद हालात बद से बदतर हो गए। एक रसूल साहब के न होने से न्याय नहीं हो सका।

कह्या जमाना आवसी, झूठा और नुकसान।
यार अस्हाबों कतल, तरवार उठसी जहान।। २४ ।।

रसूल साहब ने कहा था कि झूठ और फरेब का जमाना आएगा। मेरे मानने वालों में ही कत्ल होंगे, तलवारें चलेंगी।

जब रसूल आवें फेर कर, खोलसी द्वार हकीकत।
खतम है याही पर, होवे तबहीं अदालत।। २५ ।।

जब मुहम्मद साहब फिर से हकी स्वरूप बनकर जाहिर होंगे, उस समय हकीकत के ज्ञान से सब दरवाजे खुल जाएंगे। तब दुनियां में जो जुल्म हो रहा है, वह समाप्त हो जाएगा। तब दुनियां को सच्चा न्याय मिलेगा।

सब बखतों कहे रसूल, अव्वल बीच आखिर।
कही कजा रसूल जुबांए, करे सांच सबों पैगंमर।। २६ ।।

खुदा के हुकम से ही अव्वल, बीच और आखिर में सभी मौकों पर, (अवसरों पर) रसूल का होना बताया है। आखिर के समय में मुहम्मद साहब की हकी सूरत की वाणी से पैगम्बरों को सच्चा न्याय मिलेगा।

देखावें खोल मुसाफ दिल, सक कुफर उड़ावे सबका।
कर कजा साफ अदल, सो पावे तौहीद राह।। २७ ।।

श्री प्राणनाथजी इमाम मेंहेंदी के रूप में आकर कुरान के सारे रहस्य खोल देंगे। संसार के सब कुफ्र समाप्त करके दुनियां का सच्चा न्याय करेंगे, जिससे दुनियां को एक पारब्रह्म की सच्ची राह मिल जाएगी।

कजा करे फजर कर, हकीकी अदालत।
सबों दिलों करे अदल, दिल सूर महंमद मारफत।। २८ ।।

श्री प्राणनाथजी की सच्ची अदालत में ज्ञान का सवेरा करके सबका न्याय चुकाया जाएगा। इस तरह से इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी का मारफत ज्ञान का सूर्य सबके दिलों का फैसला कर देगा।

Nijanand App

सब सय सिर महंमद की, आखिर कही हिदायत।
और छोटा बड़ा जो कोई, कही महंमद इमामत।। २९ ।।

फिर इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की जागृत बुद्धि की वाणी सबसे ऊपर होगी। फिर दुनियां में छोटे से छोटा या बड़े से बड़ा आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के दिखाए रास्ते पर चलेंगे।

नबियों सिर नबी कह्या, सिर पैगंमरों पैगंमर।
आगे होए लेसी सब को, बीच बका पट खोल कर।। ३० ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को सभी नबियों के सिरदार और सब पैगम्बरों के मालिक बताया है। जो परमधाम के सब दरवाजे खोलकर अग्रसर होकर सब को पहचान कराएंगे।

पेहेलें कबर से मैं उठूं, मेरे भाइयों की खातिर।
ज्यों काम करता हों अव्वल, त्यों करोंगा उठ आखिर।। ३१ ।।

रसूल साहब ने कहा कि सबसे पहले मैं अपने भाइयों की खातिर तन धारण करूंगा। उनके वास्ते जो काम अभी करता हूं, वैसा ही आखिर को आकर करूंगा।

मैं नजूम कह्या भाइयों वास्ते, पीछे कूच किया दुनी से।
सोई भाइयों आगे नजूम, आए खोलों मेरा मैं।। ३२ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैंने अपने भाइयों के वास्ते सभी बातों की इशारतों में भविष्यवाणी की है। उसके बाद दुनियां छोड़ी है। अब मैं अपने भाइयों के आगे अपनी छिपाई बातों को स्वयं आकर खोलूंगा।

रसूलें कह्या अबीजर को, कहां रेहेता मेरा गम।
कह्या मैं नहीं जानत, कहो रसूल अल्ला के तुम।। ३३ ।।

रसूल साहब ने अबीजर से पूछा कि मुझे सबसे अधिक किसकी चिन्ता रहती है? अबीजर ने कहा मुझे क्या मालूम है? अल्लाह के रसूल आप स्वयं बताएं।

तब फेर कह्या रसूल ने, मेरा गम है भाइयों माहें।
कहे अबीजर ऐसे भाई, सो क्या अब इत नाहें।। ३४ ।।

तब रसूल साहब ने कहा कि मुझे अपने भाइयों की चिन्ता है। तब अबीजर ने कहा कि क्या आपके वह भाई अभी यहां नहीं हैं?

रसूल कहे आखिर आवसी, कह्या क्यों पेहेचानों तिन।
कहे बड़ी सिफत है तिन की, वाकी पेसानी रोसन।। ३५ ।।

रसूल साहब ने कहा कि मेरे भाई आखिर में आएंगे। तो अबीजर ने पूछा कि मैं उनको कैसे पहचान सकूंगा? तो रसूल साहब ने कहा उनकी महिमा बहुत भारी है। उनके चेहरे चमकते होंगे।

तब अबाबकर यारों कह्या, क्या भाई न तुमारे हम।
रसूल कहे भाई और हैं, यार हमारे तुम।। ३६ ।।

तब अबूबक्र यार ने कहा कि क्या हम आपके भाई नहीं हैं? तो रसूल साहब ने कहा कि भाई हमारे और हैं। तुम हमारे यार हो।

Nijanand App

जो हकें इलम मोहे दिया, सो देसी इमाम भाइयों को।
बलाए दफे दुनी रिजक, सो भी हक करें वास्ते इनों।। ३७ ।।

खुदा ने जो ज्ञान मुझे दिया है, वैसे ही जागृत बुद्धि की वाणी मेरे भाइयों को इमाम मेंहेंदी आकर देंगे। वह खास मोमिनों के कष्ट और बलाओं को दूर करेंगे। वह भी श्री राजजी महाराज स्वयं इनके वास्ते ही दुनियां का रिजक (पालन-पोषण) और सब प्रबन्ध करेंगे।

बिन खुदी बिन गुमान, और साफ दिल ईमान।
सरे दो साहेद चाहिए, ऐसे सिदक मुसलमान।। ३८ ।।

उनके अन्दर अहंकार नहीं होगा। साफ दिल वाले होंगे। ईमान वाले होंगे। ऐसे धर्मनिष्ठ मोमिन ही न्याय के समय गवाही के रूप में (दो) गवाह चाहिए।

ऐसे तो पाइए बीच फजर, जो अर्स दिल कहे मोमिन।
करें कजा मुसाफ ले, सो भी बीच गिरो इन।। ३९ ।।

जिन मोमिनों के दिल को अर्श कहा है, वह फजर के वक्त आएंगे और फिर तारतम वाणी से मोमिनों में बैठकर सब दुनियां का न्याय चुकाएंगे।

तो कजा उतलों अटकी, ताही दिन बदल्या बखत।
रसूल खड़े थे ले सिदक, पीछे उठे फितुए आखिरत।। ४० ।।

यह न्याय का काम तब तक रुका रहा। श्री प्राणनाथजी के आते ही समय बदल गया। रसूल साहब के बाद जो झगड़े-विवाद खड़े हो गए थे, वह बन्द हो गए।

पीछले सरे दीन मनसूख, सबों किए जो थे बीच रात।
आए पैगंमर सब इत, कर दिन उड़ाई जुलमात।। ४१ ।।

श्री प्राणनाथजी के जाहिर होने से पहले जितने धर्म-पंथ चल रहे थे, सबको रद्द कर दिया। सब धर्मों के चलाने वाले पैगम्बरों का ज्ञान समाप्त कर दिया। वह सब श्री प्राणनाथजी के अन्दर आ गए।

ए सिपारे उनतीसमें, सब लिखे हैं सुकन।
ए बेवरा करे लदुन्नी, वारस जो अर्स तन।। ४२ ।।

यह वचन कुरान के उन्तीसवें सिपारे में लिखे हैं। कुरान के जो वारिस मोमिन हैं, वही तारतम वाणी से इसका विवरण समझ सकेंगे।

सांचे साहेद इन उमतें, हककी कजा अदल।
यों कजा महंमद जुबांए, करें सिफायत अर्स दिल।। ४३ ।।

सच्चे गवाह इन मोमिनों की जमात में ही मिलेंगे, जिससे खुदा का न्याय आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की जबान से सच्चा होगा, जिसकी प्रशंसा मोमिन जिनको अर्श दिल कहा है, करेंगे।

एक दीन होसी याही से, द्वार खोले हकीकत।
दिन देख सिपारे तीसरे, डूबी खुदी रात जुलमत।। ४४ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ही हकीकत के सारे दरवाजे खोलकर सबको एक दीन निजानन्द सम्प्रदाय में लाएंगे। कुरान के तीसरे सिपारे में फजर के दिन, न्याय के दिन का बयान है, जिसे देखकर भी दुनियां अन्धकार में डूबी है।

Nijanand App

मैं मैं करता रात का अमल, कह्या गैर हक था नाबूद।
सूर ऊगे मारफत सब मिले, हुआ सबों मकसूद।। ४५ ।।

अन्धकार में चलने वाले सभी धर्म, पन्थ, पैंडे झूठे और नाचीज थे। मारफत के ज्ञान का सूर्य उदय होने से अब सब मिलकर प्राणनाथजी के पास आ रहे हैं और सबकी इच्छाएं पूरी की जा रही हैं।

मोमिन नजीकी हक के, जाको हकें दई विलायत।
नूर पार जाको वतन, करें आखिर अदालत।। ४६ ।।

मोमिन (रूहें) खुदा के नजदीकी कहे जाते हैं। इनको श्री राजजी महाराज ने परमधाम दे रखा है। जिनका घर अक्षर के पार परमधाम है, वही सच्चा न्याय अन्त में करेंगे।

विलायत दई हकें इनको, यासों चीज पाइए इसलाम।
तो हिजाब न आड़े वजूद, हिजाब न आड़े काम।। ४७ ।।

श्री राजजी महाराज ने इन मोमिनों को ही परमधाम (विलायत) के अखण्ड सुख दे रहे हैं, इसलिए सच्चे दीन (धर्म) की बातें इनसे ही मिलेंगी। इनके शरीर और काम करने के तरीकों में खुदा के बीच कोई परदा नहीं रह जाएगा।

हिजाब न रह्या बीच फकीरी, ऐसा हक इलम बेसक।
यों नजीक खुदाए के, अदल कजा करे हक।। ४८ ।।

मोमिन ऐसे फकीर होंगे कि जागृत बुद्धि की वाणी से निःसन्देह होकर इनके और खुदा के बीच परदा नहीं होगा। इस तरह से खुदा के नजदीकी होने से सबको सच्चा न्याय देंगे।

महामत कजा अदल, करे रसूल तीन सूरत।
बसरिएं मांग्या जिदनी इलम, कजा हकी सूरत जुबां कयामत।। ४९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मुहम्मद साहब की तीन सूरतें ही बसरी, मलकी और हकी दुनियां को सच्चा न्याय देंगी। बसरी सूरत ने तो वास्तविक संसार का न्याय किया और हकी सूरत के ज्ञान से सारी दुनियां का न्याय कर सब को अखण्ड मुक्ति मिली।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ४७७ ।।

बाब फितनेका

मांगी रसूलें रेहेमत, जिमी स्याम इमन।
तब अर्ज करी आरबों, नबी दिया न जवाब तिन।। १ ।।

रसूल साहब ने अल्ला ताला से विनती की कि स्याम इमन (भारतवर्ष) की जमीन पर कृपा करना। तब अरब के लोगों ने रसूल साहब से विनती की, जिसका उत्तर रसूल साहब ने कोई नहीं दिया।

फेर मांगी रसूलें रेहेमत, जिमी स्याम इमन को।
तब फेर अर्ज करी आरबों, क्या है बरारबमों।। २ ।।

रसूल साहब ने दुबारा स्याम इमन (भारत) के रहने वालों के लिए खुदा से कृपा मांगी। तब अरब के रहने वालों ने विनती की, हे रसूल साहब! अरब में क्या है?

Nijanand App

मैं मैं करता रात का अमल, कह्या गैर हक था नाबूद।
सूर ऊगे मारफत सब मिले, हुआ सबों मकसूद।। ४५ ।।

अन्धकार में चलने वाले सभी धर्म, पन्थ, पैंडे झूठे और नाचीज थे। मारफत के ज्ञान का सूर्य उदय होने से अब सब मिलकर प्राणनाथजी के पास आ रहे हैं और सबकी इच्छाएं पूरी की जा रही हैं।

मोमिन नजीकी हक के, जाको हकें दई विलायत।
नूर पार जाको वतन, करें आखिर अदालत।। ४६ ।।

मोमिन (रूहें) खुदा के नजदीकी कहे जाते हैं। इनको श्री राजजी महाराज ने परमधाम दे रखा है। जिनका घर अक्षर के पार परमधाम है, वही सच्चा न्याय अन्त में करेंगे।

विलायत दई हकें इनको, यासों चीज पाइए इसलाम।
तो हिजाब न आड़े वजूद, हिजाब न आड़े काम।। ४७ ।।

श्री राजजी महाराज ने इन मोमिनों को ही परमधाम (विलायत) के अखण्ड सुख दे रहे हैं, इसलिए सच्चे दीन (धर्म) की बातें इनसे ही मिलेंगी। इनके शरीर और काम करने के तरीकों में खुदा के बीच कोई परदा नहीं रह जाएगा।

हिजाब न रह्या बीच फकीरी, ऐसा हक इलम बेसक।
यों नजीक खुदाए के, अदल कजा करे हक।। ४८ ।।

मोमिन ऐसे फकीर होंगे कि जागृत बुद्धि की वाणी से निःसन्देह होकर इनके और खुदा के बीच परदा नहीं होगा। इस तरह से खुदा के नजदीकी होने से सबको सच्चा न्याय देंगे।

महामत कजा अदल, करे रसूल तीन सूरत।
बसरिएं मांग्या जिदनी इलम, कजा हकी सूरत जुबां कयामत।। ४९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मुहम्मद साहब की तीन सूरतें ही बसरी, मलकी और हकी दुनियां को सच्चा न्याय देंगी। बसरी सूरत ने तो वास्तविक संसार का न्याय किया और हकी सूरत के ज्ञान से सारी दुनियां का न्याय कर सब को अखण्ड मुक्ति मिली।

|| प्रकरण || ६ || चौपाई || ४७७ ||

बाब फितनेका

मांगी रसूलें रेहेमत, जिमी स्याम इमन।
तब अर्ज करी आरबों, नबी दिया न जवाब तिन।। १ ।।

रसूल साहब ने अल्ला ताला से विनती की कि स्याम इमन (भारतवर्ष) की जमीन पर कृपा करना। तब अरब के लोगों ने रसूल साहब से विनती की, जिसका उत्तर रसूल साहब ने कोई नहीं दिया।

फेर मांगी रसूलें रेहेमत, जिमी स्याम इमन को।
तब फेर अर्ज करी आरबों, क्या है बरारबमों।। २ ।।

रसूल साहब ने दुबारा स्याम इमन (भारत) के रहने वालों के लिए खुदा से कृपा मांगी। तब अरब के रहने वालों ने विनती की, हे रसूल साहब! अरब में क्या है?

Nijanand App

तब फुरमाया रसूल ने, है फितना सोर तुम माहें।
स्याम इमन जिमी बचोगे, और खैर काहूं नाहें।। ३ ।।

तब रसूल साहब ने फरमाया कि तुम्हारे बीच झगड़ा-फसाद होने वाला है। भारतवर्ष में ही जाकर बचोगे और कहीं ठिकाना नहीं है।

सोए देखोगे जाहेर, मेरे पीछे बीच करन।
सोई पातसाही यारों की, होसी फितना बीच खलीफन।। ४ ।।

मेरे जाने के बाद यहां अंधेरा छा जाएगा। मेरे जाने के बाद गादी के लिए, यारों में बादशाही के वास्ते झगड़े होंगे।

रसूल खड़े टेकरी पर, कह्या देखत यारो तुम।
कह्या हक जानें या रसूल, जानत नाहीं हम।। ५ ।।

रसूल साहब टेकरी (टीला) पर खड़े थे। उन्होंने यारों से पूछा कि तुम क्या देख रहे हो? यारों ने उत्तर दिया कि खुदा जानता है या आप जानते हैं। हम नहीं जानते।

तब कह्या रसूलें हदीसमें, ए जो सैतान का फितना।
सो आवत बीच बरारब, मैं देखत हों इतना।। ६ ।।

तब रसूल साहब ने हदीस में कहा कि यह शैतान अबलीस का झगड़ा-फसाद अरब में आ रहा है। मैं इतना देख रहा हूं।

आवेगा बरसात ज्यों, छोड़े ना कोई घर।
मैं केहेता हों तुम देखियो, ऐसा होसी मुझ बिगर।। ७ ।।

वह झगड़ा-फसाद बरसात की तरह आएगा। कोई घर इससे बचेगा नहीं। मेरे जाने के बाद ऐसा ही होगा, जिसे तुम देखना।

कह्या मेरी उमतमें, उठेगी तरवार।
सो रेहेसी लग आखिर, ऐसा होसी बखत ख्वार।। ८ ।।

मेरे मानने वालों में ही तलवारें चलेंगी। ऐसा दुष्ट समय आ जाएगा। वह वक्त आखिरत तक जब तक इमाम मेंहेंदी नहीं आते, यह झगड़ा चलता ही रहेगा।

और कह्या बीच हदीस के, मेरे पीछे होसी इमाम।
मैं डरता हों तिन से, गुम करसी गिरो तमाम।। ९ ।।

रसूल साहब ने हदीस में कहा कि मेरे जाने के बाद धर्म के चलाने वाले अगुए सबको रास्ते से भटका देंगे। मुझे उनसे बहुत डर लगता है।

दुनियां भी ऐसी होएसी, दिल अबलीस सैतान।
वजूद होसी आदमी, दिल कहूं न पाइए ईमान।। १० ।।

सारी दुनियां के दिलों पर शैतान अबलीस की बादशाही हो जाएगी। उनके तन तो आदमी जैसे होंगे, परन्तु किसी के अन्दर ईमान नहीं होगा।

Nijanand App

नाम मेरा चलावसी, कहेंगे तरीका महंमद।
सुंनत जमात कौल तोड़ के, जुदे पड़सी कर जिद।। ११ ।।

वह कहेंगे कि मुहम्मद साहब ने यही तरीका चलाया है। मेरे नाम से इमामत करेंगे। सुनकर ईमान लाने वाले लोग मेरे यार मेरे वचनों से हटकर और लड़-झगड़कर अलग हो जाएंगे।

केहेसी हम सुंनत जमात हैं, राह छोड़सी बीच की असल।
मेरा तरीका छोड़ के, चलसी अपनी अकल।। १२ ।।

सभी कहेंगे हम ही सुन्नत जमात हैं। सभी असली रास्ते (मेरे तरीके) को छोड़ देंगे और अपनी अक्ल से चलेंगे।

जब हुए हिजाबमें रसूल, तबहीं खतरा पड़या बीच यार।
तबहीं आया बीच फितना, पड़ी जुदागी बीच चार।। १३ ।।

जब रसूल साहब परदे में हुए (तन छोड़ा), तभी चारों यारों में झगड़ा पड़ गया (अली, अबूबक्र, उमर, उस्मान)। अपनी-अपनी बुजरकी का झगड़ा हुआ जिससे अलग-अलग हो गए।

सफर बखत रसूल के, तीन हुए न खबरदार।
बखत गए आए खड़े, लगे करने और विचार।। १४ ।।

रसूल साहब के चलने के समय में (तन छोड़ने के वक्त) अबूबक्र, उमर और उस्मान सावचेत (सावधान) नहीं हुए। उनके जाने के बाद आकर खड़े हो गए और खलीफा बनने के लिए विचार करने लगे।

अली आए खड़ा कबर पर, काढ़ के जुल्फिकार।
कह्या न छोड़ोंगा किनको, आइयो होए हुसियार।। १५ ।।

अली रसूल साहब की कब्र पर तलवार लेकर खड़ा हो गया और बोला, सावधान होकर आना। किसी को जिन्दा नहीं छोडूंगा।

तब चारों अपने हुए, हुआ फितना बीच जोर।
सफर पीछे रसूल के, दिन दिन बाढ़या सोर।। १६ ।।

रसूल साहब के जाने के बाद चारों यारों में जोरदार झगड़ा बढ़ गया, जो दिनों दिन बढ़ता ही गया।

अब देखो दिल विचार के, कैसा बीच पड़या इनमें।
ऐसी दुनी दोस्ती भी ना करे, जैसी हुई जमात से।। १७ ।।

अब दिल से विचार करके देखो। एक रसूल के यारों में ही कैसा झंझट हो गया। संसार के दोस्त भी ऐसा नहीं करते, जैसे रसूल साहब के यारों ने किया।

तीन यारों के जुदे हुए, करके बीच करार।
हमहीं सुंनत जमात हैं, खासी उमत खासे यार।। १८ ।।

अबूबक्र, उमर और उस्मान ने शान्त होकर अपने अलग-अलग फिरके कायम कर लिए। सभी कहते हैं कि हमारी सुन्नत जमात है और हम ही रसूल साहब के सच्चे यार हैं।

Nijanand App

इतथें अली के जुदे हुए, बैठ फितने किया पसार।
कई हुइयां लडाइयां जमातसे, कई कतल किए तरवार।। १९ ।।

यहां से अली के मानने वाले जुदा हो गए। उनकी जमात में शैतान ने इतना झगड़ा फैला दिया जिससे कई लड़ाइयां हुईं और वह तलवार से कत्ल हुए।

लेने को बुजरकियां, जमात मारी समसेर।
मारे मराए यार अस्हाबों, ऐसा फितने किया अंधेर।। २० ।।

समाज में साहेबी लेने के वास्ते सभी ने अपनी ही जमात को मारा। शैतान ने सबके दिलों में बैठकर अपने ही लोगों को मरवाकर अंधेरा फैला दिया।

कोई न छोड़या घर आरब, बीच फितना हुआ सब में।
कह्या हदीसों सोई हुआ, सबुर न किया किननें।। २१ ।।

घर-घर में सबके अन्दर अरब में झगड़ा-फसाद फैल गया। अरब का कोई भी घर झगड़े से नहीं बचा। मुहम्मद साहब ने जो हदीसों में कहा था वही हुआ। साहिबी के वास्ते किसी ने सन्तोष नहीं किया।

ए सब फुरमाया हुआ, देखो आयतों हदीसों विचार।
सो आए सदी लग आखिरी, आई किबले से पुकार।। २२ ।।

रसूल साहब ने जो फरमाया था, वह आयतों और हदीसों में विचार करके देखो। यह झगड़ा आखिरी वक्त तक चला। अब मक्का से वसीयतनामे आकर इस बात की साक्षी देते हैं।

ए नीके दिल विचारियो, माएना हदीसों आखिरत।
फसल आई अर्सों भिस्तों की, हुआ दिन हक बका मारफत।। २३ ।।

हदीसों के आखिर के यह वचन अच्छी तरह से विचार कर देखना। अब श्री राजजी महाराज के अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय हुआ है। मोमिनों को परमधाम, ईश्वरीसृष्टि को अक्षरधाम और जीवसृष्टि को बहिश्तों में कायम होने का समय आया है।

महामत कहे ए मोमिनों, कही फितने की हकीकत।
अब कहूं सातों निसान, जिन पर मुद्दा कयामत।। २४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने तुमको झगड़े की हकीकत बताई है। अब कयामत के बड़े सात निशानों का विवरण करती हूं, जिनसे संसार को कायमी मिलनी है।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। ५०१ ।।

बाब चारों निसानका-दाभतूलअर्जका निसान

आए लिखे बड़ी दरगाह से, इसलाम के खलीफों पर।
उठी बरकत मुसाफ सफकत, दुनी हुई ईमान बिगर।। १ ।।

बड़ी दरगाह (मक्का मदीने) से इस्लाम के मालिक औरंगजेब और काजी पर वसीयतनामे लिखकर आए कि मक्का से बरकत उठ गई, कुरान उठ गया, फकीरों की दुआएं उठ गईं और यहां से नूरी झण्डा (ईमान) उठ गया।

Nijanand App

इतथें अली के जुदे हुए, बैठ फितने किया पसार।
कई हुइयां लडाइयां जमातसे, कई कतल किए तरवार।। १९ ।।

यहां से अली के मानने वाले जुदा हो गए। उनकी जमात में शैतान ने इतना झगड़ा फैला दिया जिससे कई लड़ाइयां हुईं और वह तलवार से कत्ल हुए।

लेने को बुजरकियां, जमात मारी समसेर।
मारे मराए यार अस्हाबों, ऐसा फितने किया अंधेर।। २० ।।

समाज में साहेबी लेने के वास्ते सभी ने अपनी ही जमात को मारा। शैतान ने सबके दिलों में बैठकर अपने ही लोगों को मरवाकर अंधेरा फैला दिया।

कोई न छोड़्या घर आरब, बीच फितना हुआ सब में।
कह्या हदीसों सोई हुआ, सबुर न किया किननें।। २१ ।।

घर-घर में सबके अन्दर अरब में झगड़ा-फसाद फैल गया। अरब का कोई भी घर झगड़े से नहीं बचा। मुहम्मद साहब ने जो हदीसों में कहा था वही हुआ। साहिबी के वास्ते किसी ने सन्तोष नहीं किया।

ए सब फुरमाया हुआ, देखो आयतों हदीसों विचार।
सो आए सदी लग आखिरी, आई किबले से पुकार।। २२ ।।

रसूल साहब ने जो फरमाया था, वह आयतों और हदीसों में विचार करके देखो। यह झगड़ा आखिरी वक्त तक चला। अब मक्का से वसीयतनामे आकर इस बात की साक्षी देते हैं।

ए नीके दिल विचारियो, माएना हदीसों आखिरत।
फसल आई असौं भिस्तों की, हुआ दिन हक बका मारफत।। २३ ।।

हदीसों के आखिर के यह वचन अच्छी तरह से विचार कर देखना। अब श्री राजजी महाराज के अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय हुआ है। मोमिनों को परमधाम, ईश्वरीसृष्टि को अक्षरधाम और जीवसृष्टि को बहिश्तों में कायम होने का समय आया है।

महामत कहे ए मोमिनों, कही फितने की हकीकत।
अब कहूं सातों निसान, जिन पर मुद्दा कयामत।। २४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने तुमको झगड़े की हकीकत बताई है। अब कयामत के बड़े सात निशानों का विवरण करती हूं, जिनसे संसार को कायमी मिलनी है।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। ५०१ ।।

बाब चारों निसानका-दाभतूलअर्जका निसान

आए लिखे बड़ी दरगाह से, इसलाम के खलीफों पर।
उठी बरकत मुसाफ सफकत, दुनी हुई ईमान बिगर।। १ ।।

बड़ी दरगाह (मक्का मदीने) से इस्लाम के मालिक औरंगजेब और काजी पर वसीयतनामे लिखकर आए कि मक्का से बरकत उठ गई, कुरान उठ गया, फकीरों की दुआएं उठ गईं और यहां से नूरी झण्डा (ईमान) उठ गया।

Nijanand App

बाकी रह्या क्या इसलाममें, जब हक मता लिया छीन।
सो लिखे सखत सौं खाएके, उठ्या हमसे नूर झंडा आकीन।।२।।

जब इस्लाम से यह सारी न्यामतें छीन ली गईं, तो मक्का में बाकी बचा ही क्या? उन्होंने कसम खाकर लिखा कि मक्का से यकीन का नूरी झण्डा उठ गया है।

निसान लिखे कयामत के, होसी जाहेर दाभा जिमी से।
जब नूर झंडा हादी ले गए, बाकी रही हैवानी जिमीमें।।३।।

कयामत के जाहिर होने के जो निशान लिखे थे, उन्हें दुनियां जान करके भी हैवान के समान हो जाएगी। जब यकीन का नूरी झण्डा जबराईल फरिश्ता हिन्दुस्तान ले गए, तो वहां की जमीन पर हैवानियत (पशुता) ही केवल रह गई।

ए निसान बातून अव्वल कहे, सो मिले सब आए।
पर मुसाफ हकीकत जो खुले, तो आंखों देख्या जाए।।४।।

कयामत के बातूनी निशान जो शुरू में रसूल साहब ने बताए थे, अब वह जाहिर हो रहे हैं। जिनको कुरान के रहस्य खुले, वह आंखों से देख रहे हैं।

सेर छाती पीठ गीदड़, मुरग गरदन हाथी कान।
सिर सींग तीखे आंखें सुअर, ए कह्या मुंह आदमी बिना ईमान।।५।।

लिखा था कि एक जानवर पैदा होगा, जिसकी छाती शेर के समान होगी, पीठ गीदड़ के समान होगी, गर्दन मुर्गे के समान होगी, कान हाथी के समान होंगे, सिर पर पहाड़ी बैल जैसे तीखे सींग होंगे, आंखें सूअर की होंगी और शक्ल आदमी की होगी। यह आदमी ही हैवान है, जिसे यकीन नहीं है और ऊपर से पशुता के स्वभाव हो गए हैं।

सब अंग कहे हैवान के, और मुंह कहे इनसान।
होसी गए आकीन ए तबीयतें, ए देखो खुलासे निसान।।६।।

इस तरह से सब अंग जानवर के बताए हैं और शक्ल आदमी की कही है। कुरान के बातूनी रहस्य समझकर देखो। यकीन न रहने से आदमी की ऐसी फितरत (गुण) हो जाएगी।

दाभतूल का निसान, ए देखो दिल धर।
इनका तालिब न देखे इने, माएने खुले बिगर।।७।।

कुरान के बातूनी रहस्य खुले बिना दाभतुल के निशान को जाहिरी मुसलमान नहीं समझ सकते। ऐसा दिल में विचार करके देखो।

जानवर तो ए है नहीं, लिखी हैवानी तबीयत।
तो कह्या तालिब न देखसी, दुनी दाभा आखिरत।।८।।

इस प्रकार का कोई जानवर नहीं होगा। इन्सान के ही ऐसे स्वभाव हो जाएंगे, इसलिए जाहिरी इसे समझ न सकेंगे, क्योंकि सारी दुनियां ही पशुतुल्य हो जाएगी।

दाभा गधा सों निसबत, अहेल जिमी दुनी जे।
बिन आकीन बिन मुसाफ, कही जिमी जाहेर दाभा ए।।९।।

ऐसे जानवर का सम्बन्ध गधे के साथ होगा। दुनियां के मालिक (विष्णु भगवान) हैं। बिना यकीन और कुरान के ज्ञान के यह सारी जमीन ही पशुतुल्य हो गई।

Nijanand App

हैवान अकल दाभा जिमी, होसी लोक जाहेर सिफली के।
सो दाभा ताबे दज्जाल के, देखो निसान खुलासे।। १० ।।

संसार की धरती पर सभी की अक्ल पशुओं के समान हो जाएगी। इस प्रकार सब लोग नीच कर्म करने लगेंगे। फिर यह पशुतुल्य मानव शैतान अबलीस के अधीन हैं। यह कुरान में स्पष्ट लिखा है।

दुनी कही सिफलीय की, तिन जिमी न छोड़ी जाए।
ज्यों जीव खारे का खारे जल, त्यों मीठे का मीठे समाए।। ११ ।।

जो दुनियां झूठ की है, वह झूठे संसार को नहीं छोड़ सकती। जिस तरह से खारे जल का जीव खारे जल में रहता है और मीठे जल का मीठे जल में रहता है, उसी तरह झूठी दुनियां के लोग झूठ में ही रहते हैं।

बाएं हाथ आसा मूसे का, हाथ दाहिने मोहोर सलेमान।
मोहोर करसी पेसानी जिनकी, मुंह उज्जल तिन रोसन।। १२ ।।

कुरान में लिखा है कि जब इमाम मेंहेंदी आएंगे तो उनके बाएं हाथ में मूसा पैगम्बर की लाठी होगी और दाएं हाथ से सुलेमान पैगम्बर की मुहर होगी। जिसको मुहर छुआ देंगे उसका मुख उज्ज्वल हो जाएगा।

स्याह मुंह होसी तिन का, आसा चुभावे जिन।
उज्जल स्याह मुंह अपने, केहेसी रात और दिन।। १३ ।।

जिसको लाठी छुआ देंगे उसका मुख काला हो जाएगा। जब ऐसे पाक मुख वाले और काले मुख वाले अपने गुण अपने आप ही बयान करेंगे तो सत्य और झूठ का पता चल जाएगा।

स्वाल किए इत जाहेरी, मोहोर आसा होसी दिल रूए।
बाहेर स्याह मुंह उज्जल, क्यों कर देखे कोए।। १४ ।।

जाहिरी लोगों ने रसूल साहब से सवाल किया कि उज्ज्वल मुख और काला मुख दिल में होगा या ऊपर का जाहिरी मुख ऐसा होगा, क्योंकि जब तक जाहिरी मुख काला या उज्ज्वल न हो जाए, तब तक औरों को क्या पता चलेगा?

मोमिन कहे सुन मुस्लिम, भिस्त दोजख होसी सोभी दिल।
आग भिस्त ना इस्म तें, बाहेर मुंह छिपे स्याह उज्जल।। १५ ।।

मोमिन कहते हैं, हे मुसलमानो! सुनो, उज्ज्वल मुख वालों को बहिश्त मिलना है और स्याह मुख वालों को दोजख। यह भी दिल से ही पता चलेगा। दोजख की अग्नि और बहिश्तों के सुख नाम से नहीं जाने जाएंगे। बाहर का मुख उज्ज्वलता से और कालिख से छिपा रहेगा।

कह्या सूरत बाहेर बदले, जब दिल दई आग लगाए।
सो बाहेर फैल करे कई विध, सके न कोई छिपाए।। १६ ।।

जब दिल में पश्चाताप की आग लग जाएगी, तो बाहर की सूरत अपने आप बदल जाएगी। चाहे फिर कोई कितना ही बाहर से दिखावा करे, अपने आपको छिपा न सकेगा।

अपने हाथ मुंह अपना, मोहोर करे क्यों कर।
स्याह मुंह भी कहे हाथ इन, क्यों सब मुद्दा कह्या इन पर।। १७ ।।

अपने ही हाथ से अपना मुख लोग उज्ज्वल कैसे कर लेंगे? इसी तरह से कोई अपना मुंह काला कैसे कर लेगा? यह सब मुद्दा उनके दिल के भावों पर जाहिर होगा।

Nijanand App

छिपी बातें थी दिलमें, ए देखो जाहेर करी पुकार।
जोस दे न हादी का छिपने, या जीत या हार।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज के जोश से दुनियां के दिलों की बातों को, चाहे वह जीतने वाली हो या हारने वाली हो छिपने नहीं देगा। यह बात बिल्कुल जाहिर लिखी है।

एही दाभा दुनी सिफली, सब केहेसी अपने मुख।
जो जैसा तैसा तिनों, छिपे न आखिर दुख सुख।। १९ ।।

इस झूठी दुनियां के लोग अपने मुख से ही अपने दुःख-सुख का बयान स्वयं करेंगे, क्योंकि जिन्होंने जैसा कर रखा है, वह अपना सब जानते हैं।

जब एही बातून जाहेर हुआ, पेहेचान पोहोंची माहें सब।
सब एक हैयातीय का, करसी सिजदा तब।। २० ।।

जब यह बातूनी रहस्य जाहिर हो गए, तो सब दुनियां वाले एक पारब्रह्म जो अखण्ड है, उसी का सिजदा बजाएंगे।

|| प्रकरण || ८ || चौपाई || ५२१ ||

दज्जाल का निसान

कह्या दज्जाल अस्वार गधे पर, काना आंख न एक।
हक को न देखे आंख जाहेरी, रूह नजर न बातून नेक।। १ ।।

कुरान में लिखा है कि वक्त आखिरत में शैतान गधे पर सवार होगा, जिसकी एक आंख नहीं होगी। वह अपनी जाहिरी आंख से खुदा को नहीं देखेगा और आत्मदृष्टि उसकें पास नहीं होगी।

अजाजील काना तो रानियां, जो बातून नजर करी रद।
देख्या उपली आंखसों, आदम वजूद गलद।। २ ।।

वह ऊपर की आंख से झूठे संसार की नजर से आदमी के ऊपर के शरीर को ही देखेगा, इसलिए अजाजील को काना कहकर रद्द कर दिया है, क्योंकि इसकी बातूनी नजर नहीं है।

गधा बड़ा दज्जाल का, कह्या ऊंचा लग आसमान।
पानी सात दरियाव का, पोहोंच्या नहीं लग रांन।। ३ ।।

अजाजील रूपी दज्जाल का गधा ऊंचा आसमान तक बताया है। कहा है कि सात समुद्र का पानी उसकी जांघ तक नहीं पहुंचेगा।

गधा एता बड़ा तो है नहीं, कह्या हवा तारीक मकान।
ए जो कुंन केहेते पैदा हुई, सिफली दुनी जहान।। ४ ।।

इतना बड़ा गधा तो कहीं है ही नहीं। इस निराकार के सारे ब्रह्माण्ड को ही गधे का आकार बताया है। कुंन शब्द से पैदा हुई झूठी दुनियां ही गधे का रूप है।

ना तो एता बड़ा गधा, होसी कैसा कद दज्जाल।
सो दज्जाल गधा जब गिर पड़े, तले दुनी रहे किन हाल।। ५ ।।

वरना इतना बड़ा गधा हो तो उसके अस्वार का कद कितना बड़ा होना चाहिए। जब दज्जाल, सवार तथा उसका गधा नीचे गिर पड़े तो दुनियां की क्या हालत होगी?

Nijanand App

छिपी बातें थी दिलमें, ए देखो जाहेर करी पुकार।
जोस दे न हादी का छिपने, या जीत या हार॥ १८ ॥

श्री राजजी महाराज के जोश से दुनियां के दिलों की बातों को, चाहे वह जीतने वाली हो या हारने वाली हो छिपने नहीं देगा। यह बात बिल्कुल जाहिर लिखी है।

एही दाभा दुनी सिफली, सब केहेसी अपने मुख।
जो जैसा तैसा तिनों, छिपे न आखिर दुख सुख॥ १९ ॥

इस झूठी दुनियां के लोग अपने मुख से ही अपने दुःख-सुख का बयान स्वयं करेंगे, क्योंकि जिन्होंने जैसा कर रखा है, वह अपना सब जानते हैं।

जब एही बातून जाहेर हुआ, पेहेचान पोहोंची माहें सब।
सब एक हैयातीय का, करसी सिजदा तब॥ २० ॥

जब यह बातूनी रहस्य जाहिर हो गए, तो सब दुनियां वाले एक पारब्रह्म जो अखण्ड है, उसी का सिजदा बजाएंगे।

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ५२१ ॥

दज्जाल का निसान

कह्या दज्जाल अस्वार गधे पर, काना आंख न एक।
हक को न देखे आंख जाहेरी, रूह नजर न बातून नेक॥ १ ॥

कुरान में लिखा है कि वक्त आखिरत में शैतान गधे पर सवार होगा, जिसकी एक आंख नहीं होगी। वह अपनी जाहिरी आंख से खुदा को नहीं देखेगा और आत्मदृष्टि उसकें पास नहीं होगी।

अजाजील काना तो रानियां, जो बातून नजर करी रद।
देख्या उपली आंखसों, आदम वजूद गलद॥ २ ॥

वह ऊपर की आंख से झूठे संसार की नजर से आदमी के ऊपर के शरीर को ही देखेगा, इसलिए अजाजील को काना कहकर रद्द कर दिया है, क्योंकि इसकी बातूनी नजर नहीं है।

गधा बड़ा दज्जाल का, कह्या ऊंचा लग आसमान।
पानी सात दरियाव का, पोहोंच्या नहीं लग रांन॥ ३ ॥

अजाजील रूपी दज्जाल का गधा ऊंचा आसमान तक बताया है। कहा है कि सात समुद्र का पानी उसकी जांघ तक नहीं पहुंचेगा।

गधा एता बड़ा तो है नहीं, कह्या हवा तारीक मकान।
ए जो कुंन केहेते पैदा हुई, सिफली दुनी जहान॥ ४ ॥

इतना बड़ा गधा तो कहीं है ही नहीं। इस निराकार के सारे ब्रह्माण्ड को ही गधे का आकार बताया है। कुंन शब्द से पैदा हुई झूठी दुनियां ही गधे का रूप है।

ना तो एता बड़ा गधा, होसी कैसा कद दज्जाल।
सो दज्जाल गधा जब गिर पड़े, तले दुनी रहे किन हाल॥ ५ ॥

वरना इतना बड़ा गधा हो तो उसके अस्वार का कद कितना बड़ा होना चाहिए। जब दज्जाल, सवार तथा उसका गधा नीचे गिर पड़े तो दुनियां की क्या हालत होगी?

Nijanand App

लानत जो अजाजील की, ले अबलीस बैठा दिल।
सो राह न लेने देवे बातून, जो जोर करें सब मिल।। ६ ।।

अजाजील को लानत लगी और शैतान अबलीस (नारद) सबके दिलों पर बैठ गया। यह ज्ञान की बातों को नहीं लेने देता। चाहे दुनियां वाले कितनी ही शक्ति लगा लें।

सोई दाभा या गधा दज्जाल, अबलीस दिलों पातसाह।
सो दुनी आंख फोड़ी दुस्मने, लेने देवे न बातून राह।। ७ ।।

संसार के सभी आदमियों के दिलों पर शैतान की बादशाही होने के कारण इनको ही दज्जाल कहा है। इस शैतान अबलीस ने दुनियां को एक आंख से अन्धा कर रखा है जो बातूनी ज्ञान के भेद नहीं समझने देता।

ना तो लानत जो दज्जाल की, सो दुनी को लगे क्योंकर।
सो वास्ते ताबे दज्जाल के, हुई बातून आंख बिगर।। ८ ।।

वरना जो लानत दज्जाल अजाजील को लगी है, उसके लिए दुनियां गुनहगार होकर क्यों कष्ट उठाए। दुनियां इसलिए दुःखी हो रही है कि वह दज्जाल के अधीन है जिसके पास बातूनी ज्ञान की दृष्टि नहीं है।

दुनी सिजदा न किया, रूह महंमद आदम पर।
इन भी देख्या वजूद को, ना खोले बातून नजर।। ९ ।।

दुनियां वालों ने आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी महाराज के स्वरूप को नहीं पहचाना। उन पर सिजदा नहीं किया। बातूनी नजर न होने के कारण से दुनियां वालों ने इनके तन को ही देखा।

तो हुआ दिलों पर पातसाह, सोई राह चलावत।
जिन राह चलते अबलीस को, दूर किया दे लानत।। १० ।।

यह इसी वास्ते कि दुनियां के दिलों पर शैतान अबलीस बादशाह बनकर बैठा है, जिसे लानत लगी। वह विष्णु भगवान अपनी ही पूजा करवाते हैं।

इन बिध लगी लानत, अजाजील की दुनी को।
जैसी हुई सिरदार से, हुई तैसी ताबे हुएसों।। ११ ।।

अजाजील की दुनियां को भी इस तरह से लानत लग गई। जो हालत सिरदार (प्रमुख) अजाजील की हुई, दुनियां उसके अधीन होने से सबकी वही हालत हुई।

सिपारे उनईस में, कह्या निकाह आदम हवा।
सो पसरी बीच दुनी के, इत अबलीस जो पैदा।। १२ ।।

कुरान के उन्नीसवें सिपारे में आदम और हौवा की शादी का बयान लिखा है। ऐसा ही सम्बन्ध दुनियां वालों का अबलीस से हो गया।

जेता कोई बनी आदम, कह्या निकाह अबलीस से।
कह्या दुनी बीच अबलीस, लोहू ज्यों तनमें।। १३ ।।

संसार में जितने भी आदमी की औलाद हैं, सबकी शादी शैतान अबलीस से हुई है। इस तरह शरीर में खून की तरह यह अबलीस दुनियां के अन्दर बैठा है।

Nijanand App

कह्या वजूद आदमी, सैतान अमल दिल पर।
दुनी होसी इन बिधकी, कहे बीच हदीस पैगंमर।। १४ ।।

तन तो आदमी का है, किन्तु दिल पर हुकूमत शैतान की है। इस तरह से दुनियां की हालत वक्त आखिरत में शैतान जैसी हो जाएगी। यह बात रसूल साहब ने हदीस में लिखी है।

दोऊ तरफों कह्या पेटमें, और दुनी हाथ बीच दोए।
इन बिध रहे बीच आदम, याको किन बिध मारे कोए।। १५ ।।

यह अबलीस शैतान दुनियां के पेट में घुसा है और अन्दर से दोनों को काबू कर रखा है। इस वास्ते दुनियां वाले इस शैतान को कैसे मार सकते हैं?

कह्या पैदा आदम हवा से, याकी असल बिध इन।
सो बाहेर ढूंढें माएना जाहेरी, बिना मगज सुकन।। १६ ।।

कहा है कि दुनियां आदम और हौवा से पैदा हुई है। इनकी पैदाइश ही झूठ से है, इसलिए दुनियां वाले इन वचनों के गुझ (गुप्त) रहस्यों को समझे बिना शैतान को बाहर ढूंढ़ते हैं।

और हदीस में यों कह्या, दुनी राह देखे जाहिर दज्जाल।
माएना न पावें ढूंढें जाहिर, कहे हम लड़सी तिन नाल।। १७ ।।

रसूल साहब ने हदीस में कहा है कि दुनियां वाले दज्जाल को बाहर ढूंढ़ रहे हैं। वह कहते हैं कि जब दज्जाल आएगा, हम लड़ेंगे। इसके बातूनी गुझ (गुह्य) रहस्यों को जानते नहीं हैं।

सोई सूरत धुआं दज्जाल, दुनी तिन दई उरझाए।
मुसाफ बरकत ईमान बिन, छूटी आखिर हक हिदायत ताए।। १८ ।।

वह दज्जाल धुएं की तरह हर एक के अन्दर बैठा है और सीधे रास्ते नहीं चलने देता। उलझा देता है। कुरान के ज्ञान, बरकत और ईमान के बिना वह खुदा के इलम को भी भूल गए।

कयामत फल जिन सों गया, उलट बलाए लगी आए।
आग नजर आई दोजख, रही बदफैल देहेसत भराए।। १९ ।।

कयामत के समय में मिलने वाला फल भी दुनियां वालों से चला गया और उलटे संकट में फंस गए। अब उनको सामने दोजख की अग्नि दिखाई देती है और अपने किए कुफरों का डर उनको मार रहा है।

धुआं करे मार दिवाना, कह्या ऐसेही ईमान बिन।
छूटी मुसाफ नसीहत बरकत, तब ऐसा क्यों न होए हाल तिन।। २० ।।

जिस तरह से धुन्ध में कुछ सूझता नहीं है, उसी तरह से ईमान के बिना दुनियां हो गई। जिनसे कुरान का ज्ञान छूट गया और बरकत चली गई, तो उनका ऐसा हाल क्यों न हो?

कहे अबलीस मैं घेरोंगा, राह मारों तरफ चार।
वह जाने लई राह दीन की, इन बिध देऊं राह मार।। २१ ।।

अबलीस कहता है कि दीन की राह पर चलने वालों को मैं चारों तरफ से घेरकर मारूंगा (एक बेईमान औरत, दूसरे बाजे बजावन हार, तीसरे पढ़ने वाले इलम के, चौथे जादूगर होशियार)। वह समझेंगे कि हम दीन के रास्ते पर चल रहे हैं, जबकि वह भटक जाएंगे।

Nijanand App

ढूंढे जाहेर निसान जाहेरी, सो तो कहे कयामत के दिन।
जो कोई ताबे दज्जाल के, ताए रूह आंख नहीं बातन।। २२ ।।

जाहिर लोग कयामत के निशानों को जाहिरी देखने की इन्तजार में हैं, क्योंकि यह दज्जाल के अधीन हैं। इनकी आत्मदृष्टि नहीं है।

सिपारे चौबीस में, बड़ी साहेबी दज्जाल।
पोहोंचे दरियाव जंगलों, चले याके फिरके नेहेरें मिसाल।। २३ ।।

कुरान के चौबीसवें सिपारे में दज्जाल की बड़ी साहेबी कही है। लिखा है जंगलों से दरिया बहेंगे। इसका अर्थ है कि दज्जाल के मानने वाले ही शून्य दिलों के अधीन नए-नए सम्प्रदाय और धर्म चलाएंगे।

जो लिख्या अव्वल ताले मिने, सोई दुनी से होए।
और बात फुरमाए बिना, क्यों कर करे कोए।। २४ ।।

जब शुरू से ही दुनियां के नसीब में यही लिखा है, तो उसी अनुसार ही दुनियां अब कर रही है और अब खुदा (धनी) के हुकम के बिना दुनियां नया रास्ता नया कार्य कैसे कर सकती है।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ५४५ ।।

सूरज मगरबका निसान

कह्या मगरब ऊगसी सूरज, दुनियां के दिल पर।
नाहीं रोसनी तिनमें, तब होसी बखत आखिर।। १ ।।

कुरान में लिखा है कि आखिर के समय सूर्य पच्छिम से उदय होगा और उसमें रोशनी नहीं होगी। वह आखिरत को दुनियां के दिलों पर छा जाएगा।

सूरज ऊग्या मगरब दिलों, कह्या रोसन नाहीं तित।
तो अक्स सूरज की अंधेरी, सो गया ईमान रही जुलमत।। २ ।।

पच्छिम की दिशा को मुंह करके पूजा करने वाले मुसलमानों के दिलों पर जो ज्ञान था, वह हट गया। अब वहां अंधेरा हो गया। उनके दिलों पर जो ज्ञान का सूर्य था, वह ईमान चले जाने से अन्धकार में बदल गया।

रोसन बिना सूरज कह्या, ऊग्या दिलों पर जे।
सो आई पुकार मगरब से, देखो निसान जाहेर हुए ए।। ३ ।।

इसलिए मक्का के मानने वाले मुसलमानों के दिलों पर बिना रोशनी का सूरज कहा है। अब देखो मक्का से लिखकर भी आ गया है कि कयामत का यह निशान जाहिर हो गया है।

ए कह्या रसूलें इसारतों, ऐसा होसी बखत आखिर।
मता ले जासी जबराईल, तब रेहेसी अंधेर दिलों पर।। ४ ।।

रसूल साहब ने पहले ही इशारतों में कहा था कि आखिर के समय ऐसा हो जाएगा कि जबराईल फरिश्ता आखिर के समय में मक्का से सब न्यामतें उठाकर हिन्द में जहां इमाम मेंहेंदी साहब आएंगे, उनके पास ले जाएंगे। तब मक्कावासियों के दिलों पर अज्ञानता का अंधेरा छा जाएगा।

Nijanand App

ढूंढ़े जाहेर निसान जाहेरी, सो तो कहे कयामत के दिन।
जो कोई ताबे दज्जाल के, ताए रूह आंख नहीं बातन।। २२ ।।

जाहिर लोग कयामत के निशानों को जाहिरी देखने की इन्तजार में हैं, क्योंकि यह दज्जाल के अधीन हैं। इनकी आत्मदृष्टि नहीं है।

सिपारे चौबीस में, बड़ी साहेबी दज्जाल।
पोहोंचे दरियाव जंगलों, चले याके फिरके नेहेरें मिसाल।। २३ ।।

कुरान के चौबीसवें सिपारे में दज्जाल की बड़ी साहेबी कही है। लिखा है जंगलों से दरिया बहेंगे। इसका अर्थ है कि दज्जाल के मानने वाले ही शून्य दिलों के अधीन नए-नए सम्प्रदाय और धर्म चलाएंगे।

जो लिख्या अव्वल ताले मिने, सोई दुनी से होए।
और बात फुरमाए बिना, क्यों कर करे कोए।। २४ ।।

जब शुरू से ही दुनियां के नसीब में यही लिखा है, तो उसी अनुसार ही दुनियां अब कर रही है और अब खुदा (धनी) के हुकम के बिना दुनियां नया रास्ता नया कार्य कैसे कर सकती है।

|| प्रकरण || ९ || चौपाई || ५४५ ||

सूरज मगरबका निसान

कह्या मगरब ऊगसी सूरज, दुनियां के दिल पर।
नाहीं रोसनी तिनमें, तब होसी बखत आखिर।। १ ।।

कुरान में लिखा है कि आखिर के समय सूर्य पच्छिम से उदय होगा और उसमें रोशनी नहीं होगी। वह आखिरत को दुनियां के दिलों पर छा जाएगा।

सूरज ऊग्या मगरब दिलों, कह्या रोसन नाहीं तित।
तो अक्स सूरज की अंधेरी, सो गया ईमान रही जुलमत।। २ ।।

पच्छिम की दिशा को मुंह करके पूजा करने वाले मुसलमानों के दिलों पर जो ज्ञान था, वह हट गया। अब वहां अंधेरा हो गया। उनके दिलों पर जो ज्ञान का सूर्य था, वह ईमान चले जाने से अन्धकार में बदल गया।

रोसन बिना सूरज कह्या, ऊग्या दिलों पर जे।
सो आई पुकार मगरब से, देखो निसान जाहेर हुए ए।। ३ ।।

इसलिए मक्का के मानने वाले मुसलमानों के दिलों पर बिना रोशनी का सूरज कहा है। अब देखो मक्का से लिखकर भी आ गया है कि कयामत का यह निशान जाहिर हो गया है।

ए कह्या रसूलें इसारतों, ऐसा होसी बखत आखिर।
मता ले जासी जबराईल, तब रेहेसी अंधेर दिलों पर।। ४ ।।

रसूल साहब ने पहले ही इशारतों में कहा था कि आखिर के समय ऐसा हो जाएगा कि जबराईल फरिश्ता आखिर के समय में मक्का से सब न्यामतें उठाकर हिन्द में जहां इमाम मेहेंदी साहब आएंगे, उनके पास ले जाएंगे। तब मक्कावासियों के दिलों पर अज्ञानता का अंधेरा छा जाएगा।

Nijanand App

कह्या सूरज होसी मगरब का, तिनमें नहीं रोसन।
होसी गुलबा जोर दज्जालका, तब ईमान न रेहेसी किन।।५ ।।

इसलिए लिखा है कि सूर्य पच्छिम में होगा। मुसलमानों के वास्ते बिना रोशनी का होगा, इसीलिए ईमान न रहने से मक्का में दज्जाल का जोर बढ़ा और कोई भी ईमान पर खड़ा नहीं रह सका।

जाहेरी देखें सूरज जाहेर, अजूं मगरब ऊग्या नाहें।
देखें न माएना अंदर, कह्या रोसन नहीं तिन माहें।।६ ।।

जाहिरी लोग जाहिर में देख रहे हैं कि सूर्य अभी पच्छिम से नहीं उगा। वह अन्दर का अर्थ नहीं लेते जिसमें कहा गया है कि उसमें रोशनी नहीं होगी।

तब सूरज पना क्या रह्या, कही बिन रोसन अंधेर।
सो गया ईमान रह्या कुफर, तिन लई जो दुनियां घेर।।७ ।।

जिसमें रोशनी न हो वह सूर्य कैसा? मक्का से ईमान उठ गया, कुफ्र रह गया, जो चारों तरफ फैल गया।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ५५२ ।।

आजूज माजूजका निसान

कहे आजूज माजूज, जाहेर होसी आखिर।
खाए जासी सब सय को, ऐसा होसी बखत फजर।।१ ।।

कुरान में लिखा है कि आजूज-माजूज आखिर के वक्त जाहिर होंगे। वह सारी दुनियां को खा जाएंगे। फजर के वक्त ऐसी हालत हो जाएगी।

दिवाल कही अष्टधात की, चाटें आजूज माजूज दायम।
पीछे रहे जैसी कागद, सुबा देखें त्योंहीं कायम।।२ ।।

यह आजूज-माजूज रोज ही अष्टधातु की दीवार को चाटते हैं। अष्टधातु की दीवार मनुष्य तन है और आजूज-माजूज दिन-रात हैं और इसे खा रहे हैं। सायं के समय शरीर थककर कागज के समान हो जाता है और प्रातः फिर तह मोटी हो जाती है।

आजूज माजूज जुफ्त, गिनती लाख चार।
सब पी जासी दुनी पानी ज्यों, टूटे दिवाल न रहे लगार।।३ ।।

आजूज-माजूज के जोड़ों की गिनती चार लाख की बताई है। यह दुनियां को पानी के समान पी जाएंगी और दीवार टूट जाएगी। फिर कुछ नहीं बचेगा।

तीन फौजां तिन होएसी, तूला ताबा साबा की।
दुनी जिमी सब खाए के, तीर आसमान चलावसी।।४ ।।

प्रातः, दोपहर और शाम इनकी तीन फौजें होंगी। यह सब जमीन पर रहने वालों को खाकर फिर आसमान की ओर देखेंगे।

Nijanand App

कह्या सूरज होसी मगरब का, तिनमें नहीं रोसन।
होसी गुलबा जोर दज्जालका, तब ईमान न रेहेसी किन।।५ ।।

इसलिए लिखा है कि सूर्य पच्छिम में होगा। मुसलमानों के वास्ते बिना रोशनी का होगा, इसीलिए ईमान न रहने से मक्का में दज्जाल का जोर बढ़ा और कोई भी ईमान पर खड़ा नहीं रह सका।

जाहेरी देखें सूरज जाहेर, अजूं मगरब ऊग्या नाहें।
देखें न माएना अंदर, कह्या रोसन नहीं तिन माहें।। ६ ।।

जाहिरी लोग जाहिर में देख रहे हैं कि सूर्य अभी पच्छिम से नहीं उगा। वह अन्दर का अर्थ नहीं लेते जिसमें कहा गया है कि उसमें रोशनी नहीं होगी।

तब सूरज पना क्या रह्या, कही बिन रोसन अंधेर।
सो गया ईमान रह्या कुफर, तिन लई जो दुनियां घेर।।७ ।।

जिसमें रोशनी न हो वह सूर्य कैसा? मक्का से ईमान उठ गया, कुफ्र रह गया, जो चारों तरफ फैल गया।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ५५२ ।।

आजूज माजूजका निसान

कहे आजूज माजूज, जाहेर होसी आखिर।
खाए जासी सब सय को, ऐसा होसी बखत फजर।। १ ।।

कुरान में लिखा है कि आजूज-माजूज आखिर के वक्त जाहिर होंगे। वह सारी दुनियां को खा जाएंगे। फजर के वक्त ऐसी हालत हो जाएगी।

दिवाल कही अष्टधात की, चाटें आजूज माजूज दायम।
पीछे रहे जैसी कागद, सुबा देखें त्योंहीं कायम।। २ ।।

यह आजूज-माजूज रोज ही अष्टधातु की दीवार को चाटते हैं। अष्टधातु की दीवार मनुष्य तन है और आजूज-माजूज दिन-रात हैं और इसे खा रहे हैं। सायं के समय शरीर थककर कागज के समान हो जाता है और प्रातः फिर तह मोटी हो जाती है।

आजूज माजूज जुफ्त, गिनती लाख चार।
सब पी जासी दुनी पानी ज्यों, टूटे दिवाल न रहे लगार।। ३ ।।

आजूज-माजूज के जोड़ों की गिनती चार लाख की बताई है। यह दुनियां को पानी के समान पी जाएंगी और दीवार टूट जाएगी। फिर कुछ नहीं बचेगा।

तीन फौजां तिन होएसी, तूला ताबा साबा की।
दुनी जिमी सब खाए के, तीर आसमान चलावसी।। ४ ।।

प्रातः, दोपहर और शाम इनकी तीन फौजें होंगी। यह सब जमीन पर रहने वालों को खाकर फिर आसमान की ओर देखेंगे।

Nijanand App

बड़ा कह्या सब चीज से, और आजूज सौ गज का।
चाटे दिवाल अष्टधात की, कहे सुबा तोडूं इन्साअल्ला।।५।।

इसलिए आजूज को सबसे बड़ा सौ गज का बताया है जो अष्टधातु की दीवार को चाटता है। सायं को थककर कहता है, इन्शाअल्लाह कल मैं इसे तोड़ दूंगा।

कह्या और भी बड़ा सब चीजोंसे, माजूज बड़ा गज एक।
तंगचस्म चाटे दिवाल को, पीछे फेर कागद जैसी देख।।६।।

इससे भी बड़ा माजूज एक गज का बताया है जो आंखें बन्दकर दीवार को चाटता है और फिर कागज के समान पतली देखता है।

ए कही औलाद याफिस की, बेटा नूह नबी का जे।
जो बाप कह्या तुरकस्थान का, देखो मिलाए कबीला ए।।७।।

कुरान में आजूज-माजूज को नूह पैगम्बर के बेटे याफिस की औलाद हैं, यह कहा गया है। याफिस को तुर्किस्तान का शासन मिला था। अब यह विचार कर देखो।

इन्साअल्लाताला जो लों ना कहे, तो लों तोड़ न सके दिवाल।
इन्साअल्लाताला केहेसी आखिर, तब टूटसी कागद मिसाल।।८।।

जब तक खुदा न चाहेंगे तब तक यह आजूज-माजूज इस दीवार को न तोड़ सकेंगे। खुदा आखिर के समय हुकम करेंगे तथा यह कागज के समान दीवार टूट जाएगी।

आजूज माजूज जाहेर हुए, जो नाती नूह पैगंमर।
खात जात हैं दुनी को, क्यों देखें बातून बिगर।।९।।

आजूज-माजूज का अब पता लगा है कि नूह पैगम्बर के पोते हैं, अर्थात् यह सारी दुनियां को खा रहे हैं। इस रहस्य के बातूनी भेद को समझे बिना क्या पता चलेगा?

सो ए निसान क्यों देखिए, ऊपर जाहेरी नजर।
जाए ना इलम हक का, सो देखें क्यों कर।।१०।।

जाहिरी नजर से इन कयामत के निशानों के भेद कैसे समझे जा सकते हैं? जिन्हें श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान नहीं मिला, वह इस रहस्य को कैसे समझेंगे?

निसान सब जाहेर हुए, जो दुनी देखे सहूर कर।
जो खोल देखे आंखें रूहकी, तो देखे हुई फजर।।११।।

दुनियां यदि विचार करके देखे तो कयामत के सभी निशान जाहिर हो गए हैं। यदि आत्मदृष्टि से देखें तो ज्ञान का सवेरा हो गया है।

निसान सब जाहेर हुए, आई बड़ी दरगाह से पुकार।
चाक चढ़ी सब दुनियां, पर क्यों देखे बिना विचार।।१२।।

मक्का से वसीयतनामे लिखकर आ गए हैं। कयामत के सभी निशान जाहिर हो गए हैं। जो दुनियां मरने जीने के चक्कर में घूम रही है, वह बिना विचार किए इन निशानों को कैसे समझ सकती है?

Nijanand App

हुए हिजाब आदम अकलें, हक गुझ पाइए हक इलम।
ले माएने दुनी उपले, तासों जाहेर होत जुलम।। १३ ।।

दुनियां की अक्ल पर परदा पड़ गया है। खुदा के छिपे रहस्यों को जागृत बुद्धि के ज्ञान से ही जाना जा सकता है। ऊपर के मायने लेने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। बड़ा जुल्म होता है।

एता दिल मजाजी न बूझहीं, जो नाती नूह नबी के।
ए निजस हराम क्यों खाएसी, क्यों पावें माएना जाहेरी ए।। १४ ।।

झूठे दिल वाले इतना भी नहीं सोचते कि नूह पैगम्बर के पोते बीच दुनियां को क्यों खाएंगे। जाहिर लोग इसका अर्थ नहीं समझ पा रहे हैं।

पढ़े करें माएना आजूज माजूज, जो नाती नूह नबी के।
सो क्यों खाए नापाक दुनियां, पाक पैगंमर–जादे।। १५ ।।

पढ़े-लिखे लोग अर्थ करते हैं कि नूह पैगम्बर के पोते नापाक दुनियां को कैसे खा सकते हैं जो पैगम्बर याफिस की औलाद हैं।

पढ़े दुनी मुसाफ आखिरी, खोले माएना बीच मुस्लिम।
कहे पाकों को कुफर, होए ऐसा जाहेरी माएनों जुलम।। १६ ।।

अब आखिर के समय में कुल्जम सरूप की वाणी को पढ़कर मोमिनों के बीच इसके भेद खोल दिए हैं। अब पाक आजूज-माजूज को कुफ्र कहने से जुल्म होता है।

होत जुलम माएनों जाहेरी, तो भी छोड़ें ना ए सनंध।
क्या करें हक इलम बिना, कह्या देखीता ही अंध।। १७ ।।

जाहिरी अर्थ करने से जुल्म होता है। फिर भी दुनियां जाहिरी मायने ही लेती है। यह करें भी क्या? जागृत बुद्धि की वाणी के बिना देखते हुए भी अन्धे हैं।

इनमें लिखी इसारतें, निसान पाइए नजर बातन।
लिए ऊपर के माएने, क्यों पाइए कयामत दिन।। १८ ।।

कुरान में सब बातें इशारों में लिखी हैं और इन बातों के भेद बातूनी नजर में ही समझे जा सकते हैं। ऊपर के मायने लेने से कयामत के दिनों का पता नहीं लगेगा।

पढ़े कहें दिन कयामत. हकें रखे अपने हाथ।
या तो हक आपै खोलहीं, या हादी खोलें जो हक साथ।। १९ ।।

पढ़े-लिखे लोग कहते हैं कि कयामत के दिन को खुदा ने अपने हाथ में रखा है। अब उसे स्वयं खुदा ही प्रगट करेंगे या उनके साथ में जो हादी होंगे, वह जाहिर करेंगे।

हक हाथ दिन तो कहे, जो हकें आप छिपाए।
सो निसान पाए दिन पाइए, सो जाहेर दुनी क्यों देख्या जाए।। २० ।।

श्री राजजी महाराज ने कयामत के दिन को अपने हाथ में छिपाकर रखा। वह इसलिए कि जब इमाम मेंहेंदी दुनियां में प्रगट हों, तो सबको जाहिरी में खबर मिल जाए।

Nijanand App

जो जाहेरी देखें जाहेर, माएने तो छिपे निसान।
निसान देखोगे दिन कयामत, सो क्यों होए जाहेरियों पेहेचान।। २१ ।।

जाहिरी दुनियां वाले लोग कुरान के निशानों को जाहिरी नजर से देखते हैं, जबकि उनके बातूनी अर्थ छिपे हैं। उनके बातूनी अर्थ कयामत के समय जाहिर होंगे, तो फिर इस कयामत के दिन की पहचान जाहिर लोगों को कैसे हो?

जो कयामत देखावते जाहेर, तो निसान भी करते जाहेर।
तो करते ना यों इसारतें, जो दुनी देखावते बाहेर।। २२ ।।

यदि उस समय कयामत जाहिरी रूप से करनी होती तो निशानों को भी जाहिरी लिख देते। फिर वह इस तरह की बातें इशारतों में न लिखते और दुनियां वालों को सब कुछ समझ में आ जाता।

बड़ा कह्या सब चीजों से, ले जिमी लग आसमान।
दिन बीच दुनी की दौड़त, सौ तरफ खाहिस जहान।। २३ ।।

आजूज को सब चीजों से बड़ा आसमान तक सौ गज का कहा है। आजूज दिन है और दिन में इन्सान की चाहना सौ तरफ दौड़ती है।

बड़ा कह्या इन माएनों, करी रोसन आकास जिमी।
सौ गज कहे सौ तरफों के, दौड़े खाहिस दिन आदमी।। २४ ।।

आजूज को इसीलिए सौ गज का बड़ा कहा है कि आदमी की इच्छाएं जमीन से आकाश तक सौ तरफ दौड़ती हैं।

योंहीं कह्या बड़ा माजूज, हुई रात आकास जिमी ले।
दुनी आंख मूंदे बीच रात में, भई दिस मानिंद एक गज के।। २५ ।।

इसलिए माजूज को बड़ा कहा है। माजूज रात को कहा है, जिसमें दुनियां जमीन से आकाश तक आंखें बन्दकर सोती है, इसलिए उसको एक गज का कहा है, क्योंकि इन्सान की चाहनाएं एक तरफ हो जाती हैं।

जो सय आई दिनमें, तिन सबों खाहिस सौ तरफ।
सोई सबों एक तरफ रातकी, ए देखो माएने कर हरफ।। २६ ।।

दिन के अन्दर इन्सान की चाहना सौ तरफ होती है और वह सब तरफ से सिमटकर रात को एक तरफ हो जाती है। इन हरफों के अर्थ को समझो।

जो कह्या सौ गज का, सो सब से बड़ा क्यों होए।
और भी कह्या सबसे बड़ा, तो क्यों एक गज कह्या सोए।। २७ ।।

जिसे सौ गज का बड़ा कहा है उससे बड़ा एक गज वाला कैसे हो गया?

दिवाल कही दुनी उमर, ए टूटे रहे न कोए।
खाएंगे एही सबन को, उमर चाट काटत हैं दोए।। २८ ।।

दुनियां की उमर को अष्टधातु की दीवार कहा है जिसको यह आजूज-माजूज (दिन-रात) चाटते रहते हैं। जब महाप्रलय होगी तो कुछ नहीं बचेगा।

Nijanand App

जाहेरी कहें दिवाल, हद बांधी सिकंदर।
सो तो जाहेर किन देखी नहीं, बिन माएने खुले अंदर।। २९ ।।

जाहिरी लोग कहते हैं कि सिकन्दर बादशाह ने अष्टधातु की दीवार बनाई थी। उसे आज दिन तक किसी ने देखा ही नहीं और बिना इसके रहस्य को समझे भेदों का पता चलता नहीं।

ए रात दिन काल दुनी के, एही काटें दायम उमर।
एही खासी सब सय को, दिन पूरे कर फजर।। ३० ।।

यह दिन-रात दुनियां की उम्र को चाटते रहते हैं। यही सवेरा होने तक सब संसार को खा जाएंगे।

आजूज माजूज हुए जाहेर, केता किया दुनी पर मार।
अजूं न देखे दुनी स्याह दिल, जो पड़ी आलममें एती पुकार।। ३१ ।।

आजूज-माजूज अब जाहिर हो गए हैं। उन्होंने दुनियां को कितना परेशान कर रखा है। सारी दुनियां में हाय-तोबा मचाते हैं। फिर भी यह काले दिल वालों की समझ में नहीं आ रहा है।

औलाद कही याफिस की, जाके भाई स्याम हाम।
ए तीनों से पैदा सब दुनी, ए लिख्या बीच अल्ला कलाम।। ३२ ।।

यह याफिस पैगम्बर की औलाद कहे गए हैं, जिसके भाई स्याम और हाम थे। कुरान में लिखा है कि सारी दुनियां स्याम, हाम और याफिस की ही औलाद है।

ए तीनों भाइयों की पेहेचान, दुनी को होसी हक इलमें।
एक दीन होसी सबे, जब लई बूझ सबों दिलमें।। ३३ ।।

इन स्याम, हाम और याफिस तीनों भाइयों की पहचान जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम वाणी से होगी। जब यह बात सबकी समझ में आ जाएगी, तब सब एक दीन को मानने वाले हो जाएंगे।

जो लों ले ऊपर के माएने, तो लों कबूं न बूझा जाए।
सक छोड़ न होवे साफ दिल, जो पढ़े सौ साल ऊपर जुबांए।। ३४ ।।

जब तक ऊपर के मायने लेंगे, तब तक बात समझ में नहीं आएगी। चाहे कुरान सौ साल पढ़ें, उनके संशय नहीं मिटेंगे और न दिल ही साफ होंगे।

इसारतें रमूजें अल्लाह की, सो लेकर हक इलम।
सो खोले रूहअल्लाह की, जिन दिल पर लिख्या बिना कलम।। ३५ ।।

अल्लाह की इशारतें और रमूजें जो कुरान में लिखी हैं, वह अल्लाह की जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम वाणी से श्यामा महारानी के अंग सुन्दरसाथ ही खोलेंगे। यह ज्ञान उनके दिलों में बिना कलम के लिखा हुआ है।

महामत कहे ए मोमिनों, खोल दिए चार निसान।
और भी तीन केहेत हों, ले बातून देखो दिल आन।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! कयामत के चार निशानों के भेद खोल दिए हैं। तीन निशानों का और विवरण करती हूं, जिनके बातूनी रहस्यों को दिल से समझो।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ५८८ ।।

Nijanand App

बाब तीन निसानका रूहअल्ला इमाम असराफील

चारों निसान ए कहे, और देखो कहे जो तीन।
ईसा इमाम असराफील, जिन खड़ा किया झंडा दीन।। १ ।।

चार निशानों का वर्णन किया है। बाकी तीन ईसा, इमाम और असराफील जिन्होंने दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) का झण्डा खड़ा किया है, उन्हें और समझ लो।

निसान लिखे दिन कयामत, सो तो रखे हक हादी हाथ।
या हादी खोलें हक इलमें, या खोलें सुंनत–जमात। । २ ।।

कयामत के निशानों को श्री राजजी महाराज ने अपने हाथ में रखा है। इनके भेद उनकी जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम वाणी से श्री प्राणनाथजी या मोमिन खोलेंगे।

तो लिखाया जाहेर कर, इतथें उठ्या झंडा नूर।
खड़ा किया बीच हिंदके, हुआ आसमान जिमी जहूर।। ३ ।।

इसलिए मक्का से साफ लिखवा दिया कि वहां से ईमान का नूरी झण्डा हिन्दुस्तान में पन्नाजी में खड़ा किया। जहां से सब जगह जमीन-आसमान में प्रकाश फैला।

निसान लिखे सो सब मिले, जो कयामत के फुरमाए।
ताए नफा न देवे तोबा पीछली, जो अव्वल झंडे तले न आए।। ४ ।।

कयामत के समय के जो सात बड़े निशान कहे थे, वह सब यहां जाहिर कर दिए। जो श्री प्राणनाथजी के झण्डे के नीचे नहीं आएंगे, उन्हें पिछली बन्दगी का लाभ नहीं मिलेगा।

लिख्या फलाने सिपारे, दिन हुए तोबा नफा नाहें।
जो अव्वल आया नूर झंडे तले, सो आया गिरो नाजी माहें।। ५ ।।

कुरान के तीसरे सिपारे में लिखा है कि जागृत बुद्धि के ज्ञान के बाद नूरी झण्डे के नीचे जो आया वही मर्द मोमिनों की जमात का है। बाकी को पछताना पड़ेगा।

कुल्ल अकल हक इलमें, होए पैदा बका हक दिन।
इन इलमें जहान जुलमती, करी हिदायत रोसन।। ६ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से सबको अखण्ड परमधाम की पहचान हो जाती है। इस कुलजम सरूप की वाणी से निराकार की दुनियां को भी पार के ज्ञान की पहचान करा दी।

जब हक झंडा नूर महंमदी, बीच खड़ा हुआ हिंद के।
तब अक्स नूर ईमान का, रह्या अंधेर कुफर पीछे।। ७ ।।

जब रसूल मुहम्मद के ज्ञान का नूरी झण्डा मक्का से उठकर श्री पन्नाजी में आकर खड़ा हो गया, तब मक्का में अन्धेर और कुफ्र मच गया। वहां से ईमान उठकर पन्नाजी में आ गया।

तो भी न विचारें दिल मजाजी, जो सखत लिख्या सौं खाए।
हक हादी उठाया वह झंडा, जिनें रात के अमल चलाए।। ८ ।।

मक्का से सख्त सौगन्ध खाकर लिखने पर भी यह झूठे दिल वालों ने उस पर विचार नहीं किया। अब इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने रात में चलाए गए सभी धर्मों को समाप्त कर उनके झण्डों को समाप्त कर दिया।

Nijanand App

हक हादी बिना झंडा हकीकी, और किने न खड़ा किया जाए।
सो इन बखत सदी आखिरी, जिन झंडे रात के दिए उठाए।। ९ ।।

श्री प्राणनाथजी के बिना दीन का हकीकी झण्डा और कोई खड़ा नहीं कर सकता, इसलिए श्री प्राणनाथजी महाराज ने अज्ञान में चल रहे सभी सम्प्रदायों के झण्डे समाप्त कर दिए।

वह झंडा जो जाहेरी, सो भी हक हादी बिना कौन उठाए।
जिन जैसी नीयत, तिन तैसी दई पोहोंचाए।। १० ।।

यह जाहिरी झण्डे भी श्री प्राणनाथजी के बिना कौन समाप्त कर सकता था। जो जिस नीयत से प्राणनाथजी के पास आया, उसको वही मंजिल प्राप्त हुई।

लिखियां ए बुजरकियां, ए जो कहियां बीच आखिरत।
सो कहें हाथ हमारे, दुनी फल पावसी कयामत।। ११ ।।

आखिरत के समय की बुजरकियां मोमिनों को मिलने की लिखी हैं। उन्हें यह झूठी दुनियां के धर्माचार्य कहते हैं कि हमारी बुजरकियां हैं और हम ही दुनियां को कायम करेंगे।

कहें हम खासी उमत, और हमहीं वारस कुरान।
कजा करत हैं हमहीं, हमहीं खावंद ईमान।। १२ ।।

वह तो यह भी कहते हैं कि हम ही खुदा की खास उम्मत हैं और हम ही कुरान के वारिस हैं। हमीं से दुनियां को सच्चा न्याय मिलेगा और हमारे ही अन्दर खुदा का पक्का ईमान है।

ए लिखे जाहेर माएने, सूरज ऊगसी दिलों पर।
पहाड़ पूजें हम निसान, बैत बका देखावें फजर।। १३ ।।

यह साफ लिखा है कि दुनियां वालों के दिलों पर अज्ञानता का सूर्य उदय हुआ जो मक्का के जाहिरी लोग पहाड़ पूजते हैं और कहते हैं कि फजर के समय इन्हीं पहाड़ों से हमको अखण्ड घर मिलेगा।

हम देखें राह निसान की, जो कहे बड़े कयामत।
देखें पैदा बैत अल्लाह से, जो हमसों करी सरत।। १४ ।।

जाहिरी लोग कहते हैं कि हम कयामत के उन बड़े निशानों का रास्ता देख रहे हैं जैसा मुहम्मद साहब ने हमसे वायदा किया है कि सभी निशान मक्का मदीना से जाहिर होंगे।

लिखे निसान कौल कयामत के, ले माएने बातन।
सो माएने मगज पाए बिना, समझ न परी किन।। १५ ।।

कयामत के मायने तब समझ में आते हैं जब उनके बातूनी अर्थ लिए जाएं, इसलिए बातूनी, अर्थों को समझे बिना किसी को आज दिन तक उनकी खबर नहीं हुई।

सात निसान बड़े कहे, जासों पाइए कयामत।
सोए दुनी तब देखसी, ऊगे सुरज मारफत।। १६ ।।

कयामत के सात निशानों का वर्णन किया है। यह दुनियां को तब दिखाई देंगे जब मारफत के ज्ञान का सूर्य जागृत बुद्धि की तारतम वाणी दुनियां में जाहिर हो जाएगी।

Nijanand App

तो लों अंधेरी रात की, छूटे नहीं क्यों ए कर।
देखें निसान बातून माएनों, तब पावें दिन आखिर।। १७ ।।

तब तक अज्ञान के रास्ते किसी तरह से भी दुनियां छोड़ नहीं पाएगी। जब जागृत बुद्धि से बातूनी अर्थ समझ आएंगे तभी उन्हें कयामत के दिन की पहचान होगी।

जो लों लिया जाहेरियों, माएना ऊपर का।
तब लग फना बीचमें, हुए जिद कर तफरका।। १८ ।।

जब तक दुनियां वाले ऊपर के मायने लेते रहे, तब तक अंधेरे में लड़-झगड़कर अलग-अलग धर्म चलाते रहे।

कौल तोड़ जुदे हुए, तो नारी कहे बहत्तर।
लिख्या जलसी आगमें, और कहा कहे इन ऊपर।। १९ ।।

इसलिए रसूल साहब की वाणी से हटकर उनके धर्म के बहत्तर टुकड़े हो गए। यह दोजख की आग में जलेंगे। इसके ऊपर अब क्या कहा जाए?

हक अर्स बका तब पाइए, जो खुले हक हकीकत।
दिन हुए सब देखिए, सूरज ऊगे मारफत।। २० ।।

श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम की पहचान तब हो, जब कुरान के रहस्य तारतम वाणी के ज्ञान के सूर्य से खुल जाएं और सबको सच्ची पहचान हो जाए।

सूरज ऊग्या मगरब दिलों, होसी जाहेर दाभा जिमी से।
अजूं देखें नहीं दज्जाल को, जो जाहेर हुआ सबमें।। २१ ।।

मक्का वालों के दिल में अज्ञान का सूर्य उदय हुआ। वहां की जमीन में मनुष्य पशु के रूप में बदल गए। दज्जाल सब में जाहिर हो गया, पर वह न देख सके।

नूर झंडा महंमदी इमामें, किया खड़ा हकीकी दीन।
क्यों दाखले मिले दिल मजाजी, दिल दुस्मन तोड़े आकीन।। २२ ।।

जब इमाम मेंहेंदी साहब ने नूरी झण्डा खड़ा कर दिया तो दुश्मन अजाजील ने दुनियां के दिलों को श्री प्राणनाथजी की वाणी पर यकीन नहीं लाने दिया, इसलिए झूठे दिल वाले और सच्चे दिल वाले आपस में कैसे मिल सकते हैं?

सूर बाजत असराफील, क्यों सुने दिल कान बिगर।
ओतो ले ले माएने बातून, निसान धरे कौल पर।। २३ ।।

अब जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील ज्ञान का बिगुल बजा रहा है। यह दुनियां वाले जिनके दिल और कान ही नहीं हैं, वह कैसे इस वाणी को सुन सकते हैं? यह असराफील फरिश्ता तो बातूनी अर्थ बता रहा है, जिन पर कयामत का मुद्दा है।

तो कह्या रसूलें हदीसमें, सूर देसी पहाड़ उड़ाए।
सो पहाड़ जरे ज्यों खाली मिने, फिरे उड़ते ना ठेहेराए।। २४ ।।

रसूल साहब ने हदीस में कहा है कि असराफील फरिश्ते के ज्ञान की आवाज से बड़े-बड़े धर्माचार्यों के अहंकार समाप्त हो जाएंगे। वह फिर जरा मात्र भी नहीं टिकेंगे। वह मिट्टी की तरह हवा में उड़ते फिरेंगे।

Nijanand App

तो मुसाफ मगज असराफीलें, किए जाहेर कई विध गाए।
तो एक सूरें दुनी फना करी, किए दूजे सूरें कायम उठाए।। २५ ।।

असराफील फरिश्ते ने कुरान के छिपे रहस्यों को कई तरह से जाहिर कर दिया। उसमें पहला सूर फूंककर दुनियां के झूठे अहंकार के ज्ञान को समाप्त किया और दूसरी बार सूर फूंककर सबको बहिश्तों में अखण्ड कर देगा।

ए पहाड़ जरे ज्यों क्यों हुए, क्यों देखे बिना दिल विचार।
पहाड़ कहे कुफर खुदी के, सो हुए पाक जरे ज्यों निरवार।। २६ ।।

बड़े-बड़े पढ़े-लिखे लोग यह विचार नहीं करते कि बड़े-बड़े पहाड़ रूई के कण के समान कैसे हो गए? बातूनी अर्थों में पहाड़ अहंकार कहे गए हैं, इसलिए जागृत बुद्धि से अहंकार मिट गए और वह पाक-साफ हो गए।

पाक जो होवें इन बिध, जब उड़े गुमान कुफर।
पाक हलके हुए बोझ डालके, तब आए बीच नूर नजर।। २७ ।।

इस तरह से जो पाक-साफ हो गए और जिनके अहंकार समाप्त हो गए, उन्हें अक्षर की नजर में बहिश्तों में अखण्ड सुख प्राप्त हुए (कायमी मिली)।

लिया दुनी पे ईमान, और दुनियां की बरकत।
खैंच लिया कुरान को, और फकीरों की सफकत।। २८ ।।

असराफील फरिश्ते ने दुनियां से ईमान छीन लिया। बरकत छीन ली। कुरान का ज्ञान छीन लिया। सन्त लोगों से आशीर्वाद की शक्ति छीन ली।

छीन लिया एता मता, तो भी न हुई खबर।
क्यों देखे मजाजी दुनियां, जो लों बातून नहीं नजर।। २९ ।।

जब इतनी सारी न्यामतें छिन गईं, फिर भी झूठी दुनियां वालों को कुरान के बातूनी रहस्यों की खबर नहीं हुई। यह झूठी दुनियां जागृत बुद्धि के ज्ञान के बिना कैसे समझेगी?

बड़ी दरगाह से नामें वसीयत. पुकार करी केती आए।
तो भी न विचारे दिल मजाजी, जो ऐसे लिखे सखत सौं खाए।। ३० ।।

मक्का से वसीयतनामे आए, तो संसार में हकीकत का हल्ला मचाया कि यह बात सच्ची है। हम सौगन्ध खाकर लिख रहे हैं। फिर भी झूठे दिल वाले इसका विचार नहीं करते।

हिसाब कह्या होसी हिंदमें, पुरसिस करसी हक।
हक इलम ले रुहअल्ला, करसी सबों बेसक।। ३१ ।।

कुरान में लिखा है कि आखिरत में हिन्द में ही सबका हिसाब होगा। श्री श्यामाजी महारानी श्री राजजी महाराज की तारतम वाणी से सब के संशय मिटा देंगे।

कई बुजरक कहावते रातमें, बैठे बैतअल्ला ले।
हक हममें बैठकरें हिसाब, जानें हमहीं सिर सबके।। ३२ ।।

मक्का के ज्ञानी लोग अज्ञान के अंधेरे में अपने को महान समझते थे और कहते थे कि खुदा हमारे बीच आकर इन्साफ करेंगे, इसलिए हम ही सबसे बड़े हैं।

Nijanand App

कहे पहाड़ कुफर खुदी के, बिन हक इलमें जाहेर बढ़े।
तब हकें मता छीन ले, पहाड़ किए हलके।। ३३ ।।

यह मक्का में इमाम लोग अहंकार रूपी पहाड़ बने बैठे थे। इन्हें तारतम वाणी के ज्ञान का अभी कुछ पता नहीं है। असराफील फरिश्ते ने इन सबका ज्ञान छीन लिया और उन सबके अहंकार को हलका कर दिया।

जब यों बुजरक हलके हुए, हिसाब दिए पाक होए।
कुफर खुदी जब उड़ गई, तब गुसल किया सब अंग धोए।। ३४ ।।

जब इस तरह से बड़े-बड़े कहलाने वाले लोग हलके हो गए, तो उनका अहंकार उड़ गया। तब उन्होंने अपने संसार की चाहनाएं समाप्त कर दीं।

जिन जैसा चीन्हा महंमद को, तासों तैसी रखी चिन्हार।
यों बदला पाए देखिए, या जीत या हार।। ३५ ।।

जिन्होंने श्री प्राणनाथजी महाराज को जिस रूप में पहचाना, उनको श्री प्राणनाथजी उसी रूप में मिले। इस तरह से अपने-अपने यकीन के अनुसार बदला मिला। अब चाहे जीतो या हारो, तुम्हारे हाथ है।

हिसाब किया देखे नहीं, हादिएं करी फजर।
किए फैल पुकारे बुजरक, बिन ईमान न देखे नजर।। ३६ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने सबका हिसाब करके ज्ञान का उजाला कर दिया है। बड़े कहलाने वाले अब भी कर्मकाण्ड को बड़ा कहते हैं, क्योंकि उनके पास ईमान नहीं है, इसलिए जागृत बुद्धि की तारतम वाणी की पहचान नहीं कर पाते।

क्यों ए न आवे पढ़ों ईमान, करें न दिल सहूर।
तो छीन ले भेजी वारसी, आप मोमिनों हाथ हक नूर।। ३७ ।।

यह पढ़े-लिखे लोग ईमान न होने के कारण से दिल से विचार नहीं करते, इसलिए श्री प्राणनाथजी ने इनका ज्ञान छीनकर अपने मोमिनों के हाथ दे दिया।

लिख्या सिपारे दूसरे, कहे असराफ मूसा एक हम।
महंमद मेला और कर, देखें क्यों चलावे हुकम।। ३८ ।।

कुरान के दूसरे सिपारे में लिखा है कि यहूदी लोग कहते थे कि मूसा पैगम्बर और हम ही सबसे बड़े ज्ञानी हैं। देखते हैं कि रसूल साहब किस तरह से अपना नया संगठन बनाकर हुकूमत चलाते हैं।

मिलावा महंमद का, ए जो मिले दरवेस।
देखें हम बिना काम महंमद का, क्यों कर जावे पेस।। ३९ ।।

यह फकीर लोग भी मिलकर कहते थे कि देखें, हमारे सहयोग के बिना रसूल साहब कैसे अपनी जमात को इकट्ठा कर सकेंगे।

जो मुनाफक ताना मारते, कौल करते थे रद।
मारे याही सिर्क से, अब नूर झंडे महंमद।। ४० ।।

जो मुनकिर लोग रसूल साहब को ताना मारते थे और रसूल साहब के वचनों को झूठा कहते थे, उन्हीं वचनों को सत्य सिद्ध करके श्री प्राणनाथजी ने अपना नूरी झण्डा पन्नाजी में खड़ा किया।

Nijanand App

रसूल ताना ए सुन के, फेर मेहेर कर बुलाए।
वह तो भी टेढ़ाई न छोड़े, रसूल मेहेर न छोड़ें ताए।।४१।।

रसूल साहब ऐसे लोगों के ताने भरे वचनों को बड़े प्यार से सुनते थे। फिर मेहर करके उनको बुलाते भी थे। यह विनाशकारी लोग अपनी टेढ़ाई नहीं छोड़ते थे। हमेशा संशय पैदा करते थे। तो रसूल साहब उनको अपने पास बुलाते थे और उन पर भी अपनी मेहर करते थे।

तब आयत भेजी हक ने, ल्याया जबराईल।
सो देखो आयत में, हक केहेसी असराफील।।४२।।

तब खुदा ने जबराईल फरिश्ते के हाथ एक आयत भेजी। जिसमें लिखा है कि आखिरत में असराफील फरिश्ता आएगा और हकीकी पहचान इमाम मेंहदी के रूप में कराएगा।

लिख्या सखत सौं खाए के, गया हमसों ईमान मुसाफ।
सो हादिएं देखाया झंडा अपना, करसी हिंद में हक इन्साफ।।४३।।

मक्का के लोगों ने कसम खाकर वसीयतनामे में लिखकर भेजा कि यहां से कुरान उठ गया, ईमान उठ गया और इमाम मेंहदी साहब ने अपना नूरी झण्डा हिन्द में कायम किया है। वही सबका न्याय चुकाएंगे।

सो भी लिख्या दिन कयामत, यों वारसी दई पोहोंचाए।
सो देखो सिपारे बाईसमें, जो उमी रोसन किए आए।।४४।।

कुरान में जो कयामत के दिनों के संकेत थे वह मोमिनों को मिल गए। इन अनपढ़ मोमिनों ने जागृत बुद्धि के ज्ञान से सारे संसार को ज्ञान दिया। यह कुरान के बाइसवें सिपारे में लिखा है।

खोज्या ना ढूंढ्या ना पढ़े, दिए मोमिनों हिस्से कर।
जो एता झंडे किया रोसन, तो भी देखे न दुनी नजर।।४५।।

मोमिनों को यह ज्ञान की बातें कहीं ढूंढ़नी या खोजनी नहीं पड़ीं। वह तो नूरी झण्डे (यकीन के) ने सब जाहिर कर दिया। फिर भी दुनियां आत्मदृष्टि से नहीं देखती।

ए सोई हुआ जो फुरमाया, आगूं भी फुरमाया होए।
सो जरा न छूटे फुरमाए से, तुम देखोगे सब कोए।।४६।।

कुरान में जो लिखा था, वही हुआ और आगे भी जो लिखा है, वही होगा। उसमें से जरा भी छूटेगा नहीं। यह तुम अपनी आंखों से सब देखोगे।

कुरान ल्यावे आखिर, आवसी फुरमान बरदार।
अमल करे कहे माफक, वाको सक नहीं वार पार।।४७।।

कुरान में लिखे अनुसार उसके रहस्य आखिर में खुलेंगे। कुरान को मानने वाले संसार में आएंगे, कुरान के कहे अनुसार आचरण करेंगे और इनके अन्दर किसी प्रकार का संशय नहीं होगा।

एता दिल मजाजी न बूझहीं, सोई खोले रमूजें किताब।
ए बड़े काम कौन करसी, बिना आखिरी खिताब।।४८।।

झूठे दिल वाले इस बात को नहीं समझते कि कुरान के रहस्य इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ही खोल रहे हैं। यह इतना बड़ा काम श्री प्राणनाथजी के बिना भला और कौन कर सकता है? क्योंकि इन्हीं के सिर पर खोलने का अधिकार है।

Nijanand App

ए अव्वल से आखिर लग, दुनी मुई मरेगी जे।
कर कजा इन मुसाफ सों, कौन उठावसी मुरदे।।४९ ।।

इस संसार में शुरू से अन्त तक दुनियां के लोग मरते रहे हैं और मरेंगे। तारतम वाणी के बिना इन सब का न्याय कौन करेगा? कौन मिटने वाले तनों में सोई आत्माओं को जगाएगा?

जो लों न चीन्हे महंमद को, तो लों सुध ना जमाने।
तब लग सुध न बका फना, ना सुध नफा नुकसाने।।५० ।।

जब तक दुनियां वाले श्री प्राणनाथजी की पहचान नहीं कर लेते, तब तक उनको जमाने की तथा कयामत की सुध नहीं है। अब तक उन्हें अखण्ड घर परमधाम की तथा इस झूठे मिटने वाले संसार की हकीकत का पता नहीं है। उनको यह भी खबर नहीं है कि हमारा लाभ किसमें है और नुकसान किसमें है?

सो पाइए बातून माएने, उपले आखिर नुकसान।
हक इलमें दिन होवे सब सुध, बिन इलम रात हैवान।।५१ ।।

यह रहस्य बातूनी मायनों से ही जाने जाते हैं। ऊपर के अर्थों से सदा नुकसान होता है। जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम वाणी से सब पहचान होती है। बिना तारतम वाणी के सभी रात के अंधेरे में पशुवत् भटकते रहे हैं।

ए माएने मुसाफ सोई करे, हकें भेज्या जिन ऊपर।
कुंजी इलम आई जिनपे, सोई खोल दे खुसखबर।।५२ ।।

खुदा ने जिनके लिए यह कुरान का सन्देश भेजा है, इसके अर्थ वही कर सकेंगे। तारतम वाणी का ज्ञान इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के पास आया है। वही स्वयं कुरान के रहस्य खोलकर अपने आने की खुशखबरी दे रहे हैं।

रसूल आखिरी अल्लाह का, ल्याया आखिरी किताब।
खोले रूहअल्ला आखिरी, दे मेंहेंदी को लिया सवाब।।५३ ।।

आखिरी पैगम्बर रसूल साहब आखिरी किताब कुरान को लाकर और रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी तारतम ज्ञान की कुंजी लाकर दोनों ने कुरान और तारतम कुंजी इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथ जी को देने का सवाब लिया।

आई कुंजी इलम ईमामपे, जिन सिर आखिरी खिताब।
कजा महंमद जुबांए, सब पीवसी सरबत आब।।५४ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के पास तारतम वाणी तथा जागृत बुद्धि और कुरान आ गया। इन्हीं को कुरान के खोलने का अधिकार है। यही इमाम मेंहेंदी साहब अपनी वाणी से सबका न्याय करेंगे, जिससे सब दुनियां को अखण्ड मुक्ति मिलेगी।

लिख्या सिपारे तीसरे, ले देखो हक अकल।
सरा तोरा बनी असराईलका, हकें दई बनी इस्माईल।।५५ ।।

कुरान के तीसरे सिपारे में लिखा है, जिसको जागृत बुद्धि के ज्ञान से विचार करके देखो। खुदा ने जाहिरी गद्दी मेहराज ठाकुर से लेकर बिहारीजी को दे दी।

Nijanand App

फुरकान दई हारून को, सो देखो कौल आखिर।
कोई कहे ए किस्से हो गए, सो कहे बेकौली बेखबर।। ५६ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने छत्रसालजी को कयामतनामा के वचनों की बख्शीश की। दुनियां वाले कहते हैं कि यह कुरान की बीती बातें हैं, इसलिए वह इन वचनों से मुनकिरी करते हैं, क्योंकि उनको इसकी पहचान नहीं है।

किस्से कुरान तौरेत के, पढ़े डालत पीठ पीछल।
कहे हो गए किस्से रातमें, यों इनों खोया फजर बका फल।। ५७ ।।

कुरान और तौरेत के किस्सों को पढ़े-लिखे लोग कहते हैं कि यह तो बीती बातें हैं। ऐसा कहने से जो आखिर में इनसे लाभ होने वाला था, वह फल भी उन्होंने खो दिया।

जेता मुसाफ माएना, सब नजूम और बातन।
सो खोले काम कयामतके, दिन होसी सबों रोसन।। ५८ ।।

कुरान के जाहिरी और बातूनी जितनी भी भविष्यवाणी है, उससे कयामत की जानकारी मिलती है। अब श्री प्राणनाथजी महाराज ने उन सब कयामत के रहस्यों को खोल दिया है। अब सबको सच्चा ज्ञान मिल जाएगा।

लिख्या सिपारे आठमें, तो लों पढ़्या नहीं कुरान।
मगज मुसाफ पाए बिना, सुध ना नफा नुकसान।। ५९ ।।

कुरान के आठवें सिपारे में लिखा है कि जब तक कुरान के रहस्य समझ न आ जाएं, तब तक यह न समझ लेना कि हमने कुरान को पढ़ा है। तब तक यह कैसे समझ आए कि हमें उससे लाभ हुआ या हानि?

ए किन भेज्या कौन आइया, ल्याया फुरमान किन ऊपर।
साल हजार नब्बे लग, ए पाई ना किन खबर।। ६० ।।

यह कुरान का ज्ञान किसने भेजा, किसके वास्ते आया और कौन लेकर आया? रसूल साहब के एक हजार नब्बे वर्ष (सम्वत् १७३५ तक) यह जानकारी किसी को नहीं मिली।

जाहेर कह्या ईसा आखिर, आए करसी एक दीन।
एही दज्जाल को मारसी, एही देसी सबों आकीन।। ६१ ।।

कुरान में जाहिर लिखा है कि आखिर को ईसा रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी आकर सबको खुदा का पूजक बनाएंगी और सबके झूठे अहंकार को समाप्त कर सबके अन्दर यकीन पैदा करेंगी।

मुरदे एही उठावसी, करसी साबित नबुवत।
और साबित कुरान माजजा, ए करसी ईसा हजरत।। ६२ ।।

ईसा रूह अल्लाह ही अपने दूसरे तन से संसार के मुर्दों को बहिश्तों में कायमी देंगे। रसूल साहब की बातों को सत्य सिद्ध करेंगे। कुरान की बातों को एक करामात की तरह सिद्ध करेंगे।

अब देखो कुरान वारसी, लिख्या आखिर बोझ सिर इन।
ए कौन करे मसी बिना, रात उड़ाए के दिन।। ६३ ।।

कुरान की वारसी मोमिनों पर है और दुनियां को कायम करने की जिम्मेदारी का बोझ इन्हीं मोमिनों पर है। अज्ञान को समाप्त कर जागृत बुद्धि के ज्ञान से पहचान ईसा रूह अल्लाह के बिना कौन करा सकता है?

Nijanand App

फुरमान आया ईसे पर, ए देखो साहेदी हदीस।
वह लेने न देवे माएने मगज, जिनों दिल दुस्मन अबलीस।। ६४ ।।

मुहम्मद साहब ने हदीस में लिखा है कि यह कुरान का ज्ञान ईसा रूह अल्लाह के वास्ते ही आया है, परन्तु दुनियां वाले जिनके दिलों पर शैतान की बैठक है, इस बात को नहीं समझने देते।

सो ईसा कह्या आखिरी, ए जो करत आखिर के काम।
करनी माफक सब को, देसी फल मुसाफ तमाम।। ६५ ।।

यह ईसा रूह अल्लाह ही आखिरत के समय कयामत के होने वाले सभी काम करेंगे। यही अपने दूसरे तन से श्री प्राणनाथजी इमाम मेंहेंदी जाहिर होकर सबको उनकी करनी के माफिक फल देंगे।

ए कही ईसे की आखिर, अब कहूं इसदाए।
तिन वाएदे रसूलें, फुरमान दिया पोहोंचाए।। ६६ ।।

यह ईसा रूह अल्लाह के आखिर के समय की बातों को बताया है। अब खेल के पहले की बातें बताती हूं। खुदा ने जो इनसे वायदे किए थे, उसी के अनुसार ही रसूल साहब ने कुरान इमाम मेंहेंदी साहब के पास पहुंचा दिया।

कह्या हकें मासूक भेजोंगा, उतरते रूहों अर्स से।
सिरदार तिनमें रूह अल्ला, हकें तासों कौल किया आपमें।। ६७ ।।

परमधाम से उतरते समय श्री राजजी महाराज ने रूहों से कहा था कि मैं श्री श्यामा महारानी को भेजूंगा और वह तुम्हारे सिरदार होंगे। अपने भी आने का वायदा रूहों से किया।

कहे रसूल रूहअल्ला वास्ते, ल्याया आखिरी फुरमान।
रूह अल्ला इमाम आवसी, ले हक इलम पढ़सी कुरान।। ६८ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि श्री श्यामाजी के वास्ते ही मैं यह आखिरी फरमान (कुरान) लाया हूं। श्री श्यामाजी महारानी और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज बाद में आएंगे। जो जागृत बुद्धि का ज्ञान लेकर कुरान को पढ़ेंगे।

मारसी सबों का सैतान, तब होसी एक दीन।
सुभेसक भाने लदुन्नी, होसी सब दिलों पाक आकीन।। ६९ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से वह सबके अन्दर के शैतान को मार देंगे। जिससे सारी दुनियां में एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) ही हो जाएगा। यह तारतम वाणी सबके दिल के संशय मिटाएगी और सबके दिलों को पाककर पारब्रह्म पर यकीन दिलाएगी।

ए हक कौल कहे रसूलें, जो रूहों सों किए इसदाए।
सो कुंजी दई दिल मसिएं, क्यों औरों खोल्या जाए।। ७० ।।

खुदा ने रूहों से जो वायदे किए थे, उन वायदों को रसूल साहब ने कुरान लाकर जाहिर कर दिया। ईसा रूह अल्लाह ने तारतम ज्ञान की कुंजी से उसके छिपे रहस्यों को खोला। बिना तारतम वाणी के दूसरे इन कुरान के रहस्य को कैसे खोल सकते थे ?

Nijanand App

कुरान वारस मोमिन कहे, पढ़या या उमी होए।
बिन अर्स रूहें हक न्यामत, दूजा ले न सके कोए।।७१ ।।

कुरान को समझने वाले मोमिन हैं चाहे वह पढ़े हों या अनपढ़ हों। खुदा की इन न्यामतों को परमधाम के मोमिनों के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं ले सकता।

हक फुरमान मासूक ल्याइया, कुंजी रूहअल्ला साथ।
सो इमाम खोलें बीच अर्स रूहों, जो एक तन सुंनत-जमात।।७२ ।।

श्री राजजी महाराज के आदेश को रसूल साहब लाए। श्री श्यामाजी महारानी तारतम ज्ञान की कुंजी लाईं। इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज परमधाम की रूहों के बीच जो एक ही तन हैं, एक ही सुन्नत जमात के हैं, कुरान के भेद खोल रहे हैं।

जब आवें यार ले महंमद, पट खोल दे मुसाफ दीदार।
काजी कजा तब होएसी, दूजा कौन खोले ए द्वार।।७३ ।।

जब आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी महाराज अपने मोमिनों को लेकर पधारेंगे, तो कुरान के सारे रहस्यों को खोलकर पारब्रह्म की पहचान करा देंगे। तब श्री प्राणनाथजी महाराज न्यायाधीश बनकर सबका न्याय करेंगे और सबको बहिश्तों में कायमी देंगे। इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के बिना बहिश्तों के दरवाजे दूसरा कौन खोल सकता है?

कहे महंमद मैं अव्वल, रूहअल्ला आवसी आखिर।
अहेलबेती मेंहेंदी बीचमें, गिरो राखी पनाह कर।।७४ ।।

रसूल साहब ने कहा कि मैं पहले आया हूं। रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी आखिर में आएंगे। परमधाम के मोमिनों के बीच इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज अपनी जमात को शरण में लेंगे।

मजाजियों में ले मुसाफ, क्या हक कजा करसी बीच रात।
जब हक हादी आई उमत, तबही उड़ी जुलमात।।७५ ।।

झूठे दिल वालों ने समझा क्या खुदा कुरान के ज्ञान से न्याय करेगा? जब श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी महारानी, रूह मोमिन आए, तभी अन्धकार मिटा।

आया फुरमान रूहअल्ला पर, करसी एही कयामत के काम।
मार दज्जाल एक दीन कर, देसी हैयाती तमाम।।७६ ।।

रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी पर तारतम वाणी का ज्ञान आया। यह ही अपने दूसरे तन श्री प्राणनाथजी महाराज के रूप में जाहिर होकर कयामत के सारे काम पूरे करेंगे। संसार के अन्दर दज्जाल को मारकर, अर्थात् तारतम वाणी से सबके संशय मिटाकर सबको एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में लाकर कायमी देंगे।

अव्वल ल्याया एहिया, ईसे पर आकीन।
कहें पढ़े सो हो गया, जिने दई जिंदगानी दीन।।७७ ।।

कुरान में लिखा है कि श्री देवचन्द्रजी के ऊपर मेहराज ठाकुर सबसे पहले यकीन लाए। दुनियां वाले कहते हैं कि ईसा और एहिया की बातें बीत चुकी हैं, जिन्होंने धर्म को नया रूप दिया।

Nijanand App

एही गिरो पैगंमरों आखिरी, जिन लई महंमद बूंदें नूर।
ए सोई उतरे अर्स से, जिन किए कौल हजूर।। ७८ ।।

यह मोमिन आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी की जमात हैं, जिन्होंने उनकी तारतम वाणी की बूंदों को ग्रहण किया। यही वह मोमिन हैं जो परमधाम से खेल में उतरे हैं। खुदा ने इन्हीं से वायदे किए थे।

कह्या आखिर पैगंमर आवसी, देसी साहेदी अपनी उमत।
जो आए कौल कर हक से, तब जाहेर होसी कयामत।। ७९ ।।

कुरान में लिखा है कि इमाम मेंहदी साहब आखिर में आएंगे और अपनी जमात को कुरान की गवाही देकर यकीन दिलाएंगे। उन मोमिनों को यकीन दिलाएंगे जो खुदा से वायदा करके खेल में आए हैं। तभी दुनियां को कायमी होने का पता चलेगा।

निसान बड़ा ईसा आखिरी, और एही आखिरी किताब।
महंमद मेंहेंदी आखिरी, इमाम आखिरी खिताब।। ८० ।।

इसलिए ईसा रूह अल्लाह को कयामत का बड़ा निशान बताया है और कुलजम सरूप को आखिरी किताब बताया है। इमाम मेंहदी ही आखिरी स्वरूप हैं, जिन्हें आखिरी इमाम होने का खिताब प्राप्त है।

एही बड़े पहाड़ दो निसान, बका बतावें बैत–अल्ला।
दे मुसाफ मगज साहेदियां, दिन देखावें नूरतजल्ला।। ८१ ।।

ईसा रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को दो बड़े पहाड़ों के समान बताया है जो अखण्ड परमधाम की बातें बताएंगे और कुरान के बातूनी अर्थ खोलकर परमधाम का दर्शन कराएंगे।

कह्या आवसी असराफील, आखिरी बड़ा निसान।
जो फूंके जिमी पहाड़ उड़ावसी, दूजी फूंके कायम करे जहान।। ८२ ।।

इन्हीं इमाम मेंहेंदी के साथ में असराफील फरिश्ता आएगा जिसे कयामत का सबसे बड़ा निशान बताया गया है। इस असराफील फरिश्ते के एक बार सूर फूंकने से दुनियां में फैले झूठे समस्त ज्ञान समाप्त हो जाएंगे। दूसरी बार सूर फूंककर सारे संसार को बहिश्तों में अखण्ड कायमी देगा।

असराफील चिन्हाए सों, मगज मुसाफी गाए।
चौदे तबक एक सूर से, करके साफ उड़ाए।। ८३ ।।

यह असराफील फरिश्ता सबसे पहले कुरान के रहस्यों को खोलकर अपनी पहचान बताएगा और चौदह लोकों के ज्ञानियों के घमण्ड को समाप्त करेगा और सच्चा ज्ञान देकर अपनी पहचान कराएगा।

जब सूर बाजे दूसरा, देवे हक चिन्हाए।
तिन सबों कायम किए, रही आठों भिस्त भराए।। ८४ ।।

असराफील जब दूसरी बार सूर फूंकेगा तो खुदा की पहचान कराएगा और तब संसार के लोगों को आठ किस्म की बहिश्तों में कायमी देगा।

आया असराफील आखिर, साथ आखिरी इमाम।
माएने मगज मुसाफ के, किए जाहेर सब तमाम।। ८५ ।।

यह असराफील फरिश्ता इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के साथ अन्त में आया और आकर कुरान के सारे रहस्य जाहिर कर दिए।

Nijanand App

हकें ऐसा साथ इमाम के, दिया फरिस्ता मरद।
उड़ावे जिमी पहाड़ जड़ मूल से, सो होसी फरिस्ता कैसे कद।। ८६ ।।

खुदा ने इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के साथ में मर्द फरिश्ते असराफील को भेजा जो दुनियां के ज्ञान के अन्धकार को जड़ (मूल) से समाप्त कर देता है। विचार करने वाली बात है कि यह असराफील फरिश्ता कितना लम्बा चौड़ा होगा।

आठों भिस्त कायम करी, बजाए दूजा सूर।
बरस्या आब सबन पर, अर्स अजीम का नूर।। ८७ ।।

इस असराफील फरिश्ते ने दूसरी बार सूर फूंककर आठ बहिश्तें कायम कर दीं। और वाणी मिलने से अब दुनियां को परमधाम की पहचान मिल गई।

हैयात किए सब इन ने, ए जो कहे बुजरक।
और बका सब को किए, जिमी आसमान खलक।। ८८ ।।

दुनियां के बुजरक देवी-देवताओं को भी असराफील ने अखण्ड कर दिया और आसमान और जमीन के सभी जीवों को भी अखण्ड कर दिया।

आठों भिस्त कायम करी, कर रोसन जहूर।
पेहेचानो ए फरिस्ता, ले हक इलम सहूर।। ८९ ।।

सारे संसार को ज्ञान देकर इसने आठों बहिश्तें कायम कर दी हैं। अब कुलजम सरूप की वाणी से इस फरिश्ते की पहचान करो।

आसमान जिमी जड़ मूल सें, एक फूंके देवे उड़ाए।
कायम करे सब दूजी फूंके, बका भिस्तमें उठाए।। ९० ।।

यह असराफील फरिश्ता एक बार सूर फूंकने से आसमान और जमीन के इस संसार को जड़ से समाप्त कर देता है और दूसरी बार सूर फूंकने से आठ बहिश्तों में कायम कर देता है।

ए साथ महंमद मेंहेंदी के, फरिस्ता आया आखिर।
क्यों न चीन्हो तुम इन को, जो करसी दिन फजर।। ९१ ।।

यह असराफील फरिश्ता आखिर में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के साथ आया है और यही अज्ञान हटाकर ज्ञान का उजाला करेगा, इसलिए तुम इसे क्यों नहीं पहचानते?

कह्या गाए असराफील मुसाफ, किए जाहेर मगज कुरान।
या से पाक होए दुनी कयामतें, फल पाया सुभान।। ९२ ।।

लिखा है कि असराफील आखिर में आकर कुरान को गाएगा और उसके छिपे रहस्यों को जाहिर करेगा। इससे दुनियां पाक-साफ होकर खुदा की पहचान करेगी और बहिश्तों में कायमी पाएगी।

ए पहाड़ निसान आखिरी, जिन देखाई बका बिसात।
दुनी पहाड़ पूजे जाहेरी निसान, कर बैठे बका बीच रात।। ९३ ।।

आखिर के वक्त में ईसा रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की महिमा ही दो पहाड़ों के समान बताई है, क्योंकि इन्होंने ही अखण्ड घर की पहचान कराई। अरब वाले जाहिरी लोग जाहिरी पहाड़ों को पूजकर कहते हैं कि यही हमको अखण्ड परमधाम देंगे।

Nijanand App

मेयराज हुआ महंमद पर, सो लई सब हकीकत।
हुए इलमें अर्स दिल औलियों, ऊगी बका हक सूरत।। ९४ ।।

रसूल साहब को मेयराज हुआ (दर्शन हुआ) और उन्होंने परमधाम की हकीकत बताई। जिनके दिल को खुदा का अर्श कहा है, उन मोमिनों ने कुलजम सरूप की वाणी से ग्रहण किया और अखण्ड परमधाम तथा श्री राजजी के स्वरूप पर ईमान लाए।

अब देखसी सब नजरों, दोऊ झण्डों करी पुकार।
बातून झण्डा नूर का, पोहोंच्या बिलंद नूर पार।। ९५ ।।

अब सारी दुनियां के लोग इस बात को समझेंगे, क्योंकि शरीयत का झण्डा रसूल साहब की कुरान, मारफत का झण्डा कुलजम सरूप साहब की वाणी पुकार कर रही है। यही बातूनी ज्ञान का झण्डा है जो अक्षर के पार परमधाम तक पहुंचाता है।

दुनी जाहेरी झण्डे की, तिन पांउं कटाए पुल–सरात।
लई ना हक हकीकत, और वजूदें चल्या न जात।। ९६ ।।

दुनियां जाहिरी झण्डों को लेकर चल रही है, इसलिए शरीयत (कर्मकाण्ड) के रास्ते में उनके पैर कट जाते हैं और शरीर से चला नहीं जाता, क्योंकि उन्होंने पारब्रह्म के हकीकत के ज्ञान को नहीं लिया।

महामत कहे ए मोमिनों, हादिएं खोले कयामत निसान।
हक अर्स बका जाहेर हुए, फरिस्ते नूरै नूर किया जहान।। ९७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कयामत के सभी निशान जाहिर कर दिए हैं। अब उनके ज्ञान से अखण्ड परमधाम श्री राजजी महाराज के स्वरूप की भी पहचान हो गई। इनके साथ आए असराफील फरिश्ते ने सारे संसार में जागृत बुद्धि के ज्ञान को फैला दिया।

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ६८५ ।।

झंडा हकीकी खड़ा हुआ हिन्दमें

जाए इलम पोहोंच्या हक का, ताए हुई हक हिदायत।
सो आया फिरके नाजी मिने, झण्डा दीन हकीकी जित।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जिसको श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान मिल गया, उसे श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान हो गई। वही (नाजी फिरका) निजानन्द सम्प्रदाय में आ गया। वही श्री पद्मावतीपुरी जहां हकीकी झण्डा खड़ा किया, उसके तले आ गया (अनुयायी कहलाया)।

लिखी कुरानमें हकीकत, होसी खोले एक दीन।
जब ऊग्या सूर मारफत का, आवसी देख सबों आकीन।। २ ।।

कुरान में लिखा है कि जब इसकी हकीकत के रहस्य खुल जाएंगे, तब सब एक दीन, एक पारब्रह्म के पूजक हो जाएंगे। जब जागृत बुद्धि के ज्ञान का सूर्य तारतम वाणी (कुलजम सरूप) आएगी तो उसे पहचानकर सबको पारब्रह्म पर यकीन आ जाएगा।

Nijanand App

मेयराज हुआ महंमद पर, सो लई सब हकीकत।
हुए इलमें अर्स दिल औलियों, ऊगी बका हक सूरत।। ९४ ।।

रसूल साहब को मेयराज हुआ (दर्शन हुआ) और उन्होंने परमधाम की हकीकत बताई। जिनके दिल को खुदा का अर्श कहा है, उन मोमिनों ने कुलजम सरूप की वाणी से ग्रहण किया और अखण्ड परमधाम तथा श्री राजजी के स्वरूप पर ईमान लाए।

अब देखसी सब नजरों, दोऊ झण्डों करी पुकार।
बातून झण्डा नूर का, पोहोंच्या बिलंद नूर पार।। ९५ ।।

अब सारी दुनियां के लोग इस बात को समझेंगे, क्योंकि शरीयत का झण्डा रसूल साहब की कुरान, मारफत का झण्डा कुलजम सरूप साहब की वाणी पुकार कर रही है। यही बातूनी ज्ञान का झण्डा है जो अक्षर के पार परमधाम तक पहुंचाता है।

दुनी जाहेरी झण्डे की, तिन पांउं कटाए पुल–सरात।
लई ना हक हकीकत, और वजूदें चल्या न जात।। ९६ ।।

दुनियां जाहिरी झण्डों को लेकर चल रही है, इसलिए शरीयत (कर्मकाण्ड) के रास्ते में उनके पैर कट जाते हैं और शरीर से चला नहीं जाता, क्योंकि उन्होंने पारब्रह्म के हकीकत के ज्ञान को नहीं लिया।

महामत कहे ए मोमिनों, हादिएं खोले कयामत निसान।
हक अर्स बका जाहेर हुए, फरिस्ते नूरै नूर किया जहान।। ९७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कयामत के सभी निशान जाहिर कर दिए हैं। अब उनके ज्ञान से अखण्ड परमधाम श्री राजजी महाराज के स्वरूप की भी पहचान हो गई। इनके साथ आए असराफील फरिश्ते ने सारे संसार में जागृत बुद्धि के ज्ञान को फैला दिया।

|| प्रकरण || १२ || चौपाई || ६८५ ||

झंडा हकीकी खड़ा हुआ हिन्दमें

जाए इलम पोहोंच्या हक का, ताए हुई हक हिदायत।
सो आया फिरके नाजी मिने, झण्डा दीन हकीकी जित।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जिसको श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का ज्ञान मिल गया, उसे श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान हो गई। वही (नाजी फिरका) निजानन्द सम्प्रदाय में आ गया। वही श्री पद्मावतीपुरी जहां हकीकी झण्डा खड़ा किया, उसके तले आ गया (अनुयायी कहलाया)।

लिखी कुरानमें हकीकत, होसी खोले एक दीन।
जब ऊग्या सूर मारफत का, आवसी देख सबों आकीन।। २ ।।

कुरान में लिखा है कि जब इसकी हकीकत के रहस्य खुल जाएंगे, तब सब एक दीन, एक पारब्रह्म के पूजक हो जाएंगे। जब जागृत बुद्धि के ज्ञान का सूर्य तारतम वाणी (कुलजम सरूप) आएगी तो उसे पहचानकर सबको पारब्रह्म पर यकीन आ जाएगा।

Nijanand App

दीदार हुआ हक सूरत का, देख अर्स नजर बातन।
न्यामत अर्सोंकी सबे, लई अर्स दिल मोमिन।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप का सभी को दर्शन हुआ। तब परमधाम को देखकर बातूनी बातें समझ में आएंगी। उस समय मोमिनों को जिनके दिल को अर्श किया है, क्षर, अक्षर और अक्षरातीत के अर्शों की पहचान हो जाएगी।

कहे आयतें हदीसें जाहेर, नूर झण्डा महंमदी जे।
दिन दिन घड़ी घड़ी पल पल, नूर बढताई देखोगे।। ४ ।।

कुरान की आयतों और मुहम्मद साहब की हदीस में स्पष्ट लिखा है कि जागृत बुद्धि के ज्ञान का नूरी झण्डा जो इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने खड़ा किया है, उसका तेज दिन-दिन, घड़ी-घड़ी और पल-पल बढ़ता ही रहेगा।

महंमद नूर है हक का, कुल सैयन महंमद नूर।
इन झण्डे कौल महंमद के, आखिर किया चाहिए जहूर।। ५ ।।

मुहम्मद (श्री श्यामाजी) श्री राजजी महाराज के नूरी अंग हैं। सभी रूहें (सखियां) श्री श्यामाजी महारानी के नूरी अंग हैं। इन श्री श्यामाजी महारानी से श्री राजजी महाराज ने परमधाम में वायदा किया था कि मैं ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहेंदी बनकर आऊंगा और नूरी झंडे के तले सबको जागृत बुद्धि का ज्ञान दूंगा।

लैलत कदर बीच मोमिनों, आए खोली रूह नजर।
हक इलम ले रूहअल्ला, करी इमामें फजर।। ६ ।।

लैल तुल कदर की रात्रि में मोमिन आए। श्री राजजी महाराज ने आकर जागृत बुद्धि के ज्ञान से उनकी आत्मदृष्टि खोली। पहले इस तारतम ज्ञान को लेकर श्री श्यामाजी महारानी आईं। फिर इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने आकर ज्ञान से अन्धकार मिटाकर सवेरा कर दिया।

जब लिया माएना बातून, रूह नजर खुली तब।
दिन मारफत हुआ आलम में, नूर रोसन किया अब।। ७ ।।

जब कुरान के बातूनी अर्थ समझ में आए, तब आत्मा की दृष्टि खुल गई। सारे संसार में अब मारफत के ज्ञान का सूर्य उदय हो गया।

तब सबोंने देखिया, जो कछू हक बिसात।
हक खिलवत जाहेर हुई, अर्स बका हक जात।। ८ ।।

तब मारफत का ज्ञान मिलने से सबको परमधाम की सभी न्यामतों की पहचान हो गई। तब श्री राजजी महाराज के मूल-मिलावा की बातें सबको जाहिर हो गईं और अखण्ड घर परमधाम तथा मोमिनों की पहचान हो गई।

फुरमाया सब हो चुक्या, मिले सब निसान।
हादी करसी जाहेर, खोल माएने मगज कुरान।। ९ ।।

कुरान में जो लिखा था वह सब जाहिर हो गया। आखिरत के सब निशानों के भेद खुल गए। अब इमाम मेहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज कुरान के इन सारे भेदों को खोलकर संसार में रोशनी करेंगे।

Nijanand App

झंडा नूरका महंमदी, ताए कबूं न होए नुकसान।
जेते दिन जित फुरमाया, रह्या तेते दिन तित ईमान।। १० ।।

इमाम मेहेंदी श्री प्राणनाथजी ने जो नूरी झण्डा कायम किया है उसकी कभी भी हानि नहीं होगी, अर्थात् कभी नीचा नहीं होगा। जितने दिन तक जहां जिस लीला को होना लिखा था, उतने दिन तक वहां ईमान रहा (मक्का से ईमान उठ गया)।

और ठौर हुकमें खड़ा किया, सो जाए लग्या नूर आसमान।
जो एक ठौर कदी न देखिए, तो और ठौर बिलंद हुआ जान।। ११ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से नूरी झण्डा दूसरी जगह खड़ा किया (मक्का से उठाकर पन्नाजी में खड़ा किया)। अब इस झण्डे का नूर जागृत बुद्धि का ज्ञान सारे ब्रह्माण्ड में फैल रहा है। यदि एक जगह उसका प्रचार, प्रमार न दिख रहा हो तो समझना कि नूरी झण्डा कहीं और जगह विस्तार से प्रचार कर रहा है।

लिख्या जाहेर हदीसमें, नूर झण्डा निसान।
सो हदीस देखे सेंती, करसी दिल पेहेचान।। १२ ।।

मुहम्मद साहब ने हदीस में नूरी झण्डे का निशान लिखा है। उस हदीस को देखने से इस बात की पहचान हो जाती है।

अव्वल झण्डा कह्या सरीयत, जाके तले दुनी पाक होए।
जो रहे तले फुरमाए के, ताकी सिफत करे सब कोए।। १३ ।।

शुरू में मक्का में शरीयत का झण्डा लगाया, जिसके नीचे दुनियां वाले निर्मल होकर ईमान लाते थे। जो कुरान के बताए रास्ते (शरीयत) पर चले, उनकी सभी प्रशंसा करते हैं।

पर सरीयत झण्डा नासूतमें, पोहोंच्या न लग मलकूत।
पकड़े पुल–सरात ने, छोड़ ना सके नासूत।। १४ ।।

शरीयत का झण्डा मृत्युलोक में लगाया जो बैकुण्ठ तक भी नहीं पहुंचता। लोगों ने कर्मकाण्ड को पकड़ रखा है, इसलिए शरीयत से मृत्युलोक को नहीं छोड़ सके।

जो लेवे राह तरीकत, ताके फैल हाल दिल से।
सो पाक होए पोहोंचे मलकूत, फरिस्तों के अर्स में।। १५ ।।

जो तरीकत के ज्ञान से चले और दिल से अपनी करनी और रहनी बनायी, वह निर्मल होकर त्रिगुण के मकान, जो देवी देवताओं का अर्श है, वहां तक जाते हैं।

बीच चौदे तबकों, कहे सात आसमान।
कोई सुरिया उलंघ न सक्या, देखो सोलमें सिपारे बयान।। १६ ।।

चौदह तबकों के बीच सात आसमान का बयान है। उसके ऊपर सुरिया सितारा (ज्योति स्वरूप) कहते हैं, को पार करके आगे कोई नहीं जा सकता। यह हकीकत कुरान के सोलहवें सिपारे में लिखी है।

आसमान जिमी बीच फना के, हवा लग ला--मकान।
ला लग पोहोंचे तरीकत, मुसाफ हकीकत बका बयान।। १७ ।।

आसमान और जमीन के बीच की सब दुनियां निराकार तक नाशवान है। तरीकत के मानने वाले निराकार तक पहुंचते हैं। आगे कुरान की हकीकत का ज्ञान अखण्ड परमधाम की पहचान कराता है।

Nijanand App

देखो सिपारे तीसरे, होवे हकीकत सों एक दीन।
सो आन मिलाए सब हुकमें, आए तले मारफत झण्डे आकीन।। १८ ।।

कुरान के तीसरे सिपारे में लिखा है कि हकीकत के ज्ञान से दुनियां एक दीन में आएगी। अब श्री राजजी महाराज के हुकम से इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने सब निशानों को जाहिर कर दिया। अब सब मारफत के ज्ञान (जागृत बुद्धि का ज्ञान) तारतम से नूरी झण्डे पर यकीन लाए।

फुरमाया सरीयत तरीकत, किया रात बीच अमल।
ना पोहोंचे बका दिन को, बिना हकीकत अर्स असल।। १९ ।।

कुरान में लिखा है कि शरीयत और तरीकत का ज्ञान का अमल (मानने वाले) रात में ही रहा। हकीकत के ज्ञान के बिना अखण्ड परमधाम की और कयामत के दिन की पहचान नहीं हो सकती।

माएने हकीकत मुसाफ के, पावें हक के इलम।
सो पोहोंचें जबरूतमें, होए सुध हक हुकम।। २० ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान से ही कुरान की हकीकत के ज्ञान जाने जाते हैं। जिसको राजजी के हुकम से हकीकत के ज्ञान कुरान की पहचान हो जाती है, वह अक्षरधाम तक पहुंचते हैं।

गिरो फरिस्ते नजीकी, बका नूर मकान।
उतरे मलायक इत थें, सो पोहोंचसी कर पेहेचान।। २१ ।।

ईश्वरीसृष्टि अक्षरधाम में हमारे नजदीक रहती है। वह अक्षरधाम से खेल देखने उतरी। हकीकत के ज्ञान को पहचान कर अपने घर वापस पहुंचेगी।

जब हक इलमें मारफत खुली, तब देख्या बका अर्स सूर।
सो सूर हुआ सिर सबनके, बरस्या बका हक नूर।। २२ ।।

जब श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से मारफत के भेद खुले, तब सबने अखण्ड परमधाम के जागृत बुद्धि के ज्ञान के सूर्य (कुलजम सरूप) को देखा। यही मारफत के ज्ञान का सूर्य अखण्ड परमधाम तथा श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान कराता है।

खासल खास अर्स अजीम, हक सूरत नूरजमाल।
इत हा़दी रूहें खिलवत, ए वाहेदत जात कमाल।। २३ ।।

परमधाम में खासलखास रूहें साक्षात् श्री राजजी महाराज तथा श्री श्यामाजी मूल-मिलावा में एकदिल होकर बैठे हैं।

इन विध झण्डा खड़ा किया, हादी मोमिनों इत आए।
औलिए अंबिए पैगंमर, गोस कुतब मिले सब धाए।। २४ ।।

इस तरह से मारफत के ज्ञान का झण्डा हादी श्री प्राणनाथजी तथा मोमिनों ने आकर श्री पन्नाजी में खड़ा किया। अब सब औलिए, अंबिए, गोस और कुतुब दौड़-दौड़कर झण्डे के नीचे आ रहे हैं।

आगूं जिन बंदगी करी, ए सोई जमाना बुजरक।
सो देखो इत हक कदमों, कोई पीछा रहे न मांहें खलक।। २५ ।।

पहले से जिन्होंने बन्दगी (तपस्या) करके यह वर मांग रखा था कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के आने पर हमको मनुष्य तन मिले, यह वही श्रेष्ठ जमाना आ गया है। अब देखो, संसार में कोई पीछे नहीं रहता। सब श्री प्राणनाथजी के चरणों में दौड़कर आ रहे हैं।

Nijanand App

अब दुनियां पीछी क्यों रहे, जब हुई हक कजाए।
हुआ सब पर हुकम महंमदी, सो सब लेसी सिर चढ़ाए।। २६ ।।

अब खुदा खुद काजी बनकर सबका न्याय कर रहे हैं। तो दुनियां पीछे कैसे रहेगी? अब श्री प्राणनाथजी के हुकम को सबने स्वीकार किया।

उठी कही जेती न्यामतें, सो आई बीच हिंदुस्तान।
जो झण्डा महंमदी नूर का, नूर रोसन ईमान।। २७ ।।

मक्का मदीने से जो न्यामतें उठ गई बताई हैं, वह सब पन्नाजी में आ गईं, जहां नूरी झण्डा श्री प्राणनाथजी ने लगाया है। अब सभी को ज्ञान मिल गया और ईमान आ गया।

बेसक मेला इत होएसी, महंमद सरा अदल।
तिन कायम करी दुनी फानी को, ले हक इलम अकल।। २८ ।।

आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के दरबार का न्याय सच्चा है। वह श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से सारी मिटने वाली दुनियां को अखण्ड कर रहे हैं, इसलिए पन्नाजी में ही सबसे बड़ा मेला छत्तीस हजार का होगा।

जो कह्या सरा दीन महंमदी, तामें सकसुभे कोई नाहें।
सो सब सुध देवे हक बका, सकसुभे न अर्स दिल माहें।। २९ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के दीन निजानन्द सम्प्रदाय की पद्धति में किसी प्रकार का संशय नहीं है। उसी का ज्ञान अखण्ड परमधाम की पहचान कराता है, जिससे मामिनों के दिल के संशय मिट जाते हैं।

ना सक महंमद दीनमें, ना सक महंमद सरीयत।
ना सक सुंनत जमातमें, कहें यों आयतें हदीसें सूरत।। ३० ।।

श्री प्राणनाथजी के दीन निजानन्द सम्प्रदाय में और उनकी पद्धति में किसी प्रकार के संशय नहीं हैं और सुन्नत जमात मोमिनों में भी किसी प्रकार के संशय नहीं रहेंगे। ऐसा कुरान की आयतों, हदीसों और सूरतों (प्रकरणों) में लिखा है।

अब क्यों झण्डा छिपा रहे, हुआ जाहेर तजल्ला नूर।
जाहेर किया नूर अर्स का, अर्स दिल महंमद जहूर।। ३१ ।।

अब जिस जागृत बुद्धि के ज्ञान से परमधाम की पहचान हो गई है और जिसने परमधाम की सब न्यामतों को जाहिर कर दिया है, वह ज्ञान का झण्डा कैसे छिपा रहेगा? इससे श्री राज श्यामाजी की और रूहों की पूरी पहचान मिली है।

खिलवत भी जाहेर करी, जो हक पातसाही वाहेदत।
छिपी सब जाहेर हुई, जो हक दिल बीच न्यामत।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज की परमधाम (मूल-मिलावा) में जो साहेबी है वह जाहिर हो गई। श्री राजजी महाराज के दिल की सब छिपी बातें जाहिर हो गई।

Nijanand App

सिपारे चौथे मिने, कही गैब हक खिलवत।
सो जाहेर करसी मोमिन, उतर के आखिरत।। ३३ ।।

कुरान के चौथे सिपारे में लिखा है कि मूल-मिलावा की छिपी बातों को मोमिन आखिरत के खेल में उतरकर जाहिर करेंगे।

हुई ढील होते फजर, वास्ते आवने हक न्यामत।
सो आया अर्स बका मता, हुआ बीच बारहीं सदी बखत।। ३४ ।।

फजर का ज्ञान (मारफत सागर) के आने में देरी इसलिए हुई कि मोमिनों के वास्ते श्री राजजी महाराज का स्वरूप, सिनगार तथा अखण्ड परमधाम के पच्चीस पक्षों का ज्ञान (खिलवत, सागर, सिनगार, परिकरमा) उतरना था, इसलिए मारफत का ज्ञान (श्री राजजी महाराज के दिल की बातें) बारहवीं सदी १७४८ में आया।

भई रोसनाई रूहअल्लाह की, सुरू दसई अग्यारहीं विस्तार।
होते सदी बीच बारहीं, आया बका मता बेसुमार।। ३५ ।।

रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी दसवीं सदी में प्रगट हुईं। ग्यारहवीं सदी में ज्ञान का पूरा विस्तार हुआ। बारहवीं सदी में अखण्ड परमधाम का पूरा ज्ञान बेशुमार मारफत सागर आ गया।

झंडा महंमदी नूर का, सो पोहोंच्या नूर बिलंद।
हुआ दिन दिल महंमद मारफत, उड़ी रात फरेबी फंद।। ३६ ।।

अब इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के नूरी झण्डे का जागृत बुद्धि का ज्ञान परमधाम तक पहुंचा और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज का दिल जो मारफत के ज्ञान से भरपूर है, उसने दुनियां के झूठे फरेबी ज्ञान को उड़ा दिया।

सिपारे उनईस में, लिखे एक ठौर बयान तीन।
ए जो देखो दिल देय के, तो दिल नकस होए आकीन।। ३७ ।।

कुरान के उन्नीसवें सिपारे में एक जगह तीन सूरतों का बयान, एक जगह एक तन में इकट्ठे होने का लिखा है। अब दिल से विचार करके देखो तो तुम्हारे दिल पर पक्का यकीन अंकित हो जाएगा।

आवे अर्स आकीन हक महंमद पर, जो देखो हकीकत मारफत।
इलम लदुन्नी हक के, होए हक हिदायत।। ३८ ।।

अब हकीकत और मारफत के ज्ञान को देखो तो तुम्हें परमधाम पर यकीन आ जाएगा। जो मुहम्मद ने कुरान में कहा है, वह सत्य है। श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से यह सब हकीकत की पहचान हो जाएगी।

इन विध झण्डा महंमदी, खड़ा हुआ बीच हिंदुस्तान।
चौदे तबक जुलमत परे, नूर पोहोंच्या लाहूत आसमान।। ३९ ।।

इस तरह से इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज का नूरी झण्डा श्री पद्मावतीपुरी धाम पन्ना में खड़ा हुआ जो चौदह तबक के आगे, निराकार के आगे अक्षरधाम के आगे परमधाम तक पहुंचा (निराकार के पार थें तिन पार के भी पार)।

Nijanand App

महामत कहे मदीने से, लिखे खलीफों पर फुरमान।
उठी दुनी बरकत सफकत फकीरों, और कलाम अल्ला ईमान।। ४० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मदीने से इस्लाम के खलीफों ने वसीयतनामे औरंगजेब पर लिखे कि मदीने से बरकत, फकीरों के आशीर्वाद देने की शक्ति, कुरान और ईमान (नूरी झण्डा) उठ गया है।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ७२५ ॥

झण्डा सरीयतका उठ्या

कह्या झण्डा उठ्या ईमानका, कौल किया जिन सरत।
महंमद मेंहेंदी इमाम आए, लिखे आए नामें वसीयत।। १ ।।

मदीने से वसीयतनामे लिखकर आए हैं कि रसूल साहब के बताए अनुसार इमाम मेंहेंदी ग्यारहवीं सदी में हिन्दुस्तान में प्रगट हो गए हैं, इसलिए यहां से ईमान उठ गया है।

यों हादी लिखे कर जाहेर, दिन देखाए देवें कयामत।
सो लिखे सखत सौं खाए के, सो भी वास्ते इन बखत।। २ ।।

इस तरह से रसूल साहब ने कुरान में स्पष्ट लिखा है कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी आखिर में आकर कयामत को जाहिर करेंगे। यह बात सख्त कसम खाकर वसीयतनामे में ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहेंदी के प्रगट होने की बात के लिए लिखा।

मेहेनत करी महंमद ने, और असहाबों यार।
झण्डा खड़ा किया दीन का, तले आई दुनी बे सुमार।। ३ ।।

रसूल साहब, उनके यार तथा अनुयायियों ने बड़ी मेहनत से शरीयत का झण्डा मदीने में खड़ा किया जिसके नीचे बेशुमार दुनियां आई।

दुनियां जो जैसी हुती, सो तिसी विध लई समझाए।
तोरा किया सिर सबन के, दई सरीयत राह चलाए।। ४ ।।

उस समय दुनियां जिन विचारों की थी, उसे उसी तरह से समझाया और सबके ऊपर हुकूमत से शरीयत का रास्ता चलाया।

अग्यारै सदी लग अमल, चल्या सरीयत का।
सो फरदा रोज सदी बारहीं, कोल पोहोंच्या फजर का।। ५ ।।

शरीयत का यह नियम ग्यारहवीं सदी तक चला। मुहम्मद साहब ने कल के दिन का वायदा किया था। वह बारहवीं सदी आ गई और वायदे के अनुसार मारफत का ज्ञान आ गया।

सो नूर झण्डा बीच हिंद के, किया खड़ा नूर इसलाम।
इत आई सब न्यामतें, और आया अल्ला कलाम।। ६ ।।

वह नूरी झण्डा मदीने से उठाकर हिन्दुस्तान के बीच पन्नाजी में खड़ा किया और निजानन्द सम्प्रदाय को जाहिर किया। (नूर इस्लाम) अब परमधाम की सब न्यामतें मदीने से उठकर पन्नाजी में आ गई और कुलजम सरूप की पूरी वाणी आ गई।

Nijanand App

महामत कहे मदीने से, लिखे खलीफों पर फुरमान।
उठी दुनी बरकत सफकत फकीरों, और कलाम अल्ला ईमान।। ४० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मदीने से इस्लाम के खलीफों ने वसीयतनामे औरंगजेब पर लिखे कि मदीने से बरकत, फकीरों के आशीर्वाद देने की शक्ति, कुरान और ईमान (नूरी झण्डा) उठ गया है।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ७२५ ।।

झण्डा सरीयतका उठ्या

कह्या झण्डा उठ्या ईमानका, कौल किया जिन सरत।
महंमद मेंहेंदी इमाम आए, लिखे आए नामें वसीयत।। १ ।।

मदीने से वसीयतनामे लिखकर आए हैं कि रसूल साहब के बताए अनुसार इमाम मेंहेंदी ग्यारहवीं सदी में हिन्दुस्तान में प्रगट हो गए हैं, इसलिए यहां से ईमान उठ गया है।

यों हादी लिखे कर जाहेर, दिन देखाए देवें कयामत।
सो लिखे सखत सौं खाए के, सो भी वास्ते इन बखत।। २ ।।

इस तरह से रसूल साहब ने कुरान में स्पष्ट लिखा है कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी आखिर में आकर कयामत को जाहिर करेंगे। यह बात सख्त कसम खाकर वसीयतनामे में ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहेंदी के प्रगट होने की बात के लिए लिखा।

मेहेनत करी महंमद ने, और असहाबों यार।
झण्डा खड़ा किया दीन का, तले आई दुनी बे सुमार।। ३ ।।

रसूल साहब, उनके यार तथा अनुयायियों ने बड़ी मेहनत से शरीयत का झण्डा मदीने में खड़ा किया जिसके नीचे बेशुमार दुनियां आई।

दुनियां जो जैसी हुती, सो तिसी विध लई समझाए।
तोरा किया सिर सबन के, दई सरीयत राह चलाए।। ४ ।।

उस समय दुनियां जिन विचारों की थी, उसे उसी तरह से समझाया और सबके ऊपर हुकूमत से शरीयत का रास्ता चलाया।

अग्यारै सदी लग अमल, चल्या सरीयत का।
सो फरदा रोज सदी बारहीं, कोल पोहोंच्या फजर का।। ५ ।।

शरीयत का यह नियम ग्यारहवीं सदी तक चला। मुहम्मद साहब ने कल के दिन का वायदा किया था। वह बारहवीं सदी आ गई और वायदे के अनुसार मारफत का ज्ञान आ गया।

सो नूर झण्डा बीच हिंद के, किया खड़ा नूर इसलाम।
इत आई सब न्यामतें, और आया अल्ला कलाम।। ६ ।।

वह नूरी झण्डा मदीने से उठाकर हिन्दुस्तान के बीच पन्नाजी में खड़ा किया और निजानन्द सम्प्रदाय को जाहिर किया। (नूर इस्लाम) अब परमधाम की सब न्यामतें मदीने से उठकर पन्नाजी में आ गई और कुलजम सरूप की पूरी वाणी आ गई।

Nijanand App

तो दरगाह से खादिम बुजरकों, लिखे सखत सौं खाए।
सो जमाना सदी अग्यारहीं, किने न देख्या दिल ल्याए।। ७ ।।

जब मदीने से वहां के पूजकों ने कसम खाकर फर्दा रोज ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के प्रगट होने की बात वसीयतनामे में लिखी, परन्तु शरीयत और हुकूमत के नशे में चूर किसी शरीयत के काजी या औरंगजेब ने ध्यान नहीं दिया।

करी अव्वल लिख इसारतें, दूजे लिख्या केहेर देखाए।
तीसरे उठाया झण्डा आकीन, चौथे हिन्द में खड़ा किया आए।। ८ ।।

पहले कुरान में कयामत की बातें इशारतों में लिखीं। फिर दूसरी बार खुदा का डर बतलाया। तीसरी बार मदीने से झण्डा और यकीन उठने की बात लिखी। चौथी बार जबराईल फरिश्ते ने हकीकी झण्डा हिन्दुस्तान में खड़ा करने की बात लिखी।

लिख्या अपने हाथों तेहेकीक, गईं चारों हक न्यामत।
सिर देखें राह गजब की, क्यों न अजूं आवत।। ९ ।।

वहां के पूजकों ने निश्चित करके अपने हाथों से लिखा कि मदीने से चारों खुदाई न्यामतें चली गईं। फिर भी जाहिर परस्त दुनियां वाले अभी तक इन्तजार में बैठे हैं कि कयामत में लिखा हुआ प्रलय क्यों नहीं आ रही है?

जाहेरी कहें अजूं न आइया, हक सेती गजब।
आकीन बिना देखे नहीं, जो छीन लिया मता सब।। १० ।।

जाहिरी लोग (कर्मकाण्ड वाले) सोचते हैं कि खुदा की तरफ से कयामत क्यों नहीं आई? क्योंकि इनसे सारी न्यामतें छिन गई हैं और यकीन न होने से यह बात अब उनकी समझ में आती नहीं है।

दुनी बरकत सफकत फकीरों, और लिया छीन कुरान।
बाकी इसलाम में क्या रह्या, जो रह्या न काहू ईमान।। ११ ।।

दुनियां की बरकत, फकीरों की शफकत, कुरान और ईमान जब छीन लिए गए तो मुसलमानों में बचा ही क्या?

अजूं राह देखे गजब की, जानें हुआ नहीं फुरमाया।
इसलाम मता सब से गया, तो भी नजरों किनहूं न आया।। १२ ।।

मुसलमान कहते हैं कि रसूल साहब के कहे अनुसार अभी तक प्रलय क्यों नहीं हुई? इन सबके अन्दर से सब न्यामतें चली गई, इसलिए रसूल साहब की बातें समझ में नहीं आ रही हैं।

जुदे पड़े राह बीच रात के, जिद फितने खोया आकीन।
तो दुनी बरकत सफकत फकीरों, हक कलाम लिए छीन।। १३ ।।

आपस के लड़ाई-झगड़ों में सभी ने रसूल साहब की बातों से यकीन खो दिया और अलग-अलग होकर अज्ञान के रास्ते पर चल पड़े, इसलिए इनके पास से बरकत, फकीरों की शफकत और कुरान के ज्ञान को छीन लिया।

Nijanand App

ईमान बिना देखे नहीं, रही या गई न्यामत।
नफा नुकसान तो देखहीं, जो होए इसलाम लज्जत।। १४ ।।

अब मुसलमानों के पास ईमान नहीं रहा, इसलिए उन्हें यह समझ नहीं आता कि यह न्यामतें उनके पास हैं या चली गईं? इस्लाम का जरा भी यकीन इनके अन्दर हो तो अपना नफा-नुकसान क्या है की पहचान हो सकती है।

सुध न पाइए बिना लज्जत, नफा या नुकसान।
निसबत रहे ना जुबान की, जहां हक मारफत नहीं पेहेचान।। १५ ।।

जब तक धर्म पर यकीन नहीं होगा, तब तक लाभ और हानि की पहचान नहीं हो सकती। जब तक श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से कुजलम सरूप साहब की वाणी की पहचान नहीं होगी, तब तक वहां की बोलने की कुछ शक्ति नहीं होती।

अजूं चाहे दुनियां माजजा, देखे ना खड़ा झण्डा नूर।
तब उत थें अक्स पुकारिया, कहे हुए इसलाम से दूर।। १६ ।।

दुनियां वाले अभी भी चमत्कार की राह देख रहे हैं। उन्हें कुलजम सरूप की वाणी का नूरी झण्डा दिखाई नहीं देता, जबकि मदीने से लोग पुकार-पुकारकर कह रहे हैं कि यहां से इस्लाम धर्म उठ गया।

फजर हुए खुले हकीकत, खुलें हकीकत होए कयामत।
हुए हक बका अर्स जाहेर, सूर उग्या दिन मारफत।। १७ ।।

कुरान की हकीकत के भेद खुलने से ज्ञान का सवेरा होगा और दुनियां की कायमी हो गई। जब श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम की जानकारी हो गई, तब समझ लो मारफत के ज्ञान का सूर्य उदय हो गया।

फुरमान जबराईल ल्याइया, बरारब से बीच हिंद।
आए नूर झण्डा खड़ा किया, गया कुफर फरेबी फंद।। १८ ।।

जबराईल फरिश्ता बरारब से कुरान हिन्दुस्तान ले आया और कुल्जम सरूप की वाणी का नूरी झण्डा पन्नाजी में खड़ा किया, जिससे सारे झूठ मिट गए।

सरा चल्या हक हुकमें, किया कौल जिन सरत।
सो आए पोहोंची सदी बारहीं, भई फरदा रोज कयामत।। १९ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से इतने दिन तक शरीयत चली। उसके बाद कल के दिन का जो वायदा किया था, वह बारहवीं सदी आ गई है। इसके लिए रसूल साहब ने फर्दा रोज कहा था।

यों झण्डा नूर बिलंद का, किया खड़ा हक हादी मोमिन।
देखावे नामे वसीयत, नूर हिंद में बरस्या रोसन।। २० ।।

इस तरह से श्री राजजी, श्री श्यामाजी और मोमिनों ने कुलजम सरूप साहब का नूरी झण्डा खड़ा कर दिया, जिसकी गवाही वसीयतनामे दे रहे हैं। उन्होंने लिखा है कि खुदा की मेहर हिन्दुस्तान में बरस रही है।

मुसाफ मता महंमदी मोमिनों, पोहोंच्या वारसी आखिरी इमाम।
झण्डा पोहोंच्या अर्स अजीम लग, देखाए हक बका अर्स तमाम।। २१ ।।

कुरान के ज्ञान का रहस्य खोलने का अधिकार आखिरी इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को था, अतः वह ज्ञान श्री प्राणनाथजी और मोमिनों के पास पहुंच गया। अब इस कुलजम सरूप साहब की वाणी का झण्डा परमधाम तक पहुंचा। यह अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज की पहचान करा रहा है।

Nijanand App

अर्स देखाया चढ़ उतर, हुआ मेयराज महंमद पर।
क्यों दुनी देखे दिल मजाजी, बिन खोले रूह नजर।। २२ ।।

रसूल मुहम्मद ने मेयराज में परमधाम के आने-जाने का रास्ता बताया। अब इस झूठे दिल वाले दुनियां के जीव आत्मदृष्टि के बिना कैसे समझें?

जेता अर्स दिल मोमिन, बिन मेयराज न काढ़ें बोल।
बिन पूछे देवें सब को, अर्स अजीम पट खोल।। २३ ।।

जिन मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज ने अर्श कहा है, वह अब श्री राजजी महाराज की वाणी से सबको बिना पूछे ही परमधाम की पहचान कराते हैं।

करने हैयात सबन को, देवें हक इलम बेसक।
सो पोहोंचे बका बीच भिस्त के, नूर नजर तले हक।। २४ ।।

सारे जगत को अखण्ड करने के लिए यह कुलजम सरूप की वाणी का ज्ञान दे रहे हैं। इस वाणी के द्वारा ही सब जीव अक्षर की नजर योगमाया की बहिश्तों में अखण्ड होंगे।

जो आया झण्डे तले महंमदी, सो तबहीं कायम होत।
देख्या सब हक दिल मता, हुई अर्स अजीम बीच जोत।। २५ ।।

श्री प्राणनाथजी के इस नूरी झण्डे के नीचे जो आ गया, उसे तुरन्त ही अखण्ड मुक्ति प्राप्त हो जाती है। उसे श्री राजजी महाराज के दिल की सारी बातों का अनुभव हो जाता है और परमधाम की पहचान हो जाती है।

अपनी सूरत देखी अर्स की, जो रूहें तले हक कदम।
जब सूर ऊग्या हक मारफत, तब सब आए तले हुकम।। २६ ।।

रूहें जो श्री राजजी महाराज के चरणों के तले मूल-मिलावा में बैठी हैं, उन्होंने अपनी परआतम को देख लिया। जब कुलजम सरूप की वाणी (मारफत का ज्ञान) सूर्य की तरह प्रकाशित हो गयी, तब सभी इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के हुकम अनुसार चलने लगे।

महामत कहे ए मोमिनों, कही दो झण्डों की बिगत।
अब खोल देऊं फरदा रोज की, जो फुरमाई थी इसारत।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने दो झण्डों की हकीकत की पहचान कराई है। अब जो कुरान में फर्दा रोज का भेद लिखा है, उसे खोल देती हूं।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ७५२ ॥

बाब फरदा रोज का

फरदा रोज पेहेले कह्या, ए जो बखत कयामत।
एक दिन एक रात की, फजर है आखिरत।। १ ।।

कुरान में पहले से लिखा है कि कल के दिन कयामत होगी। जब एक दिन और एक रात बीते तो आखिरत की फजर हो जाएगी।

Nijanand App

अर्स देखाया चढ़ उतर, हुआ मेयराज महंमद पर।
क्यों दुनी देखे दिल मजाजी, बिन खोले रूह नजर।। २२ ।।

रसूल मुहम्मद ने मेयराज में परमधाम के आने-जाने का रास्ता बताया। अब इस झूठे दिल वाले दुनियां के जीव आत्मदृष्टि के बिना कैसे समझें ?

जेता अर्स दिल मोमिन, बिन मेयराज न काढ़ें बोल।
बिन पूछे देवें सब को, अर्स अजीम पट खोल।। २३ ।।

जिन मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज ने अर्श कहा है, वह अब श्री राजजी महाराज की वाणी से सबको बिना पूछे ही परमधाम की पहचान कराते हैं।

करने हैयात सबन को, देवें हक इलम बेसक।
सो पोहोंचे बका बीच भिस्त के, नूर नजर तले हक।। २४ ।।

सारे जगत को अखण्ड करने के लिए यह कुलजम सरूप की वाणी का ज्ञान दे रहे हैं। इस वाणी के द्वारा ही सब जीव अक्षर की नजर योगमाया की बहिश्तों में अखण्ड होंगे।

जो आया झण्डे तले महंमदी, सो तबहीं कायम होत।
देख्या सब हक दिल मता, हुई अर्स अजीम बीच जोत।। २५ ।।

श्री प्राणनाथजी के इस नूरी झण्डे के नीचे जो आ गया, उसे तुरन्त ही अखण्ड मुक्ति प्राप्त हो जाती है। उसे श्री राजजी महाराज के दिल की सारी बातों का अनुभव हो जाता है और परमधाम की पहचान हो जाती है।

अपनी सूरत देखी अर्स की, जो रूहें तले हक कदम।
जब सूर ऊग्या हक मारफत, तब सब आए तले हुकम।। २६ ।।

रूहें जो श्री राजजी महाराज के चरणों के तले मूल-मिलावा में बैठी हैं, उन्होंने अपनी परआतम को देख लिया। जब कुलजम सरूप की वाणी (मारफत का ज्ञान) सूर्य की तरह प्रकाशित हो गयी, तब सभी इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के हुकम अनुसार चलने लगे।

महामत कहे ए मोमिनों, कही दो झण्डों की बिगत।
अब खोल देऊं फरदा रोज की, जो फुरमाई थी इसारत।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने दो झण्डों की हकीकत की पहचान कराई है। अब जो कुरान में फर्दा रोज का भेद लिखा है, उसे खोल देती हूं।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ७५२ ।।

बाब फरदा रोज का

फरदा रोज पेहेले कह्या, ए जो बखत कयामत।
एक दिन एक रात की, फजर है आखिरत।। १ ।।

कुरान में पहले से लिखा है कि कल के दिन कयामत होगी। जब एक दिन और एक रात बीते तो आखिरत की फजर हो जाएगी।

Nijanand App

साल हजार दुनीय के, गिनती चांद और सूर।
सो हक के एक दिन में, आवे नूर बिलंद से नूर।। २ ।।

दुनियां के हजार साल चन्द्रमा और सूर्य की गिनती से व्यतीत होते हैं, तो उस खुदा का एक दिन कहा है। तो उस समय परमधाम से ग्यारहवीं सदी में जागृत बुद्धि के ज्ञान की कुलजम सरूप की वाणी आएगी।

इन किल्ली रूहअल्ला अर्स के, पट खोल करे रोसन।
खोली हकीकत मारफत, किया अर्स बका हक दिन।। ३ ।।

श्री श्यामाजी महारानीजी तब तारतम ज्ञान की कुन्जी से परमधाम के पट हटाकर पहचान कराएंगे। हकीकत और मारफत के ज्ञान को खोलकर वह अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज की पहचान कराएंगे।

दिन रबका दसमी सदी लग, दुनियां के साल हजार।
मास हजार लैल के, तीसरे तकरार।। ४ ।।

खुदा का दिन दसवीं सदी या दुनियां के हजार साल तक चला। फिर लैल तुल कदर की रात्रि के तीसरे भाग में हजार महीने से भी अधिक की रात लिखी है।

कछू मास हजार से बेहेतर, ए जो कही लैलत कदर।
ए फरदा रोज कयामत, ए जो कही फजर।। ५ ।।

हजार महीने से कुछ अधिक, अर्थात् सौ साल की यह रात कही है। ग्यारहवीं सदी के बाद ही कल का दिन कयामत का होगा। जब फजर का ज्ञान आ जाएगा।

दसमी सदी भी हिसाब में, गिनती में आई।
इतथें सुरू हुई, रूहअल्ला की रोसनाई।। ६ ।।

इस तरह से दसवीं सदी गिनती में आई और उसके बाद ही श्री श्यामाजी महारानी का तारतम ज्ञान पसरना (फैलना) शुरू हुआ।

हजार मास जो लैल के, हुए सदी अग्यारहीं भर।
लिखी जो इसारतें, भई पूरी मिल बेहेतर।। ७ ।।

हजार महीने से अधिक जो रात कही है, वह ग्यारहवीं सदी है। यह बातें सब इशारतों में लिखी हैं। इन सबको मिलाकर अच्छी तरह बता दिया।

और आई सदी बारहीं, इनमें फजर भई।
लिख्या मुसाफ बीच आयतों, और हदीसों में कही।। ८ ।।

अब बारहवीं सदी १७४८ में आई, जिसमें मारफत का ज्ञान आने से सुबह हो गई। यह बात कुरान की आयतों में लिखी है और हदीस में भी कहा है।

असराफील गावे फुरकान, जाहेर करे निसान।
मगज मुसाफ के बातून, कर देवे पेहेचान।। ९ ।।

बारहवीं सदी में असराफील फरिश्ता, मारफत सागर की वाणी के द्वारा कुरान के छिपे रहस्यों को और कयामत के सब निशानों को जाहिर कर रहा है।

Nijanand App

खुलासा मुसाफ का, असराफील बतावे।
तब सूरज मारफत का, हक अर्स दिल नजरों आवे।। १० ।।

असराफील फरिश्ता कुरान के सब छिपे रहस्य को जब बताएगा, तब मोमिनों को, जिनके दिल को श्री राजजी महाराज ने अर्श कहा है, कुलजम सरूप की वाणी से सब पहचान हो जाएगी।

तो हदीसें हक इलम की, भांत भांत करे बड़ाई।
बाब भिस्त जो हैयाती, सो याही कुंजी से खोल्या जाई।। ११ ।।

मुहम्मद साहब ने हदीस में कुल्जम सरूप की वाणी की तरह-तरह से महिमा कही है। कुरान में जो बहिश्तों में कायम करने का प्रकरण है, वह इसी कुल्जम सरूप की मारफत सागर की वाणी से समझ में आएगा।

हक इलम जो लदुन्नी, बका अर्स असल।
एही दानाई हक की, कही जो कुल्ल अकल।। १२ ।।

कुल्जम सरूप की इस वाणी में पूर्ण ब्रह्म ने अपनी निज बुद्धि से अपने परमधाम का पूरा ज्ञान भर दिया है।

ठौर सबों के सब को, फरिस्ता बतावे।
पाक असराफील इन विध, कुरान को गावे।। १३ ।।

अब यह असराफील फरिश्ता कुल्जम सरूप की वाणी को इस तरह से जाहिर करेगा कि सबको उनके अपने-अपने ठिकानों में पहुंचा देगा।

खासलखास रूहें उमत, गिरो फरिस्तों खास कहावे।
गिरो रूहों गिरो फरिस्ते, दोऊ अपने ठौर पोहोंचावे।। १४ ।।

खासलखास रूहें ब्रह्मसृष्टि हैं। खास रूहें ईश्वरीसृष्टि हैं। अब ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि दोनों को अपने-अपने ठिकाने (परमधाम और अक्षरधाम) पहुंचाएगा।

एही सुंनत-जमात, महंमद बेसक दीन।
सकसुभे ना इनमें, जित असराफील अमीन।। १५ ।।

आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में किसी तरह का संशय नहीं है। उनके मानने वाले सुन्नत जमात (सुन्दरसाथ) में किसी तरह का संशय नहीं रहता है, क्योंकि यहां जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील सिरदार (प्रधान) बनकर इमाम मेंहेंदी के तन में बैठा है।

ए जो सुंनत-जमात, होए सके न जुदे खिन।
ए गिरो फोड़ क्यों जुदे पड़ें, जिनों असल अर्स में तन।। १६ ।।

अब यह सुन्नत जमात सुन्दरसाथ है। यह श्री प्राणनाथजी महाराज से एक पल भी अलग नहीं हो सकते। जिनके असल तन परमधाम में हैं, वह अपनी जमात (सुन्दरसाथ) को छोड़कर अलग कैसे हो सकते हैं?

कई सरे अमल बीच रात के, चली जो सुभे सक।
सो फजर हक इलमें, बेसक करी खलक।। १७ ।।

अज्ञान के अंधेरे में कर्मकाण्ड पर आधारित पंथ, पैंडे चले थे। वह सभी संशय से भरे हुए थे। किसी को भी अखण्ड घर की पहचान नहीं थी। अब कुल्जम सरूप की वाणी से सबके संशय मिट गए और ज्ञान का सवेरा हो गया।

Nijanand App

छे दिन की पैदास

पैदास कही छे दिन की, सो इन आलम का विस्तार।
दिन जुमां के बीच में, पाई साइत जो कही अपार।। १८ ।।

कुरान में जो छः दिन की पैदाइश का वर्णन लिखा है, वह सब इस सृष्टि के विस्तार का वर्णन है। छठे दिन जुम्मा का होगा, जिसमें परमधाम के मूल-मिलावा की साइत (पल) की सभी बातों की याद आएगी।

आए एक साइत लैलत कदर में, उसी साइत में दूजी बेर।
उसी साइत में तीसरे इन इंड, महंमद आए इत फेर।। १९ ।।

परमधाम के उसी पल में लैल तुल कदर में पहले बृज में आए। उसी पल में दूसरी बार रास में आए। उसी पल मे तीसरी बार रसूल मुहम्मद बनकर आए।

एक दिन कह्या रब का, दुनी के साल हजार।
इतथें आगे लैलत कदर, ए जो फजर तीसरा तकरार।। २० ।।

दुनियां के हजार साल के बराबर खुदा का एक दिन कहा है। इसके आगे लैल तुल कदर का तीसरा भाग चालू होता है, जिसमें ज्ञान का सवेरा होगा।

एक कौल में कहे तीन दिन, सो भी बीच साइत इन।
इन रोज रब कर ज्यारत, पोहोंचे अपने वतन।। २१ ।।

कुरान में एक जगह तीन दिन का बयान लिखा है। वह भी परमधाम के मूल-मिलावा के इसी पल की पहचान कराता है, जिसमें तीन दिन तीन लीला के बताएं हैं। तीसरी लीला के बाद मोमिन अपने घर वापस परमधाम जाएंगे।

और तीन दिन कहे रसूल लों, चौथे रूहअल्ला आए इत।
रोज पांचमें इमामें जमा किए, सो पाई जुमां बीच साइत।। २२ ।।

और छः दिन जो कहे हैं उनमें तीन दिन रसूल साहब तक होते हैं (बृज, रास और अरब)। चौथा दिन श्री श्यामाजी महारानी संसार में जाहिर हुए। पांचवें दिन इमाम मेंहेंदी प्राणनाथजी ने सारे धर्मग्रन्थों और कुरान से कुल गवाही इकट्ठी कर कुलजम सरूप के ज्ञान का नूरी झण्डा कायम किया। यह पांचवां दिन भी उसी साइत के अन्दर है।

छठे दिन मोमिन जमा हुए, तब गिरो आई सब कोए।
सो साइत जुमां बीच खोल के, इस्कें पोहोंचे पाक होए।। २३ ।।

छठे दिन में संसार में सब जगह फैले सुन्दरसाथ इकट्ठे हुए और कुलजम सरूप की बाणी से पाक (साफ) होकर धनी का इश्क लेकर परमधाम जाएंगे।

कहे तीन रोज तीन तकरार के, चौथे फरदा रोज फजर।
दे दीन दुनी सबों सलामती, पाक हुए खोल रूह नजर।। २४ ।।

एक जगह कुरान में तीन दिन को लैल तुल कदर के तीन तकरार कहा है। चौथे दिन ज्ञान का सवेरा होने पर कुलजम सरूप की वाणी से निर्मल होकर सब दुनियां को अखण्ड मुक्ति देकर अपने घर जाएंगे। यह भी परमधाम की उसी साइत में होना है।

Nijanand App

छे दिन कहे और कौल में, कह्या तिन का बेवरा ए।
हादी मोमिन कर सबों बका, अपने अर्स बका पोहोंचेंगे।। २५ ।।

कुरान में दूसरी जगह जो छः दिन बताए हैं, उसका यही विवरण है। छः दिन के बाद श्री प्राणनाथजो महाराज और मोमिन सबको अखण्ड बहिश्तों में कायम कर अपने घर जाएंगे।

ए रोज कहे बंदगीय के, आए पोहोंचे सावचेत होए।
ए दिन समझ रोजे रखे, कह्या तिन पर गुनाह न कोए।। २६ ।।

कुलजम सरूप की वाणी से जागृत होकर जो इस तरह अपने को समर्पित करेगा (रोजा रखेगा), उसके ऊपर कोई गुनाह नहीं लगेगा। इस तरह से यह छः रोज की बन्दगी लिखी है।

एही भूल फना दुनी की, डाले बीच निजस अल्ला कलाम।
तरफ न पावे जिनकी, कहे सो हम बका इसलाम।। २७ ।।

दुनियां वालों की सबसे बड़ी भूल यही है कि कुरान की इस वाणी को बातें (किस्से) कह देते हैं। इन्हें कुरान की वाणी की पहचान नहीं है और अखण्ड अर्श का दावा लिए बैठे हैं।

दुनी यों खेलाई हक ने, क्या करे बिना अखत्यार।
ए सब कछू हाथ कादर के, वही नचावनहार।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज ने दुनियां को इसी तरह नचा रखा है। दुनियां वालों को कुरान के भेद खोलने का अधिकार ही नहीं दिया। यह सब कुछ राजजी महाराज ने अपने हाथ में रखा है।

रात दिन फुरमाए हक ने, आप अपने हिसाब।
सो डाले बीच निजस, ए जो रात का ख्वाब।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज ने रात और दिन जो कहे हैं वह अपने हिसाब से, परन्तु यह संसार के जीव, सपने की सृष्टि बीते हुए किस्से बताते हैं।

छे रोज कहे एक कौल में, और तीन रात कौल एक।
ए हिसाब होए बीच फजर, हुए जाहेर साहेब नेक।। ३० ।।

कुरान में एक जगह छः दिन की लीला कही है और एक जगह रात में तीन लीला कही हैं। यह छः दिन और तीन रात के भेद जब इमाम मेंहेंदी प्रकट होकर ज्ञान से सवेरा करेंगे तब खुलेंगे।

कहे एक कौल में दोए दिन, बीच कही जो रात।
ए हिसाब दे सब फजर, सो कही कयामत बीच साइत।। ३१ ।।

एक जगह दो दिन और बीच में रात बताई है। एक बृज का, एक जागनी का यह दो दिन हुए। बीच में रास की रात्रि का वर्णन है। यह हिसाब फजर के वक्त मारफत सागर के ज्ञान आने से पता लगेगा। वैसे अव्वल से कयामत तक परमधाम के एक पल में उसी साइत में सब लीलाएं हुई हैं।

ए दिन देखो हक के, जो कहे हैं बातन।
कह्या हक अर्स दिल मोमिनों, देखो कलाम अल्ला रोसन।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज के इन दिनों की गिनती कुरान के बातूनी अर्थों से ही पता लगती हैं। कुरान में स्पष्ट कहा है कि मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज विराजमान हैं, इसलिए मोमिन ही इन बातों को समझेंगे।

Nijanand App

हकें काम लिया जो दिल में, सो जब हुआ पूरन।
मकसूद सबों हो रह्या, तब वाही फजर कह्या दिन।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो अपने दिल में विचार किया था, वह सब पूरे हुए। अब सबकी चाहना पूरी होने से इसे फजर का दिन कहा है।

जब थें आया रसूल हक का, तिन बीच हुए कई काम।
जहां जो पूरन हुआ, दिन सोई कह्या अल्ला कलाम।। ३४ ।।

जब से दुनियां में रसूल साहब पधारे, तब से बहुत से काम पूरे हुए। जो काम जहां पूरा हुआ, कुरान में उसे दिन कहा है।

जो बात निजस नाबूद, हक कलाम न कहे तिन में।
जो हक दोस्त गिरो मासूक, कहे हक कलाम तिन से।। ३५ ।।

झूठी दुनियां के जो धर्मग्रन्थ हैं उनमें श्री राजजी महाराज की वाणी नहीं है। मोमिन श्री राजजी महाराज के माशूक श्री श्यामाजी महारानी की जमात के तथा श्री राजजी के दोस्त कहलाते हैं। यह कुलजम सरूप की वाणी उनके वास्ते ही कही है।

कह्या हदीस कुदसीय में, जब बन्दा करे फिकर।
वह फिकर मुझसों रखे, हकें फुरमाया यों कर।। ३६ ।।

मुहम्मद साहब ने कुदसी हदीस में कहा है कि हक श्री राजजी महाराज कहते हैं कि जब मेरे दोस्त मोमिनों को चिन्ता सताए तो वह मेरा ध्यान करें, चिन्ता छोड़ दें। उनकी चिन्ता मैं दूर कर दूंगा।

कहे हदीस कुदसी, और आयतें हदीसें सूरत।
इन का रोजा निमाज हक दोस्ती, एक जरा न बिना मारफत।। ३७ ।।

हदीस कुदसी और कुरान की आयतों में लिखा है कि मोमिनों का रोजा और नमाज श्री राजजी महाराज की दोस्ती निभाना है। यह मोमिन श्री राजजी महाराज के मारफत के ज्ञान के बिना कुछ नहीं चाहते।

आंखें दई हकें इन को, और दिए कान अकल।
ज्यों दुनियां मुद्दा वजूद पर, त्यों कहे मोमिन साहेब दिल।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने मोमिनों को ही आंख, कान और अक्ल दी है। दुनियां की निगाहें संसार के शरीरों पर होती हैं और मोमिनों की निगाहें, कान और बुद्धि श्री राजजी महाराज के दिल की बातें जानने के वास्ते होती हैं।

जेते अंग हैं वजूद के, तेते अंग बातून दिल।
नजर खुली जब रूह की, हुआ दिल मोमिन अर्स असल।। ३९ ।।

संसार में मोमिनों के जितने वजूद अंग हैं, उतने ही अंग बातूनी परआतम के हैं। जब ज्ञान से रूह की नजर खुल जाती है, तो मामिनों का दिल ही श्री राजजी का अर्श बन जाता है।

हाथ पांउं बाहेर अंदर, सब अंगों हक नूर।
कहे इन विध मोमिन अर्स में, जिन का हक आप करें जहूर।। ४० ।।

हाथ, पांव, अन्दर और बाहर के सभी अंगों में श्री राजजी महाराज का नूरी स्वरूप समा जाता है। इस तरह से मोमिन का पूरा शरीर राजजी मय हो जाता है। जिस कारण से श्री राजजी महाराज स्वयं मोमिनों को जाहिर करते हैं।

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, हादिएं खोल दिए दिन बातन।
कयामत दिन जाहेर कर, देखाया अर्स बका वतन।। ४१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुरान के सब बातूनी भेद खोल दिए हैं और कयामत के निशान जाहिर कर सबको अखण्ड परमधाम दिखा दिया है।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ७९३ ।।

बाब हादी गिरोकी पेहेचान

भाई महंमद के मोमिन, कोई था न उस बखत।
तो सरा चल्या तोरे बल, कह्या हम फेर आवसी आखिरत।। १ ।।

रसूल साहब जब दुनियां में आए, तो उस समय उनके भाई (मोमिन) संसार में नहीं उतरे थे, इसलिए उन्होंने भविष्य में आने का वायदा किया और अपनी राज सत्ता के बल पर शरीयत का धर्म चलाया।

मोमिन का दुनी मजाजी, उठाए न सके भार।
मारे उसी सिर्क से, तो कहे बीच नार।। २ ।।

दुनियां के झूठे दिल वाले मोमिनों की साहेबी का भार नहीं उठा सकते। उन्होंने मोमिनों का झूठा दावा लिया, तो इस झूठे अहंकार के कारण नीचा देखना पड़ा, इसलिए उनकी नारी (दोजखी) फिरकों में गिनती की गई।

तब रसूल खोलत जो माएने, हकीकत मारफत।
तो तबहीं होती फजर, जाहेर होती कयामत।। ३ ।।

रसूल साहब यदि उसी समय हकीकत और मारफत का ज्ञान दे देते, तो उसी समय सवेरा हो जाता और कयामत हो जाती।

आए सदी बीच आखिरी, जो रसूलें करी थी सरत।
बखत हुआ बीच बारहीं, भई फरदा रोज कयामत।। ४ ।।

रसूल साहब ने जैसा वायदा किया था, उसी के अनुसार ग्यारहवीं सदी में आए। कल के दिन कयामत होगी, जो कहा था, वह बारहवीं सदी का समय आ गया।

ए इसरातें हक मुसाफ की, पाइए खुले हकीकत मारफत।
ए हक इलमें पाइए मेहेर से, जो होए मूल निसबत।। ५ ।।

हकीकत और मारफत का ज्ञान मिलने पर ही कुरान की यह इशारतें समझ में आती हैं। श्री राजजी महाराज की मेहर से ही यह कुलजम सरूप की वाणी मिलती है जिससे मूल सम्बन्ध का पता चलता है।

ए अर्स गुझ बिना लदुन्नी, क्यों कर बूझ्या जाए।
हक खिलवत बातें गैब की, दें अर्स दिल मोमिन बताए।। ६ ।।

यह परमधाम की गुझ (गुप्त) बातें हैं जो कुलजम सरूप की वाणी के बिना कैसे समझी जाएं? परमधाम में मूल-मिलावा की और श्री राजजी महाराज की गुझ (गुप्त) बातों को मोमिन ही बताएंगे, जिनके दिल को श्री राजजी महाराज अर्श कर बैठे हैं।

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, हादिएं खोल दिए दिन बातन।
कयामत दिन जाहेर कर, देखाया अर्स बका वतन।।४१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री प्राणनाथजी महाराज ने कुरान के सब बातूनी भेद खोल दिए हैं और कयामत के निशान जाहिर कर सबको अखण्ड परमधाम दिखा दिया है।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ७९३ ।।

बाब हादी गिरोकी पेहेचान

भाई महंमद के मोमिन, कोई था न उस बखत।
तो सरा चल्या तोरे बल, कह्या हम फेर आवसी आखिरत।। १ ।।

रसूल साहब जब दुनियां में आए, तो उस समय उनके भाई (मोमिन) संसार में नहीं उतरे थे, इसलिए उन्होंने भविष्य में आने का वायदा किया और अपनी राज सत्ता के बल पर शरीयत का धर्म चलाया।

मोमिन का दुनी मजाजी, उठाए न सके भार।
मारे उसी सिर्क से, तो कहे बीच नार।। २ ।।

दुनियां के झूठे दिल वाले मोमिनों की साहेबी का भार नहीं उठा सकते। उन्होंने मोमिनों का झूठा दावा लिया, तो इस झूठे अहंकार के कारण नीचा देखना पड़ा, इसलिए उनकी नारी (दोजखी) फिरकों में गिनती की गई।

तब रसूल खोलत जो माएने, हकीकत मारफत।
तो तबहीं होती फजर, जाहेर होती कयामत।। ३ ।।

रसूल साहब यदि उसी समय हकीकत और मारफत का ज्ञान दे देते, तो उसी समय सवेरा हो जाता और कयामत हो जाती।

आए सदी बीच आखिरी, जो रसूलें करी थी सरत।
बखत हुआ बीच बारहीं, भई फरदा रोज कयामत।। ४ ।।

रसूल साहब ने जैसा वायदा किया था, उसी के अनुसार ग्यारहवीं सदी में आए। कल के दिन कयामत होगी, जो कहा था, वह बारहवीं सदी का समय आ गया।

ए इसरातें हक मुसाफ की, पाइए खुले हकीकत मारफत।
ए हक इलमें पाइए मेहेर से, जो होए मूल निसबत।। ५ ।।

हकीकत और मारफत का ज्ञान मिलने पर ही कुरान की यह इशारतें समझ में आती हैं। श्री राजजी महाराज की मेहर से ही यह कुलजम सरूप की वाणी मिलती है जिससे मूल सम्बन्ध का पता चलता है।

ए अर्स गुझ बिना लदुन्नी, क्यों कर बूझ्या जाए।
हक खिलवत बातें गैब की, दें अर्स दिल मोमिन बताए।। ६ ।।

यह परमधाम की गुझ (गुप्त) बातें हैं जो कुलजम सरूप की वाणी के बिना कैसे समझी जाएं? परमधाम में मूल-मिलावा की और श्री राजजी महाराज की गुझ (गुप्त) बातों को मोमिन ही बताएंगे, जिनके दिल को श्री राजजी महाराज अर्श कर बैठे हैं।

Nijanand App

वाहेदत भी इनको कहे, जो हादी हक जात।
त्यों नूर हादी का उमत, इन बीच और न समात।।७ ।।

मोमिनों को ही श्री राजजी महाराज की एकदिली कहा है और इनको ही श्री राजश्यामाजी के अंग कहा है। श्री श्यामाजी की नूरी जमात में इनके अतिरिक्त और कोई नहीं आ सकता।

सुंनत जमात इन को कही, गिरो एक तन जुदी न होए।
ए हक इलमें बेसक हुए, याकी सरभर करें नारी सोए।।८ ।।

इनको ही सुन्नत जमात कहा है। यह सभी एकतन हैं। अलग नहीं हैं। कुलजम सरूप की वाणी से इनके संशय मिट गए हैं। अब सभी नारी फिरके मोमिनों का दावा लिए बैठे हैं।

वाहिद तन मोमिन कहे, एही जमात-सुंनत।
एही फिरका नाजी कह्या, इनों हक हिदायत।।९ ।।

मोमिनों को एक ही तन, एकदिल कहा है। यही सुन्नत जमात है। इनको ही मर्द मोमिनों का नाजी फिरका कहा है और श्री राजजी महाराज की वाणी भी इन्हीं के वास्ते है।

ए जो कौल तोड़ बहत्तर हुए, कहें हम सुंनत-जमात।
दिन मारफत हुए पछताएसी, सिर पटकें जिमी सों हाथ।।१० ।।

इन वचनों को तोड़कर जो बहत्तर नारी फिरके हो गए हैं वह सब अपने को सुन्नत जमात कहते हैं। कुलजम सरूप की वाणी से जब उन्हें ज्ञान होगा तब वह पछताएंगे और अपने हाथों को माथे पर मारकर, सिर जमीन पर पटक-पटक कर रोएंगे।

मेहेरबान ना देवे दुख किन को, मारे सबों तकसीर।
क्या राए राने पातसाह, क्या मीर पीर फकीर।।११ ।।

श्री राजजी महाराज तो बड़े ही मेहरबान हैं। वह किसी को दुःख नहीं देते। सबको उनके गुनाह ही मारते हैं। चाहे कोई राजा, राणा, बादशाह हो या फिर मीर पीर-फकीर हो, सब गुनाहों की सजा पाते हैं।

सुंनत-जमात जात हक की, ए मुख से कहें हम सोए।
कह्या गुनाह बड़ा इन कौल का, तो कह्या जलना याको होए।।१२ ।।

यह सभी अपने मुख से खुदा की सुन्नत जमात (मोमिनों) का दावा लेते हैं। यह उनका सबसे बड़ा गुनाह होगा, जिसकी उनको जलन होगी।

कुंन केहेते जुलमत से, कहे पल में पैदा मोहोरे खेल।
सो सरभर करें हक जात की, तो लटकाए गले में जेल।।१३ ।।

जो सृष्टि कुंन शब्द कहने से निराकार से पैदा हुई है, ऐसे कई खेल एक पल में बनते-मिटते हैं, यह मोमिनों की बराबरी करते हैं, इसलिए इनके गले में फासी का फंदा लगा।

और गिरो महंमद मोमिनों, ए उन पर हुए मेहेरबान।
तो दोस्त कहे दुस्मनों, ए मोमिनों बड़ी पेहेचान।।१४ ।।

जो जमात श्री श्यामाजी महारानी के मोमिनों की है, वह फिर भी इस दुश्मन पर मेहरबानी करती हैं। यही मोमिनों की बड़ी पहचान है कि वह अपने दुश्मन का भी भला चाहते हैं।

Nijanand App

एही औलिया अंबिया, एही कहे हैयात।
दूजा हैयात जरा नहीं, बिना वाहेदत हक जात।। १५ ।।

इन मोमिनों को ही औलिया, अंबिया तथा अखण्ड परमधाम की आत्माएं कहा है। इनके अतिरिक्त दुनियां में और कोई अखण्ड नहीं है।

कोई कायम जरा दूजा कहे, सो मुसरक और काफर।
एक जरा कोई कहूं नहीं, वाहेदत हक बिगर।। १६ ।।

मोमिनों के बिना दुनियां में यदि किसी को कोई अखण्ड कहता है, तो वह काफिर है और बुत परस्त है। दुनियां में केवल मोमिनों के बिना कहीं कोई भी अखण्ड नहीं है।

जो पातसाही हक की, नूरतजल्ला नूर।
इन दोऊ अर्सों बका जिमी, सो सब वाहेदत नूर हजूर।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज की साहेबी परमधाम और अक्षरधाम में है। यह दोनों धाम अखण्ड हैं। श्री राजजी महाराज के नूर के ही स्वरूप हैं। दोनों धाम आमने-सामने श्री राजजी के चरणों तले हैं।

वाहेदत की रूहों वास्ते, खेल झूठा देखाया और।
सो रूहें वाहेदत भूल के, जाने झूठाई हमारा ठौर।। १८ ।।

इन रूहों की एकदिली के वास्ते ही यह झूठा खेल श्री राजजी महाराज ने दिखाया है। अब यह रूहें परमधाम को भूलकर इस झूठे संसार को ही अपना घर समझ बैठी हैं।

एही कबीला एही घर, एही पूजें पानी आग पत्थर।
जानें एही फना नासूत को, कछू नाहीं इन बिगर।। १९ ।।

मोमिन संसार को ही अपना घर और बिरादरी को ही अपना कबीला समझ बैठे हैं और आग, पानी और पत्थर को पूज रहे हैं। यह समझ बैठे हैं कि यह संसार ही सब कुछ है। इसके बिना और कुछ नहीं है।

आसमान जिमी बीच फना के, ए सब में सब्द पुकार।
फेर याही को दूजा कहें, जो हक इलमें न खबरदार।। २० ।।

आसमान, जमीन और चौदह लोक सब नाशवान हैं। यह सब धर्मग्रन्थों में कहा है। फिर इसी संसार को दूसरा कह देते हैं, क्योंकि किसी को कुलजम सरूप की वाणी का ज्ञान नहीं है, अर्थात् अखण्ड परमधाम के अतिरिक्त मिटने वाले ब्रह्माण्ड को दूसरा नहीं कह सकते।

मोमिन और दुनी के, एही तफावत।
मोमिन तन अर्स में, दुनी तन पेड़ गफलत।। २१ ।।

मोमिनों में और दुनियां वालों में यही बड़ा फर्क है। मोमिनों के मूल तन परमधाम में हैं और दुनियां के तन नाशवान हैं।

मोमिन सुरत पीछी फिरे, उठ खड़ा होए अर्स तन।
जो दुनियां दम पीछी फिरे, तो जाए ला-मकान बीच सुंन।। २२ ।।

मोमिनों की सुरता जब पीछे हटेगी तो परमधाम की परआतम उठ खड़ी होगी। दुनियां जल मरेगी तो निराकार और शून्य में समा जाएगी।

Nijanand App

एक तन मोमिन अर्स में, दूजा तन सुपन।
लैल फरामोसी बीच में, भूल गए अर्स तन।। २३ ।।

मोमिनों का मूल तन परमधाम में है और दूसरा तन संसार का है। यह फरामोशी के खेल में अपने असल तन परआतम को भूल गए हैं।

दे हक इलम जगाए मोमिनों, देखी अर्स बका न्यामत।
एक जरा छिपी ना रही, देखी अर्स हक खिलवत।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुलजम सरूप की वाणी से मोमिनों को जगाया। मोमिनों ने अखण्ड परमधाम की न्यामत को देखा। उन्होंने मूल-मिलावे को देखा। अब कोई बात उनसे छिपी नहीं रह गई।

सकसुभे कछू ना रही, पट बका दिए सब खोल।
दई साहेदी आयतों हदीसों, सो सब रूहअल्ला कहे बोल।। २५ ।।

मोमिनों को किसी प्रकार के संशय नहीं रहे। अखण्ड परमधाम के सब दरवाजे खुल गए। इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कुरान की साहेबी, मुहम्मद की हदीसों की और श्री श्यामाजी महारानी (देवचन्द्रजी) के वचनों की गवाही दी।

वजूद मोमिन जो ख्वाब के, सो किए रूबरू अंग असल।
खोले बातून देखे रूह नजरों, किए दोऊ मुकाबिल।। २६ ।।

मोमिनों के झूठे तन जो संसार में है, उनको उनकी परआतम के सामने कर दिया। उनके लिए सब ग्रन्थों के छिपे भेद खोल दिए। अब वह अपनी नजर से संसार और परमधाम को देख रहे हैं।

सेहेरग से नजीक कहे इनको, जाकी असल हक कदम।
जो हुआ असल पर हुकम, सोई नकल देत इत दम।। २७ ।।

मोमिनों से ही श्री राजजी महाराज सेहेरग से नजदीक हैं। इनकी परआतम श्री राजजी महाराज के चरणों के तले बैठी है। परआतम के अंग पर जो श्री राजजी महाराज का हुकम होता है, वैसा ही उनका संसार में यह नकली तन लीला करता है।

असल दुनी जिन गफलत, ताए इलमें करो पेहेचान।
ताको नजीक सेहेरग से, सुन्य हवा ला–मकान।। २८ ।।

दुनियां जो निराकार से पैदा है, उसे कुलजम सरूप की वाणी से पहचानो। दुनियां वालों का सेहेरग से नजदीक निराकार है।

नहीं करें बराबरी है की, क्यों मिले दाखला ताए।
है नींद उड़े उठे अर्स में, फना नींद उड़े उड़ जाए।। २९ ।।

मिटने वाली दुनियां सच्चे मोमिनों की बराबरी करती है। इनकी तुलना कैसे हो सकती है? संसार के समाप्त होने पर मोमिन परमधाम में अपनी परआतम में उठ खड़े होंगे तथा यह सपने की दुनियां जड़ (मूल) से ही समाप्त हो जाएगी।

सुपन उड़े जब मोमिनों, उठ बैठे अर्स वजूद।
खासलखास बंदे नजीकी, ए कदमों हमेसा मौजूद।। ३० ।।

मोमिनों का जब सपना हटेगा, तो परमधाम के तन उठ बैठेंगे। यह मोमिन श्री राजजी महाराज के अंग हैं और सदा श्री राजजी महाराज के चरणों के तले रहने वाले हैं।

Nijanand App

ए रूहें फरिस्ते दो गिरो, जो बीच उतरी लैलत कदर।
और दुनी फूंके उड़ावे असराफील, दूजी फूंके उठावे बका कर।। ३१ ।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि की दो जमातें लैल तुल कदर में उतरी हैं। जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील सूर फूंककर दुनियां को उड़ा देगा और दूसरी बार सूर फूंककर सबको अखण्ड बहिश्तों में कायमी दे देगा।

महंमद कहे भाई मेरे, आवेंगे आखिरत।
गिरो रबानी अहमदी, याकी बीच आयतों हदीसों सिफत।। ३२ ।।

मुहम्मद साहब कहते हैं कि मेरे भाई मोमिन आखिर को आएंगे। यह श्री श्यामाजी महारानी की जमात है, जिनकी महिमा कुरान की आयतों और मुहम्मद की हदीसों में गाई है।

खेल किया महंमद वास्ते, जैसे खेल के कबूतर।
खासलखास गिरो रबानी, वह इनों की करे बराबर।। ३३ ।।

यह खेल श्री श्यामाजी महारानी और रूहों के वास्ते बनाया है। यह संसार खेल के कबूतर के समान नाशवान है। मोमिन श्री राजजी महाराज की खासलखास जमात हैं, जबकि दुनियां वाले इनकी बराबरी करते हैं।

खेल किया महंमद वास्ते, महंमद आया वास्ते उमत।
ताए एक दम न्यारी ना करें, मेहेर कर धरी तीन सूरत।। ३४ ।।

यह खेल श्री श्यामाजी महारानी और रूहों के वास्ते बनाया। श्री प्राणनाथजी ने इन मोमिनों के वास्ते ही अपनी तीन सूरतें बसरी, मलकी और हकी धारण की हैं। इन मोमिनों को अपने से एक पल भी अलग नहीं करते हैं। श्री प्राणनाथजी इन्हीं के वास्ते आए हैं।

इन उमत भाइयों वास्ते, महंमद आए तीन बेर।
दुनी क्या जाने बिना निसबत, बिना इलम रात अंधेर।। ३५ ।।

इन मोमिन भाइयों के वास्ते मुहम्मद साहब ने तीन बार तन धारण किए (बसरी, मलकी और हकी)। इस बात को दुनियां वाले बिना सम्बन्ध के कैसे जान सकते हैं? उनके पास जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम वाणी नहीं है, इसलिए अंधेरे में भटक रहे हैं।

जब जोड़े मिले मुकाबिल, तब जाहेर हुए रात दिन।
रात कुफर फना मिट गई, हुआ हक बका अर्स रोसन।। ३६ ।।

जब हजार साल का दिन और हजार महीने की रात्रि दिन-रात का जोड़ा गुजरा, तब अज्ञान और अन्धकार मिट गया तथा श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम की पहचान सबको मिली (१७४८ सम्वत् में)।

असल जाकी अर्स में, सो सेहेरग से नजीक होए।
जो पैदा तारीकी हवा से, क्यों हक नजीक आवे सोए।। ३७ ।।

जिनकी परआतम परमधाम में है, उनसे ही श्री राजजी महाराज सेहेरग से नजदीक हैं। दुनियां जो मोह तत्व (निराकार) से पैदा है वह श्री राजजी के नजदीक कैसे हो सकती है?

Nijanand App

सोई फना कही दुनियां, जाकी असल अर्स में नाहें।
सोई हैयात हमेसगी, जो अर्स बका माहें।। ३८ ।।

इसलिए दुनियां को नाशवान कहा है, क्योंकि इनकी परआतम परमधाम में नहीं है। जो अखण्ड परमधाम में हैं वह सदा ही अखण्ड हैं।

वे इंतजार उसी कौल के, ढूंढ़त फिरें रात दिन।
आराम न होए बिना मिले, जेती रूह मोमिन।। ३९ ।।

जितने रूह मोमिन हैं वह श्री राजजी महाराज के वायदे के अनुसार उनके आने का इन्तजार कर रहे हैं और रात-दिन श्री राजजी को खोज रहे हैं। जब तक श्री राजजी महाराज मिल नहीं जाते, तब तक उनको चैन नहीं है।

महंमद मोमिनों वास्ते, ले आया फुरमान।
इलम किल्ली ल्याए रूहअल्ला, किए छिपे जाहेर बयान।। ४० ।।

रसूल साहब मोमिनों के वास्ते ही कुरान लाए और तारतम ज्ञान की कुन्जी रूह अल्लाह श्री श्यामाजी लाए, जिन्होंने अपने दूसरे तन से कुरान के छिपे रहस्य जाहिर किए।

एते दिन किन ना कह्या, के रसूल आया इन पर।
ना किन फुरमान सिर लिया, ना किन लई खबर।। ४१ ।।

इतने दिन तक किसी ने नहीं कहा कि रसूल साहब मोमिनों के वास्ते आए हैं। किसी ने भी उनके फुरमान को स्वीकार नहीं किया। किसी ने रसूल साहब की दी खबर नहीं ली।

नब्बे साल हजार पर, जब लग बीते दिन।
एते दिन किन ना कह्या, जो कुरान न पकड़्या किन।। ४२ ।।

एक हजार नब्बे वर्ष बीतने तक किसी ने कुरान के ज्ञान को नहीं पकड़ा और न यह बात ही कही (सम्वत् १७३५ तक)।

बोहोतों किया कुरान अपना, ना किन लई हकीकत।
ना किन पाया इलम हक का, ना किन खोली मारफत।। ४३ ।।

सभी लोग कुरान को अपना कहते थे, परन्तु हकीकत का ज्ञान किसी ने नहीं लिया। किसी को कुलजम सरूप की वाणी नहीं मिली और न किसी ने मारफत का ज्ञान, श्री राजजी महाराज के दिल की हकीकत के भेद ही खोले।

जो रूहें उतरीं अर्स सें, तामें केते कहे पैगंमर।
सिरदार सबों में रूहअल्ला, कहें हदीसें यों कर।। ४४ ।।

परमधाम से जो रूहें उतरी हैं, इनमें बहुत परमधाम का ज्ञान बताने वाली हैं। हदीसों में लिखा है कि इन सब मोमिनों के सिरदार (प्रधान) रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी होंगे।

ए हुज्जत जाहेर किन ना करी, हम रूहें अर्स सें आई उतर।
कौल किया हकें हमसों, बोलावें बखत फजर।। ४५ ।।

किसी ने भी इस बात का दावा नहीं किया कि हम परमधाम की रूहें हैं और खेल देखने के लिए उतरी हैं। किसी ने यह भी नहीं कहा कि खुदा ने हमको फजर के वक्त बुलाने के वास्ते आने का वायदा किया है।

Nijanand App

कह्या रसूलें रूहअल्ला, माहें सिरदार सब रूहन।
मैं फुरमान ल्याया इनों पर, ए करसी साफ सबन।।४६ ।।

रसूल साहब ने कहा कि सभी रूहों में श्री श्यामाजी महारानीजी सिरदार हैं। मैं इनके वास्ते कुरान लाया हूं। यही सब के संशय मिटाएंगे।

मारें एही दज्जाल को, और एही करें एक दीन।
साफ करे सब दिलों को, हक पर देवे आकीन।।४७ ।।

यही श्री श्यामाजी महारानी दज्जाल को मारकर सब दुनियां वालों को एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में लाएंगी। सबके दिलों को जागृत बुद्धि के ज्ञान से संशय मिटाकर निर्मल करेंगी और पारब्रह्म के ऊपर यकीन दिलाकर एक पारब्रह्म का पूजक बनाएंगी।

एही खोले हकीकत मारफत, करे माएना जाहेर बातन।
करे अर्स बका हक जाहेर, एही फजर कही हक दिन।।४८ ।।

यह श्री श्यामाजी महारानी ही अपने दूसरे जामे से हकीकत और मारफत के ज्ञान से बातूनी और जाहिरी मायने बताएंगी तथा अखण्ड घर परमधाम और श्री राजजी महाराज को दुनियां में जाहिर करेंगी। यही समय फजर का दिन कहा है।

मेट दई रात अंधेरी, और अगले अमल सरे दीन।
हक बका अर्स चिन्हाए, ऐसे हक इलमें किए अमीन।।४९ ।।

श्री श्यामाजी महारानी ने अपने दूसरे जामे से दुनियां से अज्ञान मिटा दिया और कर्मकाण्ड पर चलने वाले सभी धर्मों को समाप्त कर दिया। अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज की पहचान कराकर कुलजम सरूप की वाणी से सभी मोमिनों को धर्मनिष्ठ कर दिया।

हकें करी अर्समें रूहोंसों, पेहेलें रदबदल।
सो इलमें जगाए दिल अर्स कर, हकें दई कुल्ल अकल।।५० ।।

श्री राजजी महाराज ने रूहों से परमधाम में पहले वार्तालाप किया था। अब कुलजम सरूप की वाणी से जगाकर मोमिनों के दिल को अपना अर्श बनाया और अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया।

जल बिन जल जीव ना रहे, ना थल बिन जीव थल।
तो अर्स रूहें अर्स बिन क्यों रहें, जिनों हक बका अर्स असल।।५१ ।।

जल के जीव जल के बिना नहीं रहते, थल के जीव थल के बिना नहीं रहते, तो परमधाम की रूहें परमधाम के बिना कैसे रहें? इनका अखण्ड घर परमधाम है।

ढूंढ़ें अपने रसूल को, और अपना फुरमान।
और ढूंढ़ें हक इलम को, जासों बातून होए बयान।।५२ ।।

यह मोमिन अपने रसूल श्री प्राणनाथजी को और उनकी वाणी कुलजम सरूप को खोजते हैं, जिससे उन्हें उनके घर की बातूनी बातें मिल जाएं।

राह देखें रूहअल्लाह की, और ढूंढ़ें आखिरी इमाम।
हक हकीकत मारफत, चाहें फल कयामत तमाम।।५३ ।।

यह श्री श्यामाजी महारानी के आने का रास्ता देख रहे हैं और आखिरी इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को खोजते हैं। वह श्री राजजी महाराज के हकीकत और मारफत के ज्ञान से कयामत के समय का तमाम लाभ (नफा) लेना चाहते हैं।

Nijanand App

फना बीच से निकस के, बीच आवें बका असल।
दुनी दुख छोड़ लें हक सुख, ए रूहें क्यों छोड़ें अपना फल।। ५४ ।।

मोमिन झूठे संसार से निकलकर अखण्ड परमधाम में आएंगे। दुनियां वाले जब दुःख को छोड़कर अखण्ड बहिश्तों का सुख लेंगे तो यह रूह मोमिन कयामत के समय मिलने वाली साहेबी के फल को कैसे छोड़ दें?

दिल बका या फना दम, सब असल अपनी चाहे।
कोई दोजख कोई भिस्त में, या कोई अर्स बीच उठाए।। ५५ ।।

अखण्ड घर के रहने वाले हों या झूठे संसार के, सबको अपना असली हक चाहिए, इसलिए कयामत के समय में किसी को दोजख, किसी को बहिश्त और किसी को परमधाम में उठने का लाभ मिलेगा।

ए जो फना मोहोरे खेल के, मैं मेरी कर खेलत।
याही को देखें सुनें, सुध ना बका वाहेदत।। ५६ ।।

इस संसार के झूठे देवी-देवता अपनी मैखुदी के अहंकार में खुदा बनकर खेल रहे हैं। वह संसार की बातों को देखते और सुनते हैं। इनको भी अखण्ड घर परमधाम की सुध नहीं है।

रूहें गिरो तिनमें मिल गईं, हक बका न जानें तरफ।
चौदे तबक फना बीच, कोई कहे न बका एक हरफ।। ५७ ।।

ऐसे झूठे संसार में ब्रह्मसृष्टि भी आकर मिल गई है। जहां पर अखण्ड घर की पहचान कराने वाला कोई नहीं है। चौदह लोकों के नाशवान संसार में अखण्ड परमधाम का कोई एक हरफ भी नहीं बोलता।

ना थे अव्वल ना होसी आखिर, ए जो बीच में देत देखाए।
सो भी कहे किताबें अबहीं, आखिर देसी उड़ाए।। ५८ ।।

यह संसार न पहले था और न आखिर में रहेगा। बीच में अभी जो दिखाई दे रहा है, वह भी आखिरत के समय उड़ जाएगा। ऐसा सब धर्मशास्त्रों में लिखा है।

अव्वल आखिर नाबूद, बीच फरेब सो भी नाबूद।
सो बरकत महंमद मोमिनों, पाए कायम भिस्त वजूद।। ५९ ।।

यह शुरू में भी नाशवान है और अन्त में भी नाशवान है। बीच में भी यह झूठा नाशवान है, परन्तु मोमिनों की और श्री प्राणनाथजी की कृपा से सबको बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति मिल जाएगी।

ओ उतरे कहे अर्स से, ए कुंन केहेते पैदास।
जाहेर देखी तफावत, ए आम वे खासलखास।। ६० ।।

परमधाम से जो रूहें उतरी हैं और दुनियां जो कुंन कहते पैदा हुई है, उनमें यह सबसे बड़ा फर्क है कि दुनियां वालों को आम खलक और मोमिनों को खासलखास कहा है।

असल तन इनों अर्स में, ठौर ठौर लिखी इसारत।
बीच जंजीरों मुसाफ की, करें आयतें इनों सिफत।। ६१ ।।

मोमिनों की परआतम परमधाम में है। यह बात ठिकाने-ठिकाने पर कुरान में लिखी है और कुरान की जंजीरों और आयतों में इनकी बड़ी महिमा गाई है।

Nijanand App

तो जाहेर करी बीच लैल के, हक की गैब खिलवत।
फजर होसी इत थें, दिन याही हक मारफत।। ६२ ।।

इन्होंने ही रात्रि में संसार में आकर मूल-मिलावे के छिपे भेदों को जाहिर किया और इनके द्वारा ही श्री राजजी महाराज के दिल की बातें (मारफत का ज्ञान) सबको मिलेंगी और फजर होगी।

अव्वल फुरमाया रसूल को, कहो हरफ तीस हजार।
राह रात की चलाओ सरीयत, बका फजरें रखो करार।। ६३ ।।

मेयराजनामे में लिखा है कि रसूल साहब को तीस हजार हरफ शरीयत के जाहिर कर इस्लाम दीन की स्थापना करने का आदेश था और तीस हजार हरफ अखण्ड ज्ञान का अधिकार दिया गया था और तीस हजार को छिपाकर रखने का आदेश हुआ था।

राह रात की चलाओ सरीयत, ले तरीकत पोहोंचे हकीकत।
तब फजर दिल महंमदें, दिन होसी मारफत।। ६४ ।।

खुदा ने रसूल साहब को हुकम दिया था कि शरीयत से इस्लाम दीन का धर्म चलाओ और फिर तरीकत और हकीकत की पहचान कराओ, फिर फजर के समय इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के दिल से मारफत का ज्ञान जाहिर होगा।

सिपारे उनईस में, लिख्या रात हवा मजकूर।
सूरज महंमद दिल मारफत, उड़े रात हवा देख नूर।। ६५ ।।

कुरान के उन्नीसवें सिपारे में रात्रि (निराकार) के धर्मों की यह सब चर्चा है जो श्री प्राणनाथजी के दिल से मारफत का ज्ञान रूपी सूर्य जाहिर होने पर यह सब समाप्त हो जाएंगे।

अग्यारैं सदी जानें आरिफ, लिखी हदीसों बीच सरत।
इस राह पोहोंचावे हकीकत, होसी फजर दिन मारफत।। ६६ ।।

हदीसों में ग्यारहवीं सदी में मोमिनों के जाहिर होने की बात लिखी है। इस बात की जानकारी हकीकत के ज्ञान से मिलती है। मारफत का ज्ञान जाहिर होने पर ज्ञान का सवेरा हो जाएगा।

दुनी हजार साल हक दिन के, कही सौ साल एक रात।
बारैं फरदा रोज फजर, होंए जाहेर हादी हक जात।। ६७ ।।

दुनियां के हजार साल खुदा के एक दिन के बराबर हैं। सौ साल की एक रात बताई है। अब बारहवीं सदी में कल का दिन हो गया और श्री राजश्यामाजी और रूहें जाहिर हो गईं।

और पेहेले छिपे रखाए हक ने, ए जो हरफ तीस हजार।
सो दिल बीच रखे महंमदें, कह्या तुमहीं पर अखत्यार।। ६८ ।।

खुदा ने रसूल साहब को हकीकत के तीस हजार हरफ छिपाकर रखने को कहा था। इनको दिल में रखना। इन्हें खोलने का अधिकार तुमको देते हैं।

तीस हजार और गुझ कहे, ताकी आई न किन को बोए।
जबराईल से छिपाए, ए आखिर जाहेर किए सोए।। ६९ ।।

मारफत के जो तीस हजार हरफ गुझ (गुप्त) कहे हैं, उनकी किसी को सुगन्धि तक नहीं मिली। यहां तक कि जबराईल फरिश्ता भी नहीं जान सका। अब श्री प्राणनाथजी महाराज ने आकर उनको संसार में जाहिर किया (खिलवत, परिकरमा, सागर, सिनगार)।

Nijanand App

ए साहेदी नामें मेयराज में, बीच लिखे माएने बातन।
हक इसारतें रमूजें, सो बूझे हादी या मोमिन।।७० ।।

मेयराजनामा में इसकी गवाही लिखी है जो बातूनी भेद समझने से पता लगता है। श्री राजजी महाराज की इन इशारतों को श्री श्यामाजी महारानी और मोमिन ही समझ पाते हैं।

हक इलम लदुन्नी जिन पे, सोई समझे हक रमूज।
जो तन खिलवत अर्स के, सोई जानें हक दिल गुझ।।७१ ।।

यह कुल्जम सरूप की वाणी जिनके वास्ते आई है, वही श्री राजजी महाराज की इशारतों को समझते हैं। जिनके तन परमधाम में है, वही श्री राजजी महाराज के दिल की गुझ (गुप्त) बातों को जानते हैं।

एही करें खिलवत जाहेर, दूर करें तारीकी रात।
क्यों फना रहे बका नजरों, ऊग्या सूर बका हक जात।।७२ ।।

यही मोमिन ही परमधाम की खिलवत (मूल-मिलावा) को जाहिर करेंगे और अज्ञान के अन्धकार को दूर करेंगे। नाशवान संसार का ज्ञान अखण्ड ज्ञान के सामने कैसे रह सकता है, जबकि अखण्ड परमधाम की जागृत बुद्धि के ज्ञान का कुल्जम सरूप मारफत सागर के ज्ञान का सूर्य उदय हो गया है।

अर्स न्यामत जाहेर हुई, जोए कौसर अर्स हौज।
हक इलमें कछू ना छिपे, किया जाहेर फरदा रोज।।७३ ।।

कुल्जम सरूप की वाणी से जमुनाजी, हौज कौसर तालाब और परमधाम की सभी न्यामतें जाहिर हो गई हैं। कल के दिन कयामत होने का जो भेद था, वह भी सब जाहिर हो गया। पारब्रह्म की वाणी के सामने कुछ छिपा नहीं रह सकता।

ए जो दुनी पैदा जुलमत, सो इनों की करे सरभर।
मजाजी क्यों होए सके, रूहें हक बराबर।।७४ ।।

झूठे संसार के लोग जो निराकार से पैदा हैं, वह इन मोमिनों की बराबरी करते हैं। झूठे संसार के लोग मोमिनों के बराबर कैसे हो सकते हैं?

ए जो मोमिन नूर बिलंद के, दिल जिनों अर्स हक।
सरभर इनों की दुनी करे, हुआ सिर गुनाह बुजरक।।७५ ।।

मोमिन परमधाम से उतरे हैं, जिनके दिलों में श्री राजजी महाराज का अर्श है। झूठे संसार के लोग इनकी बराबरी करते हैं। यह उनके सिर बड़ा गुनाह हुआ।

जब लिया बातून माएना, खोली रूह नजर।
तब हुआ अर्स दिल मोमिनों, जाहेर हुई फजर।।७६ ।।

जब मोमिनों ने आत्मदृष्टि से कुरान के बातूनी अर्थों को समझा, तभी मोमिनों का दिल अर्श बन गया और फजर का दिन जाहिर हो गया।

ए जो अमल चलते थे रात के, ले राह सरीयत।
सो हुए सब मनसूख, खोले हकीकत।।७७ ।।

यह अंधेरे में कर्मकाण्ड (शरीयत) पर आधारित पन्थ, पैंडे पर चलते थे। वह हकीकत तारतम ज्ञान आने से सब रद्द हो गए।

Nijanand App

कह्या फजर को होएसी, फरदा रोज आखिरत।
होसी खोले हकीकत, हक अर्स लज्जत।। ७८ ।।

कुरान में लिखा है कि जब हकीकत के ज्ञान से कुरान के रहस्य खुलेंगे, तब श्री राजजी महाराज और परमधाम के सुख मिलेंगे। फर्दा रोज को जो खुदा के आने का वायदा था, अब मारफत सागर का ज्ञान आने से फजर हो गई और सबको उनका दर्शन हो रहा है।

सो आए जब इत दिन में, भया नूर रोसन।
सिफायत महंमद की, फजर पोहोंची तिन।। ७९ ।।

हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज ने आकर मारफत का ज्ञान दिया, जिससे सारे संसार की अज्ञानता का अन्धकार मिटकर उजाला हो गया। जिनको कुलजम सरूप की वाणी की पहचान हो गई, उनके लिए सवेरा हो गया।

तो कह्या अमल रात का, सुध आप ना हक।
हुता न इलम लदुन्नी, जिनसे होइए बेसक।। ८० ।।

कुरान में कहा है कि अज्ञानता के अन्धकार में कर्मकाण्ड (शरीयत) पर चलने वाले धर्मों को पारब्रह्म की सुध नहीं थी और न उनके पास जागृत बुद्धि का ज्ञान ही था, जिससे उनके संशय मिट सकते।

हक इलम से होत हैं, अर्स बका दीदार।
पट खोलत सब वार के, और नूर के पार।। ८१ ।।

कुलजम सरूप की वाणी से ही परमधाम के दर्शन होते हैं। इस वाणी से ही निराकार के पार, उस पार के भी पार अक्षरातीत के दर्शन होते हैं।

सुध होए हक कुदरत, और आप चिन्हार।
इलम लदुन्नी हक का, खोल देवे सब द्वार।। ८२ ।।

कुलजम सरूप की वाणी से ही श्री राजजी महाराज की कुदरत तथा अपने आप की पहचान होती है और सब बेहद के पट खुल जाते हैं।

कायम न्यामत हक की, न थी रात के माहें।
अमल दुनी में सरीयत, ए चल्या है तब ताहें।। ८३ ।।

श्री राजजी महाराज की अखण्ड न्यामत कुलजम सरूप की वाणी कर्मकाण्ड (शरीयत) पर चलने वाले धर्मों में नहीं थी। अज्ञान के अन्धकार के कारण ही कर्मकाण्ड पर आधारित धर्म चले।

बुत पुजावते रात के, गई जड़ मेख तिन।
सो क्यों जाहेरी आगे चल सकें, हुए हक बका दिन रोसन।। ८४ ।।

अन्धकार में जो मूर्तिपूजा करते थे, वह धर्म जड़ से ही समाप्त हो गए। जब श्री राजजी महाराज का अखण्ड परमधाम का ज्ञान जाहिर हुआ, तो उसके सामने संसार के झूठे लोग कैसे चल सकते हैं?

झण्डा खड़ा था दीन का, मक्के मदीने।
सो जमात ले सरीयतें, पकड़्या था अकीने।। ८५ ।।

मक्का मदीने में जो ईमान का झण्डा खड़ा था, उसको मुसलमानों ने शरीयत पर यकीन लाकर पकड़ रखा था।

Nijanand App

हुकम किया था रसूल ने, जिन पड़ो जुदे तुम।
सो कौल तोड़ बहत्तर हुए, रात के मुस्लिम।। ८६ ।।

रसूल साहब ने मुसलमानों को हुकम दिया था कि तुम आपस में झगड़ना नहीं। उनके वचनों को तोड़कर अनजान मुसलमान बहत्तर फिरकों में बंट गए।

इन मजाजी-जमात ने, छोड़े हक हादी कदम।
सो टूक टूक जमात जुदी हुई, हाए हाए ऐसा किया जुलम।। ८७ ।।

मुसलमान रसूल साहब के बताए हक श्री राजजी महाराज, हादी रसूल साहब के चरणों को छोड़कर बहत्तर टुकड़ों में बंट गए। हाय! हाय! इतना भारी जुल्म का काम किया।

हाए हाए देख्या न हक हादी सामी, ना हदीसें कुरान।
तो आए लिखे नामें वसीयत, इत ना रह्या किन का ईमान।। ८८ ।।

हाय! हाय! उन्होंने न हक हादी का ध्यान किया और न कुरान या हदीसों को पढ़ा। इस तरह से सबका ईमान उठ गया, जिसकी वसीयतनामे में गवाही दी।

एक सात जने ईमानसों, मुए मुसलमान।
आए पोहोंच्या सोई बखत, जो कह्या था नुकसान।। ८९ ।।

कुरान में रसूल साहब ने कहा था, मुसलमानो! तुम्हारे नुकसान का वक्त आएगा। तुम्हारा ईमान गिर जाएगा। उनके बाद एक बार लोग मदीने में नमाज पढ़ रहे थे, तो खुदा ने मोहरों की बरसात की। केवल सात मुसलमानों को छोड़कर बाकी सब मोहरें उठाने भाग गये। जब मोहरें उठाने लगे, तो वह कोयला हो गए। दोनों तरफ से नुकसान हुआ।

और लिख्या जो पीछे रहे, तिन दिलों नहीं आकीन।
सो ए लिख्या सौं खाए के, अब लग था झण्डा दीन।। ९० ।।

कुरान में यह भी लिखा है कि जो पीछे रहे। उनके भी यकीन डोल गए। वसीयतनामे में कसम खाकर लिखा है कि अब दीन का झण्डा यहां से उठ गया।

जो कह्या था रसूल ने, सोई हुआ बखत।
आए लिखे नामें वसीयत, जाहेर करी कयामत।। ९१ ।।

रसूल साहब ने जो कहा था, वह वक्त आ गया। वसीयतनामों ने आकर कयामत को जाहिर कर दिया।

तो आए नामें वसीयत, जो पेहेले फुरमाए।
सो ए देखो बीच आयतों, दिलसों अर्थ लगाए।। ९२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि रसूल साहब ने जैसा पहले से फुरमाया था, उसी के अनुसार वसीयतनामे लिखकर आ गए हैं। अब कुरान की आयतों को दिल से विचार कर देखो।

ए जो मजाजी दुनियां, क्या करसी विचार।
तो क्यों देखे बिना मारफत, बीच राह अंधार।। ९३ ।।

यह झूठी दुनियां कैसे विचार कर सकती है? क्योंकि इनके पास कुलजम सरूप की वाणी न होने के कारण से अंधेरे में पड़ी हैं।

Nijanand App

जिनों मुसाफ लदुन्नी खोलिया, पाई हकीकत।
तब जानो फजर हुई, आए पोहोंची सरत।। ९४ ।।

जिन्होंने आकर कुलजम सरूप की वाणी से कुरान के छिपे रहस्य खोले, उन्हें कुरान की हकीकत का ज्ञान मिल गया और तभी जानो कि फजर का समय आ गया।

तुम जुदे जिन पड़ो, रहियो गिरोह साथ।
सो होएगा दोजखी, जो छोड़सी जमात।। ९५ ।।

रसूल साहब ने कहा था कि जमात का साथ छोड़कर तुम अलग मत होना। जो जमात छोड़ेगा वह दोजखी होगा।

सो तो जिद कर जुदे हुए, फिरके जो बहत्तर।
ताको नारी आयतों हदीसों, लिख्या है यों कर।। ९६ ।।

रसूल साहब की बातों को न मानकर आपस में लड़ झगड़कर मुसलमान बहत्तर फिरकों में बंट गए। आयतों हदीसों में इनको नारी (दोजखी) फिरका कहा है।

सो देवाई हादिएं साहेदी, पुकारे सिरदार।
फैल कहे तिनों मुख अपने, दुनी सब हुई ख्वार।। ९७ ।।

मक्का मदीने के काजी लोगों ने वसीयतनामा लिखकर इस बात की गवाही अपने मुख से दी है कि इस्लाम के मानने वालों ने कहा कि यहां इमाम के बिना लड़ाई-झगड़े से सबकी दुर्दशा हो गई है।

कह्या दुनी पढ़सी, आप दिल विचार।
चिट्ठी लेसी पीछली हाथ में, केहेसी फैल पुकार।। ९८ ।।

मुहम्मद साहब ने कहा कि बाद में सभी जब कुरान को पढ़ेंगे और दिल से विचार करेंगे। तब उनके कर्म स्वयं ही उन्हें दिखने लगेंगे और पश्चाताप करेंगे।

फिरका जो तेहेत्तरमां, कह्या नाजी हक इलम।
मोमिन दिलों पर लदुन्नी, लिख्या बिना कलम।। ९९ ।।

तिहत्तरवां फिरका नाजी फिरका होगा। जिसके पास जागृत बुद्धि का ज्ञान होगा। यही वह मोमिन हैं, जिनके दिलों पर खुदा ने बिना कलम के ज्ञान लिखा है।

तिन दिलों पर सूरज, ऊग्या मारफत।
जिनों पाई अर्स इलमें, हक की हिदायत।। १०० ।।

इन मोमिनों के दिलों में ही मारफत के ज्ञान का सूर्य है। इनको कुलजम सरूप की वाणी से श्री राजजी महाराज की पहचान मिली।

रूहें फरिस्ते अर्स के, सोई महंमद दीन।
तिनमें सकसुभे नहीं, नूर पूर आकीन।। १०१ ।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि अखण्ड परमधाम और अक्षरधाम की हैं। यही लोग श्री प्राणनाथजी के निजानन्द सम्प्रदाय के सुन्दरसाथ हैं। इन सुन्दरसाथ के अन्दर जरा भी संशय नहीं है। इनका यकीन और ज्ञान पक्का है।

Nijanand App

ए जो बेसक महंमदी, सुंनत जमात।
वाहिद तन कुल्ल मोमिन, छोड़ें न हाथों हाथ।। १०२ ।।

इन्हीं सुन्दरसाथ को ही कुरान में सुन्नत जमात कहा है। यह सभी मोमिन एकतन, एकदिल हैं और एक-दूसरे का साथ कभी नहीं छोड़ते।

वसीयत नामें आए के, इत करी पुकार।
राह बीच की छोड़ बहत्तर हुए, छूट गया करार।। १०३ ।।

वसीयतनामों के आने से हिन्द में शोर हो गया कि मुसलमान लड़-झगड़कर बहत्तर फिरकों में बंट गया है। उसका चैन खत्म हो गया है। वह अशान्त हो गया है।

नाजी फिरका हक इलमें, बेसक हुआ एक।
मारफत माएना मेयराज का, सब पाया विवेक।। १०४ ।।

अब कुलजम सरूप की वाणी से ही सुन्दरसाथ का नया फिरका हुआ जो निःसन्देह है। इसी को नाजी फिरका कहते हैं। मेयराजनामें में जो मारफत के तीस हजार हरफ जाहिर न करने के आदेश दिए, उसका विवरण अब सुन्दरसाथ ने पढ़ लिया।

वसीयत नामें में सखत, लिखे सौगन्द खाए।
सो कौन देखे नाजी बिना, दिल सों अर्थ लगाए।। १०५ ।।

इसलिए वसीयतनामे में सौगन्ध खाकर कठोर शब्द लिखे हैं। इन शब्दों को इस नाजी फिरके के बिना दिल से अर्थ लगाकर कौन समझेगा?

सो नूर झण्डा खड़ा कर, इत दिया देखाए।
सो ईमान बिना देखे नहीं, पीछे रोसी पछताए।। १०६ ।।

इसलिए पन्नाजी में नूरी झण्डा खड़ा करके ज्ञान का रास्ता दिखा दिया। जिनको ईमान नहीं है, उनको दिखाई नहीं देगा और वह पीछे रोएंगे।

सो नूर झण्डा खड़ा हुआ, बीच हिंदुस्तान।
जित जबराईल ले आइया, न्यामत चारों कुरान।। १०७ ।।

वही ईमान का नूरी झण्डा श्री प्राणनाथजी ने पन्ना में खड़ा किया। जहां पर जबराईल फरिश्ता कुरान की चारों न्यामतें (बरकत, शफकत, कुरान और नूरी झण्डा) ले आया।

जिमी आरब से ल्याइया, दुनियां की बरकत।
और न्यामत बड़ी ल्याया, फकीरों की सफकत।। १०८ ।।

अरब की जमीन से जबराईल फरिश्ता दुनियां की बरकत उठा लाया। सबसे बड़ी फकीरों की शफकत और दुआएं उठा लाया।

ए जो दुनियां बरकत, सो तो कह्या ईमान।
और फकीरों की सफकत, सो आखिर मेहेर मेहेरबान।। १०९ ।।

यह दुनियां की बरकत और फकीरों की शफकत और ईमान आखिर में मेहरबान श्री प्राणनाथजी के पास आ गए।

Nijanand App

उतथें उठाए जबराईल, ल्याया बीच हिंद।
गिरो सितारे महंमदी, कहे जो सूरज चंद।। ११० ।।

जबराईल फरिश्ता मक्का मदीने से उठाकर इन न्यामतों को पन्नाजी में ले आया। जहां पर सुन्दरसाथ सितारों के समान और इमाम मेहेंदी श्री प्राणनाथजी के अन्दर चन्द्रमा के समान श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) और सूर्य के समान श्री इन्द्रावतीजी (मेहराज ठाकुर) दोनों एकतन में दर्शन दे रहे हैं।

चांद सूरज दोऊ हादी कहे, महंमदी सूरत।
कही गिरो सितारों की, खासलखास उमत।। १११ ।।

यह चन्द्रमा और सूर्य दोनों हादी मुहम्मद के मलकी और हकी स्वरूप हैं और सुन्दरसाथ की जमात सितारों के समान है।

सिपारे सत्ताइस में, जाहेर कह्या रोसन।
सो तुम देखो अर्स दिलमें, जाहेर हक हादी मोमिन।। ११२ ।।

कुरान के सत्ताइसवें सिपारे में यह बात जाहिरी लिखी है। इसलिए, हे मोमिनो! तुम अपने अर्श दिल में साक्षात् श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी और सुन्दरसाथ के दर्शन करो।

कह्या बीच हिंद के, हक करसी हिसाब।
खासलखास उमत, सब लेसी सवाब।। ११३ ।।

कुरान में रसूल साहब ने कहा कि खुदा न्यायाधीश बनकर पन्नाजी में बैठकर हिसाब करेंगे और खासलखास उम्मत (सुन्दरसाथ) सब दुनियां को अखण्ड मुक्ति देने का सवाब लेंगे।

अव्वल कह्या रसूलें, कजा होसी इत।
दीदार तब तिन होएसी, खोलें हक मारफत।। ११४ ।।

सबसे पहले रसूल साहेब ने आकर कहा था कि पारब्रह्म यहां आकर सबका न्याय करेंगे, तब सब दुनियां को उनका दर्शन होगा और वह मारफत (परमधाम का ज्ञान) सब में जाहिर करेंगे।

सिपारे उनईस में, लिख्या सूरज मारफत।
सो दिल रोसन महंमद का, होसी खोलें हकीकत।। ११५ ।।

रसूल साहब ने पहले ही कहा था कि श्री प्राणनाथजी न्यायाधीश बनकर हिन्दुस्तान पन्नाजी में न्याय करेंगे। वह श्री राजजी महाराज के दिल के भेद (मारफत ज्ञान) खोलेंगे, तब दुनियां को उनका दर्शन होगा।

ज्यादा हुआ फुरमाए से, जो कौल किया अव्वल।
सो जोड़ देखो आयतों हदीसों, ले दिल अर्स अकल।। ११६ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो मूल-मिलावा में वायदे किए थे। रसूल साहब ने जो फुरमाया था उससे ज्यादा काम हुआ। अब कुरान की आयतों से और मुहम्मद साहब की हदीसों को अपने अर्श दिल से विचार करके देखो, तब समझ में आएगा।

और भी देखो साहेदी, ए जो लिखी आयत।
ए जो किस्से कुरान के, आयतें सूरत।। ११७ ।।

और भी गवाही कुरान की आयतों से मिलती है। कुरान में जो किस्से आयतों और सूरतों में लिखे हैं, वह सब भविष्य में होने वाली बातें हैं, जिनको लोग बीती बातें बताते हैं।

Nijanand App

और सुकन बोलों नहीं, बिना हक फुरमाए।
सोई देखेगा मोमिन, जो दिल अर्स केहेलाए।। ११८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं श्री राजजी महाराज की वाणी के बिना और कुछ नहीं कहूंगी। इनको वह मोमिन ही देख सकेंगे, जिनके दिल में श्री राजजी महाराज अर्श करके बैठे हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, देखो अपनी निसबत।
असल तन अर्समें, जो हक की गैब खिलवत।। ११९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अपनी मूल परआतम को देखो जो परमधाम के अन्दर मूल-मिलावा में बैठी है।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ९१२ ।।

बाब असराफील का

तो असराफीलें आखिर, कुरान को गाया।
ऐसा बड़ा काम तो किया, जो आखिर को आया।। १ ।।

कुरान में लिखे अनुसार असराफील फरिश्ता श्री प्राणनाथजी के अन्दर आया और उसने कुलजम सरूप की वाणी को आकर जाहिर किया, वह आखिरत के समय आया, इसलिए इतना बड़ा काम किया।

तो रसूल ने अव्वल, ऐसा फुरमाया।
सो अपनी सरत पर, फरिस्ता आखिरी आया।। २ ।।

रसूल साहब ने कुरान में पहले से ही यह लिखा था कि आखिर के समय असराफील फरिश्ता आएगा। उसी के अनुसार असराफील फरिश्ता अपने समय पर आया है।

लिख्या फलाने सिपारे, ऐसी खुस न कबूं आवाज।
ए फरिस्ता कबूं न आइया, ए जो आया आज।। ३ ।।

कुरान के तीसवें सिपारे में लिखा है कि ऐसी सुन्दर वाणी जो असराफील आकर कहेगा, किसी ने नहीं सुनी होगी, क्योंकि इससे पहले फरिश्ता कभी नहीं आया जो अब आया है।

जो कौल फुरमाया अव्वल, सो सब आए के किया।
सूर बजाए दिल साफ से, सुकन सिर लिया।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो वायदे किए और मुहम्मद साहब ने कुरान में लिखे वह असराफील फरिश्ते ने आकर सब पूरे किए। असराफील ने कुलजम सरूप की वाणी का सूर फूंका और सबके दिल के संशय मिटा दिए। इस तरह से अपने धनी के हुकम को पूरा किया।

मगज जो मुसाफ का, जाहेर किया छिपाया।
गाया खुस आवाज सों, कौल सिर चढ़ाया।। ५ ।।

कुरान के अन्दर जो रहस्य छिपे थे, वह सब जाहिर किए और बड़ी मधुर आवाज से श्री कुलजम सरूप की वाणी को गाया और अपने धनी के हुकम को पूरा किया।

लिख्या चारों पैगंमर, सरत अपनी आए।
तिनों भी सिर हुकम, ल्याए हैं बजाए।। ६ ।।

कुरान में लिखे अनुसार ईसा, मूसा, दाऊद और मुहम्मद चारों पैगम्बर अपने वायदे के अनुसार श्री प्राणनाथजी के अन्दर आ गए हैं। उन्होंने भी खुदा के हुकम को पूरा किया।

Nijanand App

और सुकन बोलों नहीं, बिना हक फुरमाए।
सोई देखेगा मोमिन, जो दिल अर्स केहेलाए।। ११८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं श्री राजजी महाराज की वाणी के बिना और कुछ नहीं कहूंगी। इनको वह मोमिन ही देख सकेंगे, जिनके दिल में श्री राजजी महाराज अर्श करके बैठे हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, देखो अपनी निसबत।
असल तन अर्समें, जो हक की गैब खिलवत।। ११९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अपनी मूल परआतम को देखो जो परमधाम के अन्दर मूल-मिलावा में बैठी है।

|| प्रकरण || १६ || चौपाई || ९१२ ||

बाब असराफील का

तो असराफीलें आखिर, कुरान को गाया।
ऐसा बड़ा काम तो किया, जो आखिर को आया।। १ ।।

कुरान में लिखे अनुसार असराफील फरिश्ता श्री प्राणनाथजी के अन्दर आया और उसने कुलजम सरूप की वाणी को आकर जाहिर किया, वह आखिरत के समय आया, इसलिए इतना बड़ा काम किया।

तो रसूल ने अव्वल, ऐसा फुरमाया।
सो अपनी सरत पर, फरिस्ता आखिरी आया।। २ ।।

रसूल साहब ने कुरान में पहले से ही यह लिखा था कि आखिर के समय असराफील फरिश्ता आएगा। उसी के अनुसार असराफील फरिश्ता अपने समय पर आया है।

लिख्या फलाने सिपारे, ऐसी खुस न कबूं आवाज।
ए फरिस्ता कबूं न आइया, ए जो आया आज।। ३ ।।

कुरान के तीसवें सिपारे में लिखा है कि ऐसी सुन्दर वाणी जो असराफील आकर कहेगा, किसी ने नहीं सुनी होगी, क्योंकि इससे पहले फरिश्ता कभी नहीं आया जो अब आया है।

जो कौल फुरमाया अव्वल, सो सब आए के किया।
सूर बजाए दिल साफ से, सुकन सिर लिया।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो वायदे किए और मुहम्मद साहब ने कुरान में लिखे वह असराफील फरिश्ते ने आकर सब पूरे किए। असराफील ने कुलजम सरूप की वाणी का सूर फूंका और सबके दिल के संशय मिटा दिए। इस तरह से अपने धनी के हुकम को पूरा किया।

मगज जो मुसाफ का, जाहेर किया छिपाया।
गाया खुस आवाज सों, कौल सिर चढ़ाया।। ५ ।।

कुरान के अन्दर जो रहस्य छिपे थे, वह सब जाहिर किए और बड़ी मधुर आवाज से श्री कुलजम सरूप की वाणी को गाया और अपने धनी के हुकम को पूरा किया।

लिख्या चारों पैगंमर, सरत अपनी आए।
तिनों भी सिर हुकम, ल्याए हैं बजाए।। ६ ।।

कुरान में लिखे अनुसार ईसा, मूसा, दाऊद और मुहम्मद चारों पैगम्बर अपने वायदे के अनुसार श्री प्राणनाथजी के अन्दर आ गए हैं। उन्होंने भी खुदा के हुकम को पूरा किया।

Nijanand App

पढ़ें किताबें अपनी, पैगंमर तीन।
सो आए बीच आखिर, ए जो हकीकी दीन।। ७ ।।

यह तीन पैगम्बर (ईसा, मूसा और दाऊद) अपनी अंजील (रास), तौरेत (कलश) और जंबूर (प्रकाश) नई किताबों के साथ इमाम मेंहेंदी के अन्दर आए और सच्चे दीन निजानन्द सम्प्रदाय को जाहिर किया।

आया असराफील आखिर, महंमद मेंहेंदी साथ।
मुसाफ असराफील को, दिया अपने हाथ।। ८ ।।

आखिर को असराफील फरिश्ता इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के अन्दर आया, जिसने अन्दर बैठकर कुरान के सभी रहस्यों को खोल दिया।

हुआ सोई सरत पर, पैगंमरों मिलाप।
सो पढ़े किताबें फुरमाए से, अपनी ले आप।। ९ ।।

ईसा, मूसा, दाऊद और मुहम्मद सभी पैगम्बर अपने समय के अनुसार आकर इमाम मेंहेदी में मिले। अब वह अपनी-अपनी नई किताबों को रास, तौरेत, कलश, जंबूर और सनन्ध जाहिर कर रहे हैं।

एक तौरेत और अंजील, तीसरी जो जंबूर।
सो ए किया सब जाहेर, छिपा था जो नूर।। १० ।।

तौरेत, अंजील और जंबूर में जो रहस्य छिपे थे, वह इन नई किताबों में जाहिर किए।

एक मूसा और रूहअल्ला, तीसरा जो दाऊद।
ए तीनों पैगंमर, आए बीच जहूद।। ११ ।।

मूसा, ईसा और दाऊद तीनों यहूदियों में आए थे, क्योंकि उस समय मुसलमान धर्म नहीं था।

ए किताबें जो आखिरी, आखिरी रसूल ल्याए।
सो मगज मुसाफ जाहेर कर, असराफीलें गाए।। १२ ।।

आखिरी किताब (कुरान) रसूल साहब लाए, जिसके छिपे रहस्यों को अब असराफील फरिश्ता श्री प्राणनाथजी के तन से जाहिर कर रहा है।

सो साहेदी सिपारे चौबीस में, लिखियां ठौर ठौर।
हक हादी मोमिन बिना, जाने कौन और।। १३ ।।

इस बात की गवाही कुरान के चौबीसवें सिपारे में अलग-अलग ठिकाने पर लिखी है। इसे राजजी, श्री श्यामाजी और मोमिनों के अतिरिक्त और कौन जान सकता है?

मेयराज किन पर ना हुआ, पैगंमर आखिरी बिन।
और पैगंमर कई हुए, कई कहावें रोसन।। १४ ।।

आखिरी पैगम्बर रसूल साहब के बिना किसी को मेयराज (दर्शन) नहीं हुआ। पैगम्बर बहुत हुए हैं, जो कहते हैं कि हमें पैगम्बरी मिली है।

पर ए जो अर्स अजीम, रहें हमेसा मोमिन।
ए रूहें नजीकी हक के, इनों अर्स बीच तन।। १५ ।।

परन्तु परमधाम की बातें हमेशा मोमिनों के पास रहती हैं। यह श्री राजजी महाराज के नजदीकी हैं और इनके मूल तन परमधाम के हैं।

Nijanand App

महंमद की हदीस में, खबर दई भांत इन।
कह्या सिरदार रुहअल्ला, बीच अर्स रूहन।। १६ ।।

मुहम्मद साहब ने हदीस में इस तरह से लिखा है कि रूहों के बीच सिरदार रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी हैं।

बीच बका लाहूत में, जो रूहें मोमिन।
तीन सूरत महंमद की, सो कहे एक तन।। १७ ।।

अखण्ड परमधाम में जो रूह (मोमिन) हैं, वह और मुहम्मद की तीन सूरतें बसरी, मलकी और हकी सभी एकतन हैं।

अव्वल सूरत एक बसरी, पीछे सूरत मलकी।
कही तीसरी आखिर, सूरत जो हकी।। १८ ।।

सबसे पहले बसरी सूरत रसूल साहब आए। फिर मलकी सूरत श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) आए। आखिर में हकी सूरत श्री प्राणनाथजी की कही है।

ए तीनों बातून में एक हैं, जो देखिए हकीकत।
तब सबे सुध पाइए, होए बका मारफत।। १९ ।।

बसरी, मलकी और हकी बातून में एक ही स्वरूप हैं और यदि हकीकत में देखें तो इन तीनों से ही अखण्ड परमधाम की मारफत का ज्ञान मिलता है।

ए सबे बीच अर्स के, कहावें वाहेदत।
एक तन रूहें अर्स की, हक हादी सूरत।। २० ।।

यह तीनों और मोमिन परमधाम में वाहेदत (एकतन) हैं। यह तीनों सूरतें और मोमिन श्री राजजी महाराज की ही अंगनाएं हैं।

और न कोई पोहोंचिया, बड़े अर्स में इत।
आगे जाए जबराईल ना सक्या, कहे पर मेरे जलत।। २१ ।।

इस बड़े परमधाम में दूसरा कोई नहीं पहुंचा। यहां तक कि जबराईल भी नहीं जा सका। कहता है मेरे पर जलते हैं।

और हुए कई फरिस्ते, और कई पैगंमर।
जिन किनों पाई बुजरकी, ना जबराईल बिगर।। २२ ।।

दुनियां में और भी कई देवी-देवता, पैगम्बर हुए हैं, परन्तु जबराईल फरिश्ते के बिना बुजरकी किसी को नहीं मिली।

और सबे तावे कहे, जबराईल के।
जिंन देव या आदमी, या बुजरक फरिस्ते।। २३ ।।

यह सभी देवी, देवता, पैगम्बर, आदमी, और प्रेत जबराईल के अधीन हैं।

खास उमत महंमद की, जो कही अर्स रबानी।
दूजी गिरो फरिस्तन की, जो कही नूर मकानी।। २४ ।।

श्री प्राणनाथजी की खास उमत को परमधाम की ब्रह्मसृष्टि कहते हैं। दूसरी जमात ईश्वरीसृष्टि की है, जो अक्षरधाम की है।

Nijanand App

और बुजरक फरिस्ता आखिरी, कह्या जो असराफील।
किए जाहेर मगज मुसाफ के, सकसुभे न आड़ी खील॥ २५ ॥

सबसे बड़ा आखिरी बुजरक फरिश्ता असराफील है, जिसने कुरान के सभी छिपे भेदों को जाहिर कर दिया और सुई की नोंक बराबर भी संशय नहीं रखा।

असराफीलें बीच अर्स के, सब हकीकत लई।
सो ए मगज मुसाफ के, गाए के जाहेर कही॥ २६ ॥

असराफील फरिश्ता ने परमधाम की सब हकीकत लेकर कुरान के छिपे रहस्य को खोलकर जाहिर कर दिया।

ना तो जबराईल महंमद पर, कलाम अल्ला ले आया।
पर माएना छिपा जो मगज, सो असराफीलें पाया॥ २७ ॥

वरना जबराईल फरिश्ता मुहम्मद के पास अल्लाह कलाम (कुरान) का ज्ञान लेकर आया था और वह भी कुरान के छिपे रहस्यों को जाहिर नहीं कर सका, जिनको आखिर में असराफील ने आकर श्री प्राणनाथजी के अन्दर बैठकर जाहिर किए।

देखो पैगंमर आखिरी, रसूल केहेलाया।
सो असराफीलें गाए के, बातून सब बताया॥ २८ ॥

अब देखो आखिरी पैगम्बर मुहम्मद साहब जो कुरान लाए वह रसूल कहलाए। अब उस कुरान के बातूनी रहस्यों को असराफील फरिश्ते ने श्री प्राणनाथजी के तन में बैठ कर जाहिर किया।

कह्या पैगंमर आखिरी, असराफील भी आखिर।
ए जुदे क्यों होवहीं, देखो सहूर कर॥ २९ ॥

मुहम्मद साहब को आखिरी पैगम्बर कहा है और असराफील को आखिरी फरिश्ता। अब विचार करके देखो। दोनों अलग कैसे हो सकते हैं? यह दोनों ही श्री प्राणनाथजी के अन्दर आकर बैठे हैं।

असराफील फिरवल्या, अर्स अजीम के माहें।
और जबराईल जबरूत की, हद छोड़ी नाहें॥ ३० ॥

असराफील फरिश्ता परमधाम के अन्दर सब जगह घूमा, जबकि जबराईल फरिश्ता अक्षरधाम की हद को नहीं छोड़ सका।

एक नूर और नूरतजल्ला, कहे ठौर दोए।
ए नाहीं जुदे वाहेदत से, हैं बका बीच सोए॥ ३१ ॥

एक अक्षरधाम दूसरा परमधाम, दोनों अखण्ड धाम बताए हैं। यह परमधाम की वाहेदत श्री राजजी से अलग नहीं है। दोनों ही अखण्ड हैं।

एक जाहेर आम खास ज्यों, और अंदर खिलवत।
ए सोई जानें हक अर्स की, जाए खुली मारफत॥ ३२ ॥

एक जाहिरी में आम खल्क जीवसृष्टि और दूसरी खास ईश्वरीसृष्टि है। तीसरी परमधाम के अन्दर रहने वाली ब्रह्मसृष्टि है। इन तीनों में से जिनको मारफत का ज्ञान मिल गया है, वह ही श्री राजजी महाराज के अर्श की सब हकीकत जानते हैं।

Nijanand App

जिनों खुले मगज मुसाफ के, माएने हकीकत।
सकसुभे तिन को नहीं, जिनों हुई हक हिदायत।। ३३ ।।

जिनको श्री राजजी महाराज की कुलजम सरूप वाणी खुल गई है, उन्हें ही कुरान की हकीकत के भेदों का रहस्य मिल गया और उनके अन्दर किसी प्रकार के संशय नहीं रह गए।

सकसुभे क्योंए भाजे नहीं, हक इलम बिन।
ना तो मिलो सब आदमी, या देव फरिस्ते जिंन।। ३४ ।।

दुनियां के आदमी, देवी-देवता और भूत-प्रेत सभी क्यों न मिल जाएं, तो भी जागृत बुद्धि की कुलजम सरूप की वाणी के बिना उनके संशय नहीं मिट सकते।

असराफील के अमल में, सकसुभे नहीं कोए।
कयामत फल पाया इतहीं, मगज मुसाफी सोए।। ३५ ।।

श्री प्राणनाथजी के आने से ही सबके संशय मिट गए और कुरान के सभी भेद खुल गए। इनसे ही सभी को कयामत का फल मिला।

आखिर फल जो पावहीं, कहे सोई कुरान।
दिन होवे तिन मारफत, हक अर्स पेहेचान।। ३६ ।।

श्री प्राणनाथजी की कुलजम सरूप की वाणी से श्री राजजी महाराज और परमधाम की पहचान हो जाएगी और आखिर में ब्रह्माण्ड को मुक्ति प्रदान करने का फल भी इन्हीं से मिलेगा। ऐसा कुरान में कहा है।

तो कह्या असराफील, आवसी आखिर।
सो फल लैलत कदर का, पाया तीसरे फजर।। ३७ ।।

कुरान में कहा है कि असराफील फरिश्ता आखिर में आएगा और मारफत सागर के ज्ञान से सवेरा करके अज्ञानता के अन्धकार को मिटाकर सबको अखण्ड मुक्ति का फल देगा।

लिखे सबों के मरातबे, ए जो बीच फुरकान।
सो ए जाने रूहें मोमिन, या जानें हादी सुभान।। ३८ ।।

कुरान में इस तरह से सबके अलग-अलग दर्जे लिखे हैं, जिनको या तो मोमिन जानते हैं या श्री प्राणनाथजी महाराज जानते हैं।

ए जो गिरो फरिस्तन की, जाको नूर मकान।
रूहें बीच नूरतजल्ला, सूरत रेहेमान।। ३९ ।।

यह जो ईश्वरीसृष्टि कही है, इसका घर अक्षरधाम है और परमधाम के अन्दर श्री राजजी महाराज की अंगना रूहें रहती हैं।

जबराईल आइया, सबों पैगंमरों पर।
सो ए रह्या बीच नूर के, ना चल्या महंमद बराबर।। ४० ।।

जबराईल फरिश्ता सब पैगम्बरों का सिरदार है। यह अक्षरधाम की हद तक आया। मुहम्मद साहब के साथ परमधाम नहीं आ सका।

Nijanand App

और कोई अर्स अजीममें, पोहोंच ना सकत।
जित हक हादी रूहें, महंमद तीन सूरत।। ४१ ।।

परमधाम के अन्दर श्री राजजी, श्री श्यामाजी, रूहें और बसरी, मलकी और हकी तीनों सूरतों के अतिरिक्त और दूसरा कोई नहीं पहुंच सकता।

और मोमिन बोल ना बोलहीं, एक मेयराज बिन।
जिनपे इलम हक का, लदुन्नी रोसन।। ४२ ।।

मोमिनों के पास ही कुल्जम सरूप की वाणी का ज्ञान है, जिससे उनको परमधाम की पूरी पहचान है, इसलिए अब इस वाणी के बिना दूसरी बात वह नहीं करेंगे।

सोई अर्स हक का, हादी रूहों वतन।
इत हक हादी रूहों सूरत, अर्स के तन।। ४३ ।।

जो श्री श्यामाजी और रूहों का घर है, वही श्री राजजी महाराज का घर है। यहां श्री राजश्यामाजी और रूहों के स्वरूप विराजे हैं।

फरिस्ते अर्स सूरत नहीं, इनों जुदी असल।
पैदास कही फरिस्तन की, पेड़ से नकल।। ४४ ।।

ईश्वरीसृष्टि के तन अक्षरधाम में नहीं हैं। इनकी पैदाइश ही अलग है। ईश्वरीसृष्टि की पैदाइश अक्षर की सुरता से हुई है।

रूहें असल हक कदमों, है अर्स में सूरत।
तो कहे हक हादी रूहें, अर्स की वाहेदत।। ४५ ।।

ब्रह्मसृष्टि के मूल तन श्री राजजी महाराज के चरणों में बैठे हैं, इसलिए श्री राजश्यामाजी और रूहों को अर्श की वाहेदत, एकतन और एकदिल कहा है।

बीच अर्स अजीम के, सूरत बका हक।
मोमिन हक इलम से, चीन्हें मुतलक।। ४६ ।।

परमधाम के अन्दर श्री राजजी महाराज साक्षात् विराजमान हैं। कुल्जम सरूप की वाणी से मोमिन श्री राजजी को पहचानते हैं।

मोमिन अर्स रूहों जैसा, कोई नहीं बुजरक।
हक इलम यों केहेवहीं, इनमें नाहीं सक।। ४७ ।।

परमधाम के मोमिनों जैसी किसी की महिमा नहीं है, ऐसा कुल्जम सरूप की वाणी बतलाती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

लिख्या अमेतसालून में, बड़ाई रूहन।
देखो इत दिल देय के, निसां करो मोमिन।। ४८ ।।

कुरान के अमेत सालून प्रकरण में रूहों की बड़ाई लिखी है। उसको दिल से देखकर, मोमिनो! अपनी तसल्ली कर लो।

Nijanand App

हक हादी वाहेदत बीच में, कहे जो मोमिन।
इलम कहे इनों सिफतें, और नाहीं सुकन।। ४९ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी और मोमिनों के बीच एकदिली है, जिसे वाहेदत करके लिखा है, इसलिए कुरान में मोमिनों की सिफत लिखी है और कोई दूसरी बात नहीं है।

सोई कहिए अर्स वाहेदत, जो हैं हक की जात।
हक हादी रूहों बीच में, कोई और न समात।। ५० ।।

श्री राजजी महाराज की वाहेदत उन्हीं को कहा है जो उनकी अंगना है। श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सखियों के बीच कोई दूसरा आ नहीं सकता।

पातसाही एक हक बिना, और नहीं कोई कित।
दूजा हुकम कादर का, कई करत कुदरत।। ५१ ।।

परमधाम के अन्दर श्री राजजी महाराज की साहेबी के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। दूसरा श्री राजजी महाराज का हुकम ही है, जिससे अक्षर ब्रह्म कई ब्रह्माण्ड बनाते, मिटाते रहते हैं।

सो करें जाहेर हक की, कई भांतों सिफत।
फानी छल झूठा नजरों, हुकमें देखत।। ५२ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम ही कई तरह से श्री राजजी महाराज की महिमा गाता है और एक पल में करोड़ों ब्रह्माण्ड झूठे बनाता-मिटाता रहता है।

महंमद रूहों को देखाए के, करसी सब फना।
आंखां खोले ज्यों उड़ जाए, नींद का सुपना।। ५३ ।।

श्री श्यामाजी महारानी और रूहों को यह झूठा खेल दिखाकर श्री राजजी महाराज इसे नष्ट कर देंगे। ठीक उसी तरह से जैसे नींद से जागने पर स्वप्न टूट जाता है।

चौदे तबक की दुनियां, और जिमी अंबर।
ऐसे खेल पैदा फना, होवें कई नूर नजर।। ५४ ।।

चौदह लोक, जमीन और आसमान सहित कई खेल अक्षर की नजर के सामने हुकम बनाता-मिटाता रहता है।

फरिस्ते देव जिंन आदमी, ए जो चौदे तबक।
पैदा फना हो जात हैं, नूर के पलक।। ५५ ।।

अक्षर ब्रह्म के एक पल के अन्दर फरिश्ते, देवी, देवता, भूत, प्रेत, आदमी तथा चौदह तबकों के ब्रह्माण्ड बनते-मिटते रहते हैं।

कायम एक वाहेदत, हक की पातसाही।
दूजी काहूं कितहूं, जरा कही न जाई।। ५६ ।।

केवल एक परमधाम अखण्ड है, जहां श्री राजजी महाराज की साहेबी है। दूसरा कहीं कुछ भी नहीं है।

Nijanand App

देखाया रूहन को, देखो नौमें सिपारे।
ए हक हादी रूहें निसबती, जो बन्दे अपने प्यारे।। ५७ ।।

कुरान के नवें सिपारे में लिखा है कि श्री राजजी महाराज ने रूहों को संसार का खेल दिखाया है। यह श्री श्यामाजी और रूहें श्री राजजी के अपने प्यारे अंग हैं।

हक बिना जो कछु कहे, सो होवे मुसरक।
और जरा नहीं कहूं कितहूं, यों कहे इलम हक।। ५८ ।।

इस खेल में आकर अपने प्यारे श्री राजजी महाराज के बिना यदि कोई मोमिन किसी और को परमात्मा बनाता है, तो वह खेल में बेइमान है, क्योंकि कुलजम सरूप की वाणी के अनुसार श्री राजजी महाराज के बिना कोई और कुछ भी नहीं है।

हुकमें देत देखाई, कुदरत पसारा।
ए देखत सब पैदा फना, हक न्यारे से न्यारा।। ५९ ।।

यह सारा झूठा ब्रह्माण्ड श्री राजजी महाराज के हुकम का पसारा दिखाई देता है। जो बनता-मिटता है, जबकि श्री राजजी महाराज सदा से ही इससे अलग हैं।

सिपारे ओगनतीस में, हकें लिख्या है जेह।
सो देखो नीके कर, अपना दिल देय।। ६० ।।

कुरान के उन्तीसवें सिपारे में श्री राजजी महाराज ने लिखा है, उसे ध्यान देकर अच्छी तरह से देखो।

जब आई आयत हकीकत, तब पीछली करी मनसूक।
ए हुकम तोड़े सो क्यों देखे, जो फोड़ जमात हुए टूक टूक।। ६१ ।।

जब श्री राजजी महाराज की हकीकत और मारफत का ज्ञान कुलजम सरूप की वाणी आ गई, तब पिछली किताब कुरान को परिवर्तन कर दिया। जिसको श्री राजजी महाराज की वाणी पर यकीन नहीं आया, वह इन रहस्यों को कैसे समझे ? इसलिए स्वामीजी से जुदा होकर बिहारीजी ने अलग चाकला पन्थ चलाया।

हादी देखाए भी तो देखे, जो दिल होए आकीन।
सो सखत बखत ऐसा हुआ, जो छोड़ फिरे सब दीन।। ६२ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज तो पहचान कराना भी चाहते हैं, परन्तु वह उनको तब समझे जब उनके दिल में वाणी पर यकीन हो। अब ऐसा कठिन समय आ गया है कि सबने दीन-धर्म को छोड़ दिया है।

न मानो सो देखियो, अगले अमल सरे दीन।
मनसूख लिख्या सबन को, जो गए छोड़ आकीन।। ६३ ।।

यदि किसी को इस बात पर विश्वास न हो, तो देखो। कुरान के पहले नियमों को अनावश्यक बताकर रद्द कर दिया गया, क्योंकि लोगों को कुरान की सच्चाई पर विश्वास नहीं रहा।

लिख्या सिपारे तीसरे, होसी खोलें हकीकत।
एक दीन होसी सबे, कही इन सरत।। ६४ ।।

कुरान के तीसरे सिपारे में लिखा है कि जब हकीकत के सारे रहस्य आखिरत को खुल जाएंगे, तो सब दुनियां एक दीन निजानन्द सम्प्रदाय में आ जाएगी।

Nijanand App

दुनी राह न पावे रात की, जाहेर फना नाबूद।
ऊग्या दिन मारफत का, सबों हुआ मकसूद।। ६५ ।।

मिटने वाले संसार के लोगों को अज्ञानता के अन्धकार के कारण सच्चा रास्ता नहीं मिलता। जब मारफत के ज्ञान कुलजम सरूप की वाणी की पहचान सबको हो जाएगी, तब सबकी इच्छा पूर्ण हो जाएगी।

दूर किए तारीकी रात के, सितारा करता था मैं मैं।
डुबाया मारफत सूरजें, नाबूद डूब्या मैं मैं सें।। ६६ ।।

अज्ञानता के अन्धकार में धर्म-सम्प्रदायों के आचार्य लोग अपने अहंकार में डूबे थे और अपने को ही सबसे बड़ा मानते थे। श्री कुलजम सरूप की वाणी जो मारफत के सूर्य का ज्ञान है, उसने सबके अहंकार को तोड़कर समाप्त कर दिया।

सो सितारा सरीयत का, करता था रात की रोसन।
सो नाबूद हुआ देख सूरज, ऊगे मारफत दिन।। ६७ ।।

अज्ञानता की रात्रि के अन्धकार में जो कर्मकाण्ड (शरीयत) का ज्ञान चमक रहा था, वह कुलजम सरूप की वाणी जो अखण्ड सूर्य का ज्ञान है, देखकर नष्ट हो गया।

अर्स बका देखाए के, करसी सबों हैयात।
असराफील खोल मुसाफ, करसी सिफात।। ६८ ।।

असराफील फरिश्ते ने कुरान के सभी रहस्यों को खोलकर अखण्ड परमधाम की पहचान कराई। अब सबके दिलों को कुलजम सरूप की वाणी से निर्मल करके अखण्ड बहिश्तों में कायमी देगा।

कलाम अल्ला का बातून, देखो हक इलम ले।
महंमद सिफायत रूहों को, इनों करसी विध ए।। ६९ ।।

कुरान के बातूनी रहस्यों को कुलजम सरूप साहब की वाणी से समझो। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी महाराज मोमिनों को इस तरह से निःसन्देह करके निर्मल करेंगे।

चारों किताबों के माएने, और माएने चारों वेद।
लिख्या सबोंमें जुदा जुदा, कयामत एकै भेद।। ७० ।।

चारों किताबों और चारों वेदों में अलग-अलग ठिकाने पर अलग-अलग तरीके से कयामत के जाहिर होने की बातें लिखी हैं।

किताबें दुनियां मिने, कहूं केती गिनती अनेक।
तिन सबोंमें आखिरी, कलाम अल्ला विसेक।। ७१ ।।

दुनियां में बहुत धर्मग्रन्थ हैं, जिनकी गिनती नहीं बताई जा सकती, परन्तु सबमें कुलजम सरूप साहब की वाणी ही सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि यह श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि की वाणी है।

तिन सबों किताबों बीचमें, विध विध लिखी कयामत।
तिन सबों जिकर करी, आखिर बड़ी सिफत।। ७२ ।।

इन सब धर्मग्रन्थों ने कयामत की तरह-तरह से बातें लिखी हैं। सबके बीच आखिर में पारब्रह्म आकर सबको अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे। इसकी महिमा गाई है।

Nijanand App

असराफीलें मुसाफ का, किया जाहेर खुलासा।
तो हुआ ए नजीकी, खासों में खासा।।७३ ।।

असराफील फरिश्ते ने कुरान और सभी धर्मग्रन्थों की भविष्य की वाणी को जाहिर कर दिया, इसलिए यह जागृत बुद्धि का फरिश्ता सब फरिश्तों से श्रेष्ठ खुदा के नजदीक हो गया।

जिंन देव या आदमी, या जिमी आसमान फरिस्ते।
तीन सूरत महंमद की, है हादी सिर सब के।।७४ ।।

भूत-प्रेत, देवी-देवता और आदमी या आसमान-जमीन के रहने वाले तथा बसरी, मलकी और हकी सूरत इन सबके मालिक श्री प्राणनाथजी महाराज हैं।

या जिमीन का तिनका, या बड़ा दरखत।
कही सिर सबन के, महंमद हिदायत।।७५ ।।

संसार में जमीन का तिनका, छोटा या बड़े से बड़ा वृक्ष हो, यह सब श्री राजजी महाराज के हुकम के अधीन हैं।

जमाना खाली नहीं, बिना महंमदी कोए।
करत रोसन सबन में, चिराग नबी की सोए।।७६ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम के स्वरूप रसूल साहब, मल्की स्वरूप श्री श्यामाजी महारानी (श्री देवचन्द्रजी) बीच में और हकी स्वरूप इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज के इन तीनों स्वरूपों से ही सारे संसार को ज्ञान मिल रहा है।

इन विध केहेवें हदीसें, और हक फुरमान।
ले मगज माएने मोमिन, सब विध करें पेहेचान।।७७ ।।

इस तरह से मुहम्मद साहब की हदीसें और कुरान कहता है कि इनके जो रहस्य सब तरह से समझेंगे, वह मोमिन हैं (उनके पास जागृत बुद्धि का ज्ञान होगा)।

लिख्या आयतों सूरतों, और हदीसों माहें।
हादी इन महंमद बिना, और क्रोई किन सिर नाहें।।७८ ।।

आयतों, हदीसों और सूरतों में लिखा है कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के बिना और कोई कहीं नहीं है।

अव्वल कह्या महंमद, और बीच आखिर।
खाली नहीं बिना खलीफे, महंमद के बिगर।।७९ ।।

इसलिए शुरू में, बीच में और आखिर में बसरी, मलकी और हकी सूरत के ज्ञान की ही महिमा गाई है। इन तीन के बिना और दूसरा कोई भी सतगुरु नहीं बना है।

यों लिख्या बीच हदीस के, जो मैं काम करता हों अब।
सो मैं आखिर आए के, तमाम करोंगा सब।।८० ।।

मुहम्मद साहब हदीस में कहते हैं कि मैं अब जो काम कर रहा हूं और जिन कामों के लिए वायदा कर रहा हूं, उनको आखिर में आकर सब पूरा करूंगा।

Nijanand App

मैं आऊंगा यारों वास्ते, खोलों नजूम मेरा मैं।
मेरे कूच नजूमी कोई ना रह्या, मेरा नजूम खुले मुझ से।।८१ ।।

मैं अपने यारों के वास्ते आऊंगा और अपनी छिपी बातों का रहस्य स्वयं आकर खोलूंगा। मेरे संसार से चले जाने के बाद मेरे अतिरिक्त इन रहस्यों कोई खोल नहीं सकेगा।

मोमिन जिन जिन मुलकों, जुदी जुदी जुबां ले आए।
ताही जुबां से तिन को, महंमद दें समझाए।।८२ ।।

मोमिन जिन जिन प्रान्तों में आए हैं, वह अलग-अलग भाषाएं बोलते हैं। श्री प्राणनाथजी महाराज उनकी भाषा में उन्हें समझाएंगे।

नूर महंमद कह्या हक का, दुनी सब महंमद नूर।
जरा एक महंमद बिना, नहीं काहूं जहूर।।८३ ।।

रसूल मुहम्मद भी श्री राजजी महाराज के अंग का नूर हैं। सारी दुनियां इनके हुकम से बनी है, इसलिए यह जाहिर हो गया कि मुहम्मद के बिना कहीं कुछ नहीं है।

कही सूरत महंमद की, खावंद जमाने तीन।
इन तीनों सिर खिताब, गिरो रबानी हकीकी दीन।।८४ ।।

मुहम्मद साहब की तीन सूरतें आखिरी जमाने के खाविंद हैं। इन तीनों सूरतों के सिर मोमिनों को सच्चा ज्ञान देने का अधिकार है, खिताब है।

बसरी मलकी और हकी, ए तीनों एक सूरत।
ए तीनों महंमद की, बीच अर्स वाहेदत।।८५ ।।

बसरी, मल्की और हकी तीनों एक स्वरूप हैं और परमधाम के बीच एकदिल हैं।

और गिरो रूहें फरिस्ते, दोऊ कही रबानी।
मांहें तीन सूरत महंमद की, जिन मुरग बूंदें लई पेहेचानी।।८६।।

ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि दो खुदाई जमातें हैं। इनके वास्ते ही बसरी, मल्की और हकी मुहम्मद की तीन सूरतें आईं हैं। वह आकर इन मोमिनों को ढूंढ़ लेंगी (जो मुर्ग श्री श्यामाजी महारानी के पर झटकने से बूंदें गिरी थीं)। जिन तनों में ब्रह्मसृष्टि आई हैं, उन्हें मोमिन कहते हैं।

ए तीनों सूरत दोऊ गिरो मिने, कहे जो सिरदार।
ए सब हक इलमें, कर देखो विचार।।८७ ।।

बसरी, मल्की और हकी सूरत इन दोनों गिरोह ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि में सिरदार मानी गई हैं। इन सब बातों का कुलजम सरूप की वाणी से विचार करके देख लो।

ए दूजा खेल जो दुनियां, बीच जिमी आसमान।
ए तो नाहीं कछुए, एक जरे भी समान।।८८ ।।

इन सबको छोड़कर जमीन या आसमान की जो भी चौदह तबकों की दुनियां है, उसका कुछ भी अस्तित्व नहीं है (रूप नहीं है)।

Nijanand App

लिख्या चौथे सिपारे, ए चौदे तबक कहे जे।
ए जरे जेता नहीं, दो टूक होवें जिनके।। ८९ ।।

कुरान के चौथे सिपारे में लिखा है कि यह चौदह तबक का ब्रह्माण्ड इतना भी नहीं है कि इसके दो टुकड़े किए जा सकें।

रात अमल सरीयत का, चल्या लदुन्नी बिन।
हक इलमें रात मेट के, किया जाहेर बका दिन।। ९० ।।

अज्ञान के अन्धकार में कर्मकाण्ड (शरीयत) पर आधारित धर्म, पन्थ और सम्प्रदाय चलते रहे। उनके पास जागृत बुद्धि की तारतम वाणी का ज्ञान नहीं था। अब कुल्जम सरूप की वाणी से इनकी अज्ञानता का अन्धकार मिट गया और अखण्ड परमधाम का सूर्य मारफत ज्ञान दे दिया, जिससे सबको अखण्ड परमधाम की पहचान हो गई।

कह्या दिल मंहमद का, सूरज मारफत।
हकीकत खोले पीछे, होसी हक लज्जत।। ९१ ।।

आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के दिल को मारफत का सूर्य कहा है। कुल्जम सरूप की वाणी की हकीकत जाहिर करने पर श्री राजजी महाराज के सुखों का आनन्द आएगा।

एही लदुन्नी हक इलम, करसी फजर।
देखसी मोमिन अर्स को, रूह की खोल नजर।। ९२ ।।

इस कुल्जम सरूप की वाणी से अज्ञानता का अन्धकार मिट कर सवेरा हो जाएगा और मोमिन अपनी आत्मदृष्टि से परमधाम को देखने लगेंगे।

ए सिपारे उनईसमें, लिखी हकीकत।
सो आए देखो नीके कर, जो कह्या दिन मारफत।। ९३ ।।

मारफत के ज्ञान की हकीकत कुरान के उन्नीसवें सिपारे में लिखी है। उसे अच्छी तरह देखो और समझो।

दरम्यान जो साया कही, आगे ऊग्या दिन।
सूरज दिल महंमद का, हुआ नूर रोसन।। ९४ ।।

मारफत सागर सम्वत् १७४८ में उतरा। इसी को श्री प्राणनाथजी के दिल का सूर्य कहा है, जिससे संसार में उजाला हो गया। इससे पहले सौ साल की रात कही है।

ए जो चल्या बीच रात के, अमल सरीयत।
सो कहे दिल मजाजी, जो पैदा जुलमत।। ९५ ।।

अज्ञानता के अन्धकार की रात्रि में कर्मकाण्ड (शरीयत) पर आधारित जो धर्म चले, वह सब निराकार से पैदा होने वालों में कहलाए, जिनके दिल झूठे हैं।

अर्स दिल मोमिन कहे, सो दिल हकीकी जेता।
रूहें फिरस्ते अर्स से, इजने उतरे तेता।। ९६ ।।

मोमिनों के दिल को ही अर्श कहा है और वही हकीकी दिल है। ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि परमधाम से और अक्षरधाम से श्री राजजी महाराज के हुकम से उतरी हैं। उनके दिल को ही हकीकी कहा है।

Nijanand App

रूहें गिरो दरगाह बीच, अर्स अजीम जेताई।
एही अर्स दिल हकीकी, महंमद के भाई।। ९७ ।।

मोमिनों की जमात परमधाम में रहती है। रसूल साहब ने इनके दिल को हकीकी कहा है और अपना भाई कहा है।

एही बीच वाहेदत के, खिलवत खुदाई।
जो हक हादी रूहन की, नूर बका पातसाई।। ९८ ।।

यह मोमिन श्री राजजी महाराज की खिलवत के एकतन हैं। यही वाहेदत श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहों की अखण्ड परमधाम में श्री राजजी की साहेबी हैं, क्योंकि श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें परमधाम में एकतन और एकदिल हैं।

अव्वल हादी रूहनसों, कौल हैं हक के।
सो ए लिखी रदबदलें, कहें आयतें हदीसें ए।। ९९ ।।

खेल में आने से पहले मूल-मिलावा में श्री श्यामाजी महारानी और रूहों से इश्क का वार्तालाप हुआ और उस समय श्री राजजी ने खेल में आने का वायदा किया। वह बातें कुरान की आयतों और मुहम्मद साहब की हदीसों में लिखी हैं।

रूहें हमेसा रेहेत हैं, अर्स बका दरगाह मिने।
ए रदबदल हकसों, करी उतरते तिने।। १०० ।।

परमधाम में रूहें हमेशा रहती हैं। खेल में उतरने से पहले उन्होंने ही इश्क का वार्तालाप श्री राजजी से किया।

अर्स अजीम नूर बिलंद से, रूहें उतरीं जब।
ए माएने आयत हदीस में, लिख भेज्या है तब।। १०१ ।।

जब परमधाम से रूहें खेल में उतरीं, तब श्री राजजी महाराज ने कुरान की आयतों में और हदीसों में हकीकत लिखकर भेजी।

हक हादी रूहन सों, जो हुई मुकाबिल।
सो सुकन सब कुरानमें, लिखी रदबदल।। १०२ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहों के बीच जो वार्तालाप हुआ, उन्हीं बातों को ही कुरान में रद बदल लिखा है।

हकें लिख भेजी साथ हादी के, रूहों ऊपर इसारत।
और कोई समझे नहीं, बिना हक वाहेदत।। १०३ ।।

श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी महारानी के हाथ रूहों के वास्ते यह बातें इशारों में लिखकर भेजीं, जिसे रूह मोमिनों के बिना और कोई समझ नहीं पाता।

ए समझे कहिए तिन को, जो कोई दूसरा होए।
ए बारीक बातें वाहेदत की, केहेते बंधाए सोए।। १०४ ।।

दूसरा कोई तभी समझे जो उस समय कोई होता। यह परमधाम की खास बातें हैं। बिना समझ के बातें करने से उलटा बंध जाते हैं।

Nijanand App

ए सुकन बिना समझे, केहेते होए मुसरक।
ए बारीक बातें खिलवत की, अर्स की गुझ हक।। १०५ ।।

जो परमधाम की इश्क रब्द की मूल-मिलावा की बातें बिना समझे करता है, वह बेईमान है, क्योंकि यह परमधाम की बातें गुझ (गुप्त) हैं। हक के दिल की गुझ (गुप्त) बातें हैं।

ए बातून माएने हक के, जानें हादी मोमिन।
होए ना और किन को, बिना अर्स के तन।। १०६ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल की गुझ (गुप्त) बातें श्री श्यामाजी और मोमिन ही जानते हैं। मोमिनों और श्री श्यामाजी के बिना इन बातों की जानकारी और किसी को नहीं है।

दूजा तो कहूं जरा नहीं, कहिए किन की बिध बात।
कहें वेद कतेब और हदीसें, कछू नाहीं बिना हक जात।। १०७ ।।

दूसरा तो कहीं कुछ है ही नहीं, तो यह कौन और किस तरह की बातें कह सकते हैं? वेद, केतब और हदीसों में साफ लिखा है कि श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी और मोमिनों के बिना और कुछ नहीं है।

ए जो खुदी बीच दुनी के, मैं तैं करत।
ए वेद कतेबों देखिया, जरा न काहूं कित।। १०८ ।।

संसार के ज्ञानी अगुए जो अहंकार में 'मैं' और 'तू' की बातें करते हैं। वेद-कतेब में साफ लिखा है कि इनका कोई कहीं अस्तित्व नहीं है।

लिख्या वेद कतेब में, ए चौदे तबक कहे जे।
बंझापूत सींग खरगोस, बोहोत भांतों कह्या ए।। १०९ ।।

यह चौदह तबकों के ब्रह्माण्ड को वेद-कतेब में बांझ का पूत, खरगोश (ससला) के सिर पर सींग और कई तरह से कहा है, अर्थात् जो होते ही नहीं।

बसरी मलकी और हकी, ए कही सूरत तीन।
इनों किया हक इलम से, महंमद बेसक दीन।। ११० ।।

बसरी, मलकी और हकी मुहम्मद की तीन सूरतें कही हैं। इन्होंने ही जागृत बुद्धि के ज्ञान से संशय रहित दीन निजानन्द सम्प्रदाय स्थापित किया।

और भी करी बेसक, ए जो कही सुंनत जमात।
इनों लई सब दिलमें, बेसक अर्स बिसात।। १११ ।।

सुन्नत जमात जो मोमिन कहलाते हैं, इनके भी संशय इन्हीं तीन सूरतों ने मिटाए, जिससे मोमिनों ने अखण्ड परमधाम की न्यामत कुलजम सरूप की वाणी को अपने दिल में धारण किया।

तब हुआ रूहन का, हक अर्स कलूब।
याही हक अर्समें, रुह नजरों मिले मेहेबूब।। ११२ ।।

संशय रहित होने के बाद ही मोमिनों के दिल को अर्श कहा है और इनके अर्श दिल में ही रूहों ने अपने महबूब श्री राजजी महाराज का दर्शन किया।

Nijanand App

तब सुंनत जमात की, बातें सबे बनि आई।
महंमद की तीन सूरतें, करी पूरी पनाही।। ११३ ।।

इस तरह से मुहम्मद की तीन सूरतों ने मोमिनों को अपनी शरण में लेकर उनकी सब इच्छाओं को पूरा कर दिया।

अव्वल रोसन रसूल, रूहअल्ला आखिर।
गिरो पाक करी बीच इमामें, दुनी सचराचर।। ११४ ।।

सबसे पहले रसूल साहब ने आकर दुनियां को परमधाम का ज्ञान दिया। उसके बाद रूह अल्लाह श्री श्यामाजी महारानी ने आकर रूहों को ज्ञान दिया। आखिर में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने जागृत बुद्धि के ज्ञान से मोमिनों के संशय मिटाकर निर्मल किया और दुनियां के चर-अचर जीवों को बहिश्तों में कायमी दी।

तीन सूरत महंमद की, मिल फुरमाया किया।
भिस्त खोल दुनी फानी को, कायम सुख दिया।। ११५ ।।

मुहम्मद की तीन सूरतों ने मिलकर श्री राजजी महाराज के सभी वायदे पूरे किए। इन्होंने बहिश्तों के दरवाजे खोलकर नाशवान दुनियां को अखण्ड मुक्ति प्रदान की।

चौदे तबक के बीचमें, तरफ न पाई किन।
हादी गिरो अर्स बीचमें, बैठाए इलमें कर रोसन।। ११६ ।।

जिस परमधाम की, दुनियां के चौदह तबक वालों को जानकारी नहीं थी, उन दुनियां वालों को कुलजम सरूप की वाणी से पहचान कराकर जाहिर कर दिया कि मोमिनों के अर्श दिल में श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें बैठी हैं।

सेहेरग से नजीक हक अर्स, बीच हक इलम देवे बैठाए।
ऐसा इलम लदुन्नी, रूहअल्ला ले आए।। ११७ ।।

श्री श्यामाजी महारानी ऐसी जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान लाईं, जिससे सारी दुनियां वालों को पता लग गया कि श्री राजजी महाराज मोमिनों के लिए सेहेरग से नजदीक हैं।

रूहअल्ला आप उतर, इलम ल्याए हक।
तिन समझाई सब उमतें, हक कौल बेसक।। ११८ ।।

श्री श्यामाजी महारानी परमधाम से श्री राजजी महाराज की वाणी खुद लाई हैं और सब जमातों को उन्होंने वाणी से समझाया। यह सब श्री राजजी महाराज के वायदे के अनुसार है।

तीन सूरत महंमद की, मिल करी ऐसी सिफात।
उमतें पोहोंचाई दोऊ वतनों, दुनी सब करी हैयात।। ११९ ।।

मुहम्मद की बसरी, मलकी और हकी तीन सूरतों ने मिलकर ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि को परमधाम और अक्षरधाम पहुंचाया और दुनियां के जीवों को बहिश्तों में अखण्ड मुक्ति प्रदान की।

Nijanand App

अव्वल भी महंमद कह्या, बीच और आखिर।
वेद कतेब सबों कौलों, केहेवत योंही कर।। १२० ।।

वेद और कतेब में सभी जगह सभी वचनों में मुहम्मद की तीन सूरतों की ऐसी ही हकीकत बताई है। उसमें सबसे पहले रसूल साहब को, बीच में श्री श्यामाजी महारानी रूह अल्लाह और आखिर में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी की बातें लिखी हैं।

हक कहे मुख अपने, महंमद मेरा मासूक।
ए हक गुझ मोमिन जानहीं, जो दिल आसिक हैं टूक टूक।। १२१ ।।

श्री राजजी महाराज अपने मुख से स्वयं कहते हैं कि मुहम्मद मेरा माशूक है और मेरे दिल की सब बातें मोमिन जानते हैं जो मेरे आशिक हैं और जिनके दिल यह वाणी सुनकर कुर्बान होते हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, रूहें आसिक इस्क वतन।
बहस करी रूहों इस्क की, आसिक इस्क के तन।। १२२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! रूहें परमधाम में आशिक हैं और वही इनका इश्क है। इन्हीं आशिक रूहों ने अपने परआतम के तनों से, जो इश्क के ही हैं, श्री राजजी महाराज से इश्क का वार्तालाप किया।

|| प्रकरण || १७ || चौपाई || १०३४ ||

|| प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन ||

|| प्रकरण || ५०१ || चौपाई || १८०१० ||

|| मसौदा लिख्या है ||

जो हक हुकम से भाई केसवदास ने रिवाइत करी है। जो हादी ने जुबांन मुबारकसेंती "चौपाई" एक हजार चौतीस (१०३४) फुरमाई थी, सो यार मोमिनों ने इसके बाब चौदे (१४) माफक अकल अपनी के गम दिल से बांधकर किताब तमाम करी। अब भाई मोमिन इस चौपाइयों के हरफ-हरफ के माएने मगज जाहेर के और बातून के, रूह की नजर खोल के लेंगे दिल अर्स में। और हक के बेसक इलम लदुन्नीसों विचारेंगे और फैल में ल्यावेंगे, तब ही हाल ले हादी के कदमों कदम धरेंगे। किस वास्ते के आखिर के मोमिन आकल हैं, और हिदायत हक की लई है। सब बिधों कामिल हैं। जिनके दिल अर्स में सूरत खुदाए की ऊगी है। और ए कलाम भी हादी ने मोमिनों को कहे हैं। तो हुकम से मोमिनों को जरूर सिर लेना है। तिस वास्ते जो कोई अरवा अर्स अजीम की होए और इलम लदुन्नीसों जाग्रत हुई होए। और हुकम मदत करे और हक हादी हिंमत देवे, तो सुरत हक हादी के कदमों बांध के। इस फानी वजूद को उडावे। और बीच अर्स अजीम के उठ खड़ी होए। और मिलाप हमेसगी का सुख लेवें। हादी ने दरवाजा बका का खोल्या है। केतेक यारों को लेय के आप अर्स सिधारे। और अपने जो तन हैं, तिनको बुलावते हैं। ताकि साख ए चौपाई कयामतनामें की—

सुनत बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिंड।
धिक धिक पड़ो तिन अकलें, वह नाहीं वतनी अखंड।।

और आज हमारे हादी को बीच परदे के हुए दो महीने और दस रोज हुए। सो आज हमारे मेहेबूब की साल गिरह का दिन है। याने जन्म उच्छव छेहंत्तरमां तमाम हुआ। पचहत्तर बरस और नव महीने और बीस रोज। इस फानी के बीच हम गिरो रबानी के वास्ते। कई कसाले सेहे सेहे गुजरान किया। और कई न्यामतें बका की। इन रूहों के वास्ते जाहेर करी। सो कहां लों लिखों बानी में जाहेर लिख्या है, जो देखेगा

Nijanand App

तिनकी निसां होएगी। सदी महंम्मद सलिल्लाह अलेह वसल्लम की अग्यारे सै और छे (११०६) महीना मुहर्रम, तारीख सत्ताईसमी (२७) पोहोर दिन चढ़ते और हिन्दवी तारीख सम्वत् सत्रह सै इक्यावना बरस (१७५१) भादरवा वद चौदस (१४) वार गुरौ, पहर दिन चढ़ते किताब मारफत सागर तमाम हुई। हुकम हक हादी के सें—चौपाई एक हजार चौतीस (१०३४) मुकाम परना में। लिखतंग गिरो रबानी की पांउं खाक हमेसा चाहत केसवदास की परनाम कोटान कोट डंडवत साथ सबको अविधारजो जी प्रीत की रीत सों झाझा सनेह प्यार से।

॥ मारफत सागर सम्पूर्ण ॥

Nijanand App